एक था प्लूटो...

डॉ. डी.यू. पाठक
जनरल सर्जन

Indra Publishing House
www.indrapublishing.com

Published by:

Indra Publishing House
E-5/21, Arera Colony,
Habibganj Police Station Road,
Bhopal 462016
Phone : +91 755 4059620, 6462025
Telefax : +91 755 4030921
Email : manish@indrapublishing.com
pramod@indrapublishing.com
Web. : www.indrapublishing.com

Copyright © 2011 Dr. D. U. Pathak

Title : एक था प्लूटो…
Author : Dr. D.U. Pathak (General Surgeon)
J.D.A. 14/307, Near Krishi Upaj Mandi,
Jabalpur, M.P. 482003
Mob.: 09425152747
E-mail : dupathak@gmail.com

First Print : 2011

ISBN: 978-93-80834-38-2

₹ : 125 /-

Printed & Published by Mr. Manish Gupta for Indra Publishing House, E-5/21, Arera Colony, Habibganj Police Station Road, Bhopal 462016 INDIA

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in or introduced into a retrieval system, or transmitted, in any from or by any means without the prior written permission of the author. Any person who does any unauthorized act in relation to this publication may be liable to criminal prosecution and civil claims for damages.

Information contained in this work is obtained by the publishers from sources believed to be reliable. The publisher and its authors make no representation or warranties with respect to accuracy or completeness of the contents of this book and shall not be liable for any errors, omission or damages arising out of use of this information. Dispute if any related to this publication is subject to Bhopal Jurisdiction.

फक़त ज़र के अलावा,
आजकल कुछ नहीं भाता।
कपट, छल, झूठ मक्कारी से,
गहरा हो गया नाता।
मेरी चोरी की दौलत पर,
सभी खुश हैं बहुत,
लेकिन,
मेरा कुत्ता
अब मेरे हाथ से रोटी नही खाता

–सूरज

समर्पण

यह कृति समर्पित है

मेरी अर्धांगिनी विभा को,

जो कि पशु पक्षी, पेड़ पौधों से बेइंतहा मुहब्बत करती है,

यहाँ तक कि उनसे बतियाती है,

उसी के जैसी मानसिकता वाले व्यक्ति,

व उन संस्थाओं को जो

इन मूक जीवों का दर्द बांट रहे हैं,

और

प्लूटो के तमाम आवारा साथियों को .....

अनुक्रमणिका

- प्रस्तावना 09
- संदेश 13
- क्यों लिखा ? 15
- अंत से आदि तक 19
- नवआगंतुक 24
- अल्हड़ बचपन 34
- टीकाकरण 41
- जनलेवा रेबीज 48
- शुभ प्रभात 53
- हमशक्ल 54
- सुबह की घुम्मी 57
- गोद लिया 61
- गली का कुत्ता रामू 67
- छोटे की कहानी बड़ी लम्बी 83
- समझदार श्यामू 89
- दो दिन का मेहमान बंडू 97
- दगड़ू बिल्ला 102
- लो, छपते-छपते आ गई मिनी 104
- अदभुत जीव, अदभुत रिश्ता 114
- माँ का प्यार 127
- सबसे अलग रिश्ता 129
- हम उम्र 132
- रफ्ता-रफ्ता 139

- यदि मै कुछ कह पाता 141
- संन्यास या पलायन 154
- इनके मसीहा 158
- क्या इसे अंत कहें ? 160
- अरे, तुम हमे क्या पालोगे ? 163

प्रस्तावना

श्रीमति मेनकाजी

मैं सर्जरी के किसी कान्फ्रेन्स के सिलसिले में दिल्ली गया हुआ था। जब से यह किताब लिख रहा था, विमोचन के लिए सिर्फ एक ही नाम बार-बार जेहन में आ रहा था। श्रीमती मेनका जी का। वे बेजुबान जीवों की मसीहा है। दिल्ली जाने के पहले मैं उनसे पूर्व नियोजित समय न ले पाया। वहाँ मैं चाणक्यपुरी में यूथ होस्टल में ठहरा था। पास ही में अशोक रोड था। अनायास कदम उस तरफ बढ़ गये। उम्मीद कम थी कि मेनका जी से ऐसे मुलाकात हो पाएगी। बाहर चौकीदार को मैंने अपना परिचय दिया। उसने कहा, आप ऐसे तो न मिल पायेंगे। यही अपेक्षित भी था। मैंने झिझकते हुए अपनी इच्छा बताई। उन्हें पता नहीं क्या लगा, बोले, देखिए मैं कोशिश करता हूँ। वैसे मुश्किल है। उन्होंने मेरा मोबाईल नम्बर लिया और अंदर मैडम से बात की। उसके आगे सब एक सुखद आश्चर्य जैसा था। तुरंत मेनका जी का मुझे फोन आया। ''मैं मेनका गांधी बोल रही हूँ।'' पहले तो मुझे अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। उस हस्ती से बात करने के पहले खुद को होश में लाना पड़ा। वे बोलीं, सॉरी डॉक्टर, तब मैं एक मीटिंग ले रही थी नहीं तो मैं आपको अंदर बुलवा लेती। अविश्वसनीय परंतु पूरे ग्यारह मिनट तक वे बात करती रहीं। पूरे समय वे इन मूक जीवों के लिए अपना दर्द उडेलती रहीं, और मुझे प्रेरित करती रहीं कि आप भी कुछ कीजिए अपने यहाँ इनके लिए। उसके बाद मैंने उनकी संस्था 'पीपुल फॉर ऍनिमल्स' के बारे में जानकारी ली और कुछ करने की सोची।

यह कृति जब परिष्कृत होकर अंतिम रूप ले रही थी, तब फिर से इच्छा हुई कि श्रीमती मेनका जी को फोन किया जाए। मैं सोच रहा था कि स्वयं जाकर उन्हें पांडुलिपि देकर उनके प्रतिक्रिया रूपी आशीर्वाद लूं। उसमें मेरा एक निहित स्वार्थ भी था। मेनका जी ने पुस्तक को छू दिया तो वह सोना हो जाएगी, क्योंकि फिर उसके हजारों हाथों में जाने में देर नहीं लगेगी। इनकी संस्था के द्वारा वितरित हो गई तो इसे

खूब लोग पढ़ेंगे। इन जीवों का भी भला होगा। पर हुआ कुछ और ही। जब पी.ए. से उनका समय लेने की विनती की तब उन्होंने कहा, डॉक्टर साहब मैं उनसे आपकी बात ही करा देता हूँ। दस मिनट बाद फिर से फोन करिये। एक दो प्रयासों के बाद मेनका जी लाईन पर थी।

''मैं मेनका गांधी, कहिए क्या काम था?''

मैं उनसे बोला- नमस्कार मैडम। मैं जबलपुर से डॉक्टर पाठक बोल रहा हूं। यहां तक तो सब ठीक था। परंतु मेरे अगले वाक्य में नाटकीयता थी जो कि वार्तालाप को दूसरी दिशा में ले गई। मैंने कहा- मैडम आई ऍम ए स्ट्रे डॉग लव्हर - ''मैं आवारा श्वानों का प्रेमी हूँ।'' इसमें कोई शंका नहीं। नहीं तो यह पुस्तक आपके हाथों में नहीं होती। परंतु उस समय वह वाक्य उन्हें इम्प्रेस करने के लिए कहा गया था। ज्यादा अच्छा होता यदि मैं स्वाभाविक रूप से उनसे कहता - मैडम हमारी एक बिच थी- प्लूटो, वह नहीं रही। बहुत दुःख हुआ और उसकी याद में एक छोटी सी पुस्तक लिखी है, आपकी प्रतिक्रिया मिल जाती तो पुस्तक की शोभा बढ़ जाती। सत्य तो यही था खैर -वे बोली ''तो?''

बात तो सही थी। भाई तुम श्वानों के प्रेमी हो यह मुझे क्यों बताना चाहते हो? आगे उन्होंने पूछा - "उनके लिए आप क्या कर रहे हो"

मैंने कहा - ''मैनें उन पर एक किताब लिखी है।''

वे बोलीं -''उससे उनका क्या भला हुआ। देखिये डॉक्टर, जो काम नहीं करते वे किताबें लिखते हैं।'' उनका कहना सौ फीसदी सच था। लिखना, मुंह चलाना, जरा सा कुछ करके फोटो खिंचवाना एक बात है- जो कि सामान्यतः हो रहा है और वाकई में कुछ करना दूसरी बात है।

मैंने कहा- "मैडम मैं आपसे मिलना चाहता हूँ।"

वे बोलीं "मैं कब मना कर रही हूँ। पर उससे होगा क्या? बेहतर है आप अपनी पुस्तक भिजवा दीजिए मैं देखती हूँ।"

जी मैडम बोलकर मैंने वार्तालाप को विराम देना ही उचित समझा। उनके साक्षात्कार ने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया। अब लग रहा है कि इनके लिए वाकई में सुनियोजित ढंग से कुछ किया जाए। उनकी संस्था निर्विवाद रूप से अच्छा काम कर रही है। हमारे यहाँ भी कई अच्छे लोग हैं, जो इस दिशा में काम कर रहे हैं। उनसे मिलने की या अपने मित्रों का एक नया समूह बनाने का अब मैं सोच रहा हूँ।

यह पांडुलिपि श्रीमती मेनका गांधी जी को भेज रहा हूँ। जो भी अच्छी बुरी प्रतिक्रिया आएगी उसे वैसी की वैसी छापूँगा। अन्यथा इस दूरभाष के वार्तालाप को ही उनका आशीर्वाद समझ कर संतुष्ट होना पड़ेगा।

इस पुस्तक के छपते-छपते मेनका जी का आर्शीवाद प्राप्त हुआ एवं उन्होंने इस पुस्तक के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएँ भेजी।

सत्यमेव जयते

Smt. Maneka Gandhi

M.P. (Lok Sabha)

18 जुलाई 2011

संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि डॉ.डी.यू. पाठक ने अपनी पुस्तक 'एक था प्लूटो...' पालतू कुत्तों को समर्पित की है। मुझे आशा है कि पाठकों को यह पुस्तक पंसद आयेगी और लोग पशु प्रेम के प्रति समर्पित हो सकेंगे।

पुस्तक के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनायें।

भवदीया,

(मेनका गांधी)

क्यों लिखा?

आखिर क्यों इच्छा हुई प्लूटो के बारे में लिखने की?

मराठी के मूर्धन्य लेखक व नाटककार श्री पु.ल. देशपाण्डे जी ने उनके संपर्क में आए रोचक व्यक्तियों का संकलन अपनी पुस्तक "व्यक्ति आणि वल्ली" में किया है।

प्लूटो ने भी हम पर एक अमिट छाप छोड़ी। यह श्वान चित्र लिखने के लिए मजबूर किया।

अनायास कलम उठी और स्याही बहने लगी।

"चला था अकेले मगर लोग आते गये, कारवाँ जुटता गया।"

जिसे देखो अपने पिल्ले के बारे में बताने को आतुर।

मेरा मून ऐसा है, तो मेरा चीकू वैसा है। सबकी एक ही विनय-डॉक्टर साहब हम आपके जैसी किताब तो न लिख पायेंगे, पर थोड़ा सा इसके बारे में भी लिख दो ना। पन्ने इस तरह बढ़ते गए और रोचक होते गए।

इसे पढ़कर आप कहेंगे, ''ऊँह इसमें क्या खास लिखा है? मेरा शेरू तो प्लूटो से भी ज्यादा समझदार था या किसी की जूली प्लूटो से ज्यादा सुंदर होगी।''

आपकी बात सिर आंखों पर। मैं मानता हूँ, मैं और मेरा प्लूटो अति सामान्य हैं। परंतु शेरू और जूली को पालने की जिन्होंने गलती की है वे ही समझते हैं कि यह रिश्ता कितना अद्‌भुत होता है। कितना असामान्य है। कितने रिश्तों से ऊपर उठकर है। शेरू और जूली के अलावा किसने आपको इतना बेइंतहा और वह भी निस्वार्थ प्यार दिया? इनके मोहब्बत की टक्कर तो सिर्फ माँ का प्यार ही ले सकता है।

किसी ने इनके लिए लिखा है आप इन पर डंडे बरसाएँ, दो मार के बीच में भी ये आपका हाथ चाटेंगे।

इसमें कोई शक नहीं कि श्वान मनुष्य का सबसे अच्छा मित्र होता है। परंतु मित्र तो समवयस्क होते हैं। प्लूटो के जाने से दादाजी से उनके नातियों तक सभी को लगता है कि उनका सबसे अच्छा मित्र चला गया। यह कैसी अद्‌भुत मैत्री है जो उम्र की इतनी विषमता में भी व्याप्त है।

मेरी पत्नी को तो लगता है मानो उसका बच्चा चला गया। आश्चर्य की बात है कि हम दोनों अपने माता-पिता के जाने के बाद भी उतने व्याकुल नहीं हुए जितना कि प्लूटो के जाने से। हम महसूस कर रहे हैं, शायद आपत्य के दुराव की वेदना भी कुछ ऐसी ही होती होगी। ये होते भी तो बच्चों की तरह ही हैं। भोले भाले और निरागस। उसका प्रमाण स्वयं लेखनी है। जिस माँ ने मुझे जन्म दिया, अपने रक्त से सींचकर बड़ा किया और यह दुनिया दिखाई, उसकी स्मृति में क्या मैंने लेखनी उठाई? अंतरमन में यह लिखते समय एक अपराध बोध भी है। परंतु यह कलम है कि रूक नहीं रही।

प्लूटो ने जाकर बहुत दुख दिया है। उसने एक गहरा सूनापन छोड़ा है। समय के साथ वह रिक्तता दूसरी चीजें भरेंगी। जिंदगी में पीछे से आता रेला आगे बहने वाले पानी की जगह ले ही लेता है। पर कुछ निशान किनारों पर स्थायी बन जाते है। कई यादें नहीं मिटती और हमेशा मन में एक हीक सी उठती है। ऐसे ही यह कसक है जो शायद ही कभी खत्म हो।

यह एक व्यावसायिक लेखक द्वारा प्राणियों के प्रति क्रूरता के विषय को चुनकर लिखी गई काल्पनिक कथा नहीं, बल्कि नैसर्गिक रूप से उपजी एक अभिव्यक्ति है।

श्रीमती जी का उद्वेग उनके बहते आंसू कम कर रहे हैं और मेरी यह बहती स्याही।

मेरे मित्र हैं डॉ. वासुदेव वारके। यह पांडुलिपी उनकी पत्नी के हाथ पड़ गई। पढ़ते-पढ़ते वह भावुक होकर बोली-भैया अब तो मुझे

ऐसा लग रहा है कि मैं किसी अनूठे सुख से वंचित हूँ। ये जीव इतने प्यारे होते हैं यह मैंने कभी महसूस ही नहीं किया। हम एकाध पिल्ला पाल तो लें, पर जब वह बाहर से कीचड़ से सने पैर लेकर आएगा और पूरे घर में गंदगी मचाएगा उसका क्या। उनका घर सुंदर व आधुनिक है। फर्श पर इटालियन टाईलस लगी हैं। मैंने कहा, ''भाभी प्यार में गंदगी नहीं होती। अब तो आपके बच्चे बड़े हो गए। आपको तो याद भी नहीं होगा कि उस समय उन्होंने घर का कितना नास किया और आपको घर साफ सुथरा रखने में कितनी तकलीफ हुई।''

गली के सारे आवारा श्वान मेरे छाती पर चढ़कर मुझसे लिपटते हैं। दूर से गाड़ी की बत्ती और आवाज से वह पहचान जाते हैं कि मैं आ रहा हूँ। रामू, शामू, जूली और उसके दो तीन पिल्ले गाड़ी के दोनों तरफ दौड़ते हुए मुझे घर तक लाते हैं। मानो किसी व्ही.आई.पी. के चारों तरफ एस्कार्ट करने वाली मोटर साईकिलें चल रही हों। गाड़ी रूकते ही सब खिड़की तक चढ़कर अपनी मुंडी अंदर करने की कोशिश करेंगे। वे इतने उत्तेजित रहते हैं कि उन्हें डांटे बिना दरवाजा खोलना तक मुश्किल हो जाता है। बाहर निकलते ही एक तरफ रामू और दूसरी तरफ शामू छाती पर चढ़ जायेंगे। जूली उतनी आक्रामक नहीं है। दूर खड़ी पूंछ हिलाते हुए अपनी बारी का इंतजार करती है। उसके बच्चे नीचे जूते पर चढ़ेंगे। शामू के कीचड़ से सने पंजों से कपड़ों का नास होता है। मैने भाभी से कहा – ''अपने दो ही शौक हैं सुबह सफेद झक्क कपड़े पहनकर निकलना और लौटकर इस मंडली को आगोश में लेना।'' तब तक श्रीमती जी दरवाजा खोलेंगी मुझे खोखला डाटेंगी।

या दिनभर का, और मेरा हालचाल पूछेंगी। श्वानों को गले लगाने, उनका माथा और गर्दन सहलाने में जो असीम सुख मिलता है उसके सामने गन्दगी कहाँ महसूस होगी? भाभी मुझे ध्यान से सुनती रही। उन्होंने कहा– ''भैया इस तरह से तो मैंने कभी सोचा भी ना था।''

यह लिखकर मेरी व्याकुलता कुछ कम हुई। मेरा पेशा शल्य चिकित्सा का। काम छोड़ना भी संभव न था। अनगिनत बार मोबाईल बजता था। लेखनी खण्डित होती परंतु भावनाओं का विस्फोट इतना प्रबल था कि प्रवाह रूका नहीं।

इसे लिखने के पीछे मेरा एक निहित स्वार्थ भी था। प्लूटो मेरी बच्ची थी। अपनी बेटी के बारे में दुनिया जाने, यह कौन नहीं चाहेगा?

मेरी भी इच्छा हो रही है, अपने प्लूटो के बारे में आपको खूब-खूब बताऊँ।

✦✦✦

अंत से आदि तक

एक सितंबर, २००७ का ब्रम्हमुहूर्त। ऊपर देखा तो आसमान की झिलमिल बढ़ गई। हमारा लाडला हमें छोडकर एकाएक तारा बन गया। वह एक पवित्र आत्मा था। उसने यह अंतिम योनि हमारे साथ बिताई। माधव की गोद में उसने अपनी अंतिम सांस छोड़ी। विडम्बना देखिए - माधव ही उसे अपनी गोद में इस घर में लाया था।

गया भी इतनी हड़बड़ी में, कि ''अच्छा अब चलता हूँ'' भी न कह पाया।

विभा का भाई श्री अच्युत, पशु चिकित्सक है। प्लूटो की बिगड़ती हालत देखकर मैंने उसे फोन करके बुला लिया था। वह तुरंत पहुंच गया। उसने प्लूटो की नाक में विक्स लगाई और पीठ थपथपाई। प्लूटो को सांस लेने में बहुत परेशानी हो रही थी। कमरे की घुटन से परेशान वह बाहर बगीचे में आ गया था।

उसकी बैचेनी बढ़ती गई। दूर गेट के पास उसे लेने यमदूत आ चुके थे। वे जल्दी मचा रहे थे। कह रहे थे कि चलो महाराज, देर हो रही है। यह डॉक्टरी कुछ काम ना आनेवाली। अब यह प्यार मोहब्बत, माया मोह सब छोड़ो। बड़े भाग्यवान हो जो तुम्हारा आना जाना हमेशा के लिए छूट रहा है।

प्लूटो का चेहरा निर्विकार हो चला था। अब व्यथा भी न बची थी। तभी बुझते बुझते, लौ एकदम तेज हुई। जहाँ वह दो कदम चलने में हाँफता था, वहाँ उसने गेट की तरफ दौड़ लगा दी। उसमें जाने कहाँ से इतनी ताकत आ गई थी। माधव उसके पीछे दौड़ा। गेट तक पहुँचते-पहुँचते वह गिर पड़ा।

माधव ने उसे गिरने न दिया। उसका सिर उसने अपनी गोद में ले लिया। यहीं से वह २३ मार्च, १९९८ को माधव की गोद में ही

अंदर आया था। ऐसे जीवनचक्र पूर्ण हुआ। चेहरा शांत हो रहा था और पुतलियां दूर की मंजिल पर ठहर गई थी।

माधव चिल्लाने लगा- देखो आई, यह कैसा कर रहा है। मैं समझ गया था। परंतु उस बेचारे ने मौत को इतने करीब से कभी देखा न था।

मैं दौड़कर तुलसी मैया से चार पत्ते मांग लाया और उसके मुंह में डाले। तब तक विभा गंगाजल ला चुकी थी। उसने उसके मुँह में गंगाजल छोड़ा।

इधर तीन चार दिनों से वह बहुत तकलीफ में था। वह हर मिनट अनगिनत सांसे ले रहा था। मानो सांसों का हिसाब पूरा कर रहा हो। हमारे साँसों की संख्या नियत है। योगी धीरे धीरे साँस लेकर अपनी उम्र को बढ़ाते हैं। प्लूटो के पास समय कम था। इसलिये वह सांसें जल्दी ले रहा था। हम उसे गोद में लेकर सुलाने की नाहक कोशिश करते पर उसकी बैचेनी बढ़ती ही जा रही थी।

आधे घंटे पहले वह मेरे पास आया था। सुबह के कोई साढ़े तीन बजे होंगे। मैने लेटे-लेटे मच्छरदानी से अपना हाथ बाहर निकाला और प्यार से उसके गले को सहलाने लगा। फिर हम दोनों ने एक दूसरे को जी भरकर देखा। मैं उसकी तरफ करवट लेकर उसे प्यार कर रहा था। उसकी नजरों में स्पष्ट याचना दिखी। कह रहा था- बस अब जाने भी दो बाबा। अब सहा नहीं जा रहा। वैसे समय भी आ चुका है।

मैं खुद भी उसकी उम्मीद छोड़ चुका था। पच्चीस वर्षों के चिकित्सीय अनुभव से इतनी समझ तो आ ही जाती है।

चारू और माधव उसके बगल में बैठकर रोने लगे। वह बाहर जाने लगा तो देखा, उसकी पीछे की टांगे जवाब दे रही थी। बच्चे चीखने लगे, देखो तो बाबा यह कैसा कर रहा है। मेरे पास ना तो कहने को कुछ बचा था, ना ही करने को। मैं आधे घंटे पहले आपातकाल के सारे इंजक्शन लगा चुका था। उनका कुछ भी असर नहीं हुआ।

अनभिज्ञ होना शायद ईश्वर की सबसे बडी नेमत है। मुझे उस समय यदि यह महसूस हो जाता कि प्लूटो अब हमेशा के लिए घर के बाहर जा रहा है, कभी वापिस नही आएगा, तो क्या मैं अपने आप को सम्हाल पाता? यकीन मानिये मेरा बस चलता तो, मैं अपनी बची जिंदगी प्लूटो को दे देता। परंतु यही तो संभव नहीं था। '' आप घर, जमीन, प्रापर्टी सब दे सकते हो, सुख दुख भी बाँट सकते हो परंतु अपनी एक भी सांस न तो आप दे सकते हो और न ही किसी से ले सकते हो।''

इतने वर्षों की डॉक्टरी में यही जाना कि उस अंतिम क्षण को हिलाया नहीं जा सकता। यदि किसी मरीज का समय आ गया है तो उसे आप बचा नहीं सकते। चाहे दुनिया की महंगी से महंगी दवा खिला दें या बड़े से बड़ा ऑपरेशन कर दें। और हाँ यदि समय नहीं आया है तो सारा इलाज बंद कर दीजिए, फिर भी वह जिंदा रहेगा। हम तो मरीजों को सिर्फ राहत देते हैं। उनकी तकलीफ कम करते हैं। ठीक नहीं कर पाते खैर....

पौ फट रही थी। सब प्लूटो को घेरकर खड़े थे। विलाप का पहला दौर मंदा पड़ा तो मैंने कहा कि अब आगे की व्यवस्था करें।

चारू बोली-बिल्कुल नहीं। पहले मैं उसे जी भरकर देख लूं फिर जाने दूंगी। मैं उसे क्या समझाता कि बेटी वह तो बहुत दूर जा चुका।

मैंने देखा उसके सुंदर गुलाबी कान सफेद हो रहे थे। चेहरा शांत था मानों मीठी नींद में सोया हुआ। यह नींद उसे मिली भी तो चालीस घंटों बाद थी।

विभा बदहवास थी। दादाजी एक कोने में चुपचाप खड़े थे। सामने से मामाजी व उनका परिवार आ गया था।

हमारे शहर से लगा हुआ माँ त्रिपुर सुंदरी का मंदिर है। बड़ी ही जागृत जगह है। कुछ दिनों पहले हम सब माँ से मिलने गए थे। प्लूटो की तबियत तब भी नरम-गरम चल रही थी। हम कहीं भी जाते तो घर में प्लूटो को बंद करके जाते। उस दिन उसने मेरी तरफ देखा, मानों कह रहा हो प्लीज, आज मुझे अकेले छोडकर मत जाओ। अंदर

से अच्छा नही लग रहा है। मैंने उससे कहा – हम जल्दी आ जाएंगे। वह नीचे देखने लगा। वह भाषा समझने लगा था।

मुझे क्या मालूम था कि मैं उसी के अंतिम श्रृंगार का सामान लेने उस मंदिर में जा रहा हूं। अगला क्षण भी कितना रहस्यमयी होता है और हम ना जाने कितने दूर की सोच लेते है। वहां से हमने ढेर सारी मालाएँ, लाल चुनरी और माँ का सिंदूर लाया था।

दादाजी उस समय ८२ वर्ष के थे। इस उम्र तक पहुंचा व्यक्ति कईयों को विदा कर चुकता है। तब तक वह इस शाश्वत सत्य को खूब अच्छे से समझ जाता है। उनके भावुक होने की मुझे बहुत कम उम्मीद भी। उन्होंने बड़े अनूठे ढंग से अपनी भावनाऐं व्यक्त की। चुपचाप आगे आए, प्लूटो पर दो फूल चढ़ाए और उसके मुंह में थोड़ा सा दूध डाला। यह काम उस व्यक्ति ने किया जिसने जिंदगी में कभी मंदिर की सीढ़ियां नहीं चढ़ी। सुबह के ठीक साढ़े छह बज रहे थे। उनकी तरफ से प्लूटो को पिलाया गया यह अंतिम दूध था। यही उनका नियम था। हमारे यहाँ सबसे पहले दादाजी उठते हैं। उनका कमरा ऊपर है वे नीचे उतरकर घर के सारे दरवाजे खोलते, हाथ मुंह धोकर गैस पर चाय का पानी चढ़ाते। इधर विभा जगी होकर भी सोने का नाटक करती। सुबह की वह एक कप चाय ही तो थी जो उसे बिना मेहनत के मिलती। बाकी दिन भर तो उसे हमारे लिए किचन में खटना पड़ता। मैं उठकर गुसलखाने में घुसने के पहले दो मिनट पिताजी से मिलने जाता। मैं डायनिंग टेबल पर बैठ जाता। तब उनकी पीठ मेरी तरफ होती। उठ कर उन्हें हैलो करने की हिम्मत न होती। उस पीढ़ी का अपने बच्चों से रिश्ता ही कुछ और था। आज बच्चे उठते हैं तो हमारे पीछे से हाथ डालकर हमें सरप्राईज देते हैं। इच्छा तो मेरी भी होती है परंतु हिम्मत नहीं होती। जब पिताजी पलट कर देखते तब उन्हें पता चलता कि मैं उनसे मिलने के लिए बैठा हूँ। फिर रोज का वही सवाल, विभा उठ गई क्या? मेरा घिसापिटा जवाब होता– चाय बनने तक उठ जाएगी। वे बाहर चाय में डालने के लिए तुलसी की पत्ती तोड़ने जाते। प्लूटो उनके पीछे बना रहता। उसके बाद वे फ्रिज खोलकर दूध का डोंगा निकालते। फ्रिज का दरवाजा खुलते ही प्लूटो की आंखों में चमक आ जाती। इसी क्षण का तो उसे इंतजार होता। वह

समझ जाता कि अब उसे दूध मिलेगा। वे दिलेरी से उसके लिए दूध उडेलते। कभी उसके भाग्य से मलाई भी टपक पड़ती।

इस प्रकार प्लूटो को दूध पिलाकर इस घर की रसोई की शुरूआत होती। आज मैं सोचता हूँ वह कितनी बड़ी पूजा थी, जो अनायास कई वर्षों तक हमारे घर में सम्पन्न हुई।

ये निश्छल, निष्पाप जीव ही तो चलने फिरते भगवान हैं, और जरा सोचिए, हमारे यहाँ वह नैवेद्य भी घर के सबसे बुजुर्ग व्यक्ति, घर के मुखिया द्वारा चढ़ाया जाता। उधर पूजा गृह में बैठे सभी भगवानों को विभा के नहाने धोने का इंतजार करना पड़ता।

पिताजी का वह नित्यकर्म उनकी मजबूरी बन गई। उस उम्र में कोई अपना आपा नहीं खोता, उसके बावजूद प्लूटो को वह दूध चढ़ाना बड़ा मार्मिक श्रद्धांजली थी। दुनियादारी की भाषा में वे घनघोर नास्तिक हैं। कभी किसी देवी देवता के दर्शन करने नहीं गए। परंतु वे शायद खुद नहीं जानते कि वे उस दिन कौन सी महापूजा कर गए। मुझे विश्वास है उस अंतरमन से दी हुई आहुति से वे उसी क्षण इस आने-जाने के चक्कर से मुक्त हो गए।

विभा ने प्लूटो के माथे पर सांई बाबा की भभूत लगाई। हाथों में छोटी-छोटी लाल चूड़ियाँ पहनाई। गले में मोतियों की माला और माँ की लाल चुनरी ओढ़ाई। उस अंतिम श्रृंगार में भी उसकी सुंदरता देखते बनती थी।

ऐसे सजधज कर चली वह अपने पिया के घर।

अब ज्यादा देर करके उसकी आत्मा को बैचेन करना उचित न था।

उसे हौले से धरती मां की गोद में उतारा। पूरे परिवार ने भाव भीनी विदाई दी। एक अध्याय समाप्त हुआ, वह हमारे पितरों में शामिल हो गया।

अब सिर्फ कहने को रह गया .. कि एक था प्लूटो!

✦✦✦

नव आगंतुक

२३ मार्च १९९८ ।

शाम को गली में बच्चे खेल रहे थे। धुंधलके में प्लूटो जाने कहां से आकर उनमें शामिल हो गया। माधव को वह बहुत भाया। उसने विभा से कहा–देखो माँ, कितना प्यारा है। हम इसे पाल लेते हैं। विभा ने उसे झिड़क दिया। तुम तीन क्या कम हो जो इसे और गोद में ले लूं? परंतु जैसे शाम गहराई सड़क पर छोड़ने की हमारी हिम्मत जाती रही। वह अपनी माँ और भाई बहनों से बिछुड़ चुका था। बेचारा अंधेरे में उन्हें खोजेगा भी तो कैसे? लगा, आज की रात तो इसे यहीं रहने दो।

गर्मी के दिन थे। बाहर बगीचे की टंकी में दिन भर की धूप से पानी गुनगुना हो गया था। बच्चों को लगा कि उसे नहला दिया जाए। फिर क्या था। धूल का आवरण हटते ही उसका जो रूप निखरा, वह देखते ही बन रहा था। काला टीका लगाना भर बाकी था। आज केलेंडर के पन्ने पीछे पलटा पाते तो हम सैकडों फोटो खींच लेते उसकी। इतना प्यारा लग रहा था वह। उसे विचित्र भी लग रहा होगा। सड़क का पिल्ला, पहली बार नहाया होगा। इन्हें तो प्रकृति माता ही नहलाती है। इसके जन्म के बाद पहली बौछार आने में पूरे तीन माह बाकी थे। गर्मी जोरों पर थी। नदी नाले सूखे पड़े थे। इसके पहले उसने इतना पानी तो कभी देखा भी न होगा।

प्लूटो को वैसे नहाना कभी नहीं भाया। उसका पानी से कभी सौहार्द हुआ ही नहीं। जब हम नर्मदा मैया से मिलने जाते, तब वह किनारे पर ही बैठा रहता। कहते हैं इन्हें तैरना सिखाना नहीं पड़ता। वह जन्मजात गुण होता है, पर प्लूटो ने पानी में कूदने में कभी रूचि नही दिखाई।

प्लूटो के सीमित शब्दकोश में नहाना शब्द मोटे काले अक्षरों में लिखा था। ''चलो नहाने'' उसका सबसे अप्रिय वाक्य था। कभी–कभी नहलाने के नाम से उसे धमकी देकर हम मजे लेते। वह इधर–उधर

भागने लगता। पूंछ नीचे हो जाती। तब उसकी छुपने की प्रिय जगह थी दीवाल से सटा हुआ हमारा डबल बेड। उतना अंदर तक हम घुस नहीं पाते। दूर अंधेरे में चमकती उसकी आंखों में एक शरारत भरी चुनौती होती, अब दिखाओ यहां आकर। लेकिन इंसानी दिमाग बड़ा दुष्ट होता है। हम उसे लंबे बांस से कोंच-कोंच कर बाहर निकालते। अब यह लिखते समय दुख हो रहा है। क्या फर्क पडता वह न नहाता तो? लेकिन एक बात तो है। नहलाने के बाद उसकी सुंदरता जो खिलती तो वह एक तरफा दिखता।

हर माँ चाहती है कि उसका लाड़ला सुंदर दिखे। बच्चा चीखता रहेगा, पर यह रगड़-रगड़ कर नहलायेंगी। फिर गाल पर एक काला टीका लगाएंगी-किसी की बुरी नजर नही लगे। हम लोग कान्हा किसली घूमने गए थे, वहाँ एक महावत अपने हाथी के बच्चे को रगड़-रगड़ कर नहला रहा था। हमने उसकी तारीफ की, खूब सुंदर दिख रहा है यह! उसने कहा, साहब! क्या बताये, बहुत नटखट है। जैसे ही हम नहला देंगे वैसे ही जाकर जमीन पर लोट लगा देगा। इनका अच्छा दिखना बस यही पांच दस मिनट का है। हमारे कौतुक से उसकी सारी थकान जाती रही। कन्हैया को कितना ही सजा धजा लो,मोर पंख लगा दो, उसे तो उसके बाद गोकुल की रज में लोटना ही है। पर मैया तो उसे सजाने भर का आनंद लेती है।

जब प्लूटो निकलता तो लोग पलट-पलट कर देखते, हमसे पूछते कौन सी ब्रीड है? हमे हंसी आती। अब इन्हें क्या बतायें कि यह पूरा कस्टम मेड मिक्स मसाला है। किसी प्योर ब्रीड में इतनी सुंदरता थोड़े ही आ सकती है। प्यूर ब्रीड के तो टकसाल से निकले सिक्कों की तरह होते है, सारे के सारे एक जैसे। यह तो उस चितेरे का बनाया एबस्ट्रॅक्ट आर्ट है, जिसे वह स्वयं भी दोबारा नही बना सकता।

प्लूटो को स्नान के बाद कुनकुना मीठा दूध पिलाया गया। शाम ढल चुकी थी। भानु अपने घर जा चुके थे। दादाजी पचहत्तर पार कर चुके हैं। उन्हें तो पालतू जीवों से कोई लगाव नहीं। उनका कमरा ऊपर है और रोज शाम को वे इस समय आसन प्राणायाम करते हैं। जब रात को आठ बजे वे नीचे उतरे तो डरते डरते उन्हें इस नव

आगंतुक के बारे में उन्हें बताया गया। उन्होंने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। यह उनकी कठोरता ही थी कि इतने सुंदर जीव को उन्होंने गोद में कैसे नही उठाया। मैं तो सड़क चलते भी इन्हें गोद में उठाए बिना रह नहीं सकता। कुछ दिनों से मेरी नजर एक बड़े भारी लॅब्रडोर, गोल्डन रिट्रीव्हर पर थी। वह अक्सर सड़क के दूसरी तरफ होता। वह क्रीम कलर का था। खूब चौड़ा माथा, उसका और बैठे हुए कान थे। दो दिन पहले किस्मत से वह मेरी गाड़ी के सामने आ गया। फिर क्या था। मैंने ब्रेक मारकर अपना स्कूटर रोका। एक जवान लड़का उसे लड़का घुमा रहा था। मेरे रूकने पर लड़के को आश्चर्य हुआ। बाद में उसने मुझे बताया कि लोग तो इससे दूर भागते है। मेरे रूकने पर भाई साहब मुंडी घुमाकर मेरा आँकलन करने लगे। ये अपने प्रेमियों को खूब पहचानते हैं। शरीर किसी सांड से कम न था पर चेहरा एक बच्चे का था। उसकी आंखों में प्यार भरा आमंत्रण था। मानो कहा रहा हो कि मुझे भगवान ने इतना बड़ा बना दिया तो इसमें मेरा क्या कसूर? उस लड़के ने बताया, अंकल यह अभी सिर्फ डेढ़ साल का है। तब मुझे उसके बालिश चेहरे का कारण समझ में आ गया। उसका नाम 'सनी' था। सनी भाटिया क्योंकि वह भाटिया परिवार का सदस्य था । मैंने पूछा, सनी बेटे, मुझसे दोस्ती करोगे ? फिर क्या था – सनी ने पूरे उत्साह से अपना दाहिना पंजा उठाकर मेरे हाथ में दे दिया। पंजा इतना बड़ा था मानो मैने प्लूटो के चारो पंजे एक साथ अपने हाथ में ले लिये हों। बांये हाथ से मैंने उसके चौड़े माथे को सहलाया। कान के नीचे खुजाया तो वह खुश हो गया। इन्हें आंखे मलना भी खूब अच्छा लगता है। उसका पंजा छोड़ना चाहा तो उसने अपने भारी जबड़े में मेरा हाथ ककड़ी, मूली की तरह पकड़ लिया। उसके दांत इतने भयानक थे कि बड़ी आसानी से वह मेरे हाथ के दो टुकड़े कर देता। लड़का भी डर गया। अनुभव लोमहर्षक था लेकिन पता नहीं क्यों, मुझे बिल्कुल डर नही लगा। मैं समझ गया। सनी कह रहा था, अभी मन नहीं भरा। इतनी जल्दी क्यों छोड़ रहे हो। मैंने उसका पंजा एक बार और प्यार से दबाया तब उसने मेरा हाथ छोड़ा। वह बेचारा मेरा हाथ गर्मजोशी से दबा नही सकता। उसके पास उंगलियां तो थीं नहीं। लेकिन निश्चित ही उसके हाव भाव उन लोगों से बेहतर थे, जिनसे आप गर्मजोशी से हाथ मिलाते हैं और वे अपना हाथ सनी के पंजे की तरह आपके हाथों में

दे देते हैं? बिना किसी प्रतिक्रिया के। फिर वह मेरी छाती पर चढ़ गया – जब मैंने उसको अच्छे से आगोश में लिया तब मेरी और उसकी दोनों की आत्मा शांत हुई। लड़के के लिए हमारा यह मिलाप विस्मय जनक था, और रास्ते चलतों के लिए निःशुल्क मनोरंजन। मैंने कहा, फिर मिलेंगें और वह तृप्त मन से अपने घर की तरफ चल दिया। मुझे तो रास्ते में जो प्यारा श्वान मिले उससे रूककर मिलने की इच्छा हो जाती है। एक बार डूशेन–लंबी, नाटी टिमटिम मिली तो एक बार मोदी फ्लोट ग्लास के विज्ञापन का हीरो डेलमेशियन।

एक मौके पर दुख भी हुआ। किसी कॉन्फरेन्स के सिलसिले में मुंबई गया हुआ था। हम शाम को जुहू बीच पर घूम रहे थे। सामने से अपने टेनर के साथ ग्रेट डेन साहब चले आ रहे थे। वाकई में ग्रेट, ऊँचाई मेरे छाती तक। उनसे हैलो करने का लोभ संवरण न कर सका पर सहलाने की हिम्मत नही हुई। मेरा मित्र तो पहले ही दूर हो गया। सुंदर गठीला बदन। साहब ट्रेनर के साथ बिना चेन के चल रहे थे। क्या तो उसकी बुद्धी होगी, और क्या तो इसका कंट्रोल।

ट्रेनर बोला, साहब जरा दूर ही रहियेगा। पास आयेंगे तो फाड़ खाएगा। यह भौंकने में विश्वास नही करता। चेहरे पर कोई हाव भाव भी नहीं लाता। सिर्फ मुझे पहचानता है। अपने मालिक को भी नहीं। मेरे बदन में थोड़ी झुरझुरी दौड़ गई। मैं वहीं रूक गया। मेरा मित्र चार कदम और पीछे हो गया। ट्रेनर आगे बोला–साहब इसे रशिया से पचहत्तर हजार रूपयों में मंगवाया था। इसके लिए एक अलग ए.सी. कमरा बनवाया हुआ है। इसके ऊपर हर महीना तीस हजार रूपये खर्च आता है। यह मुंबई के किसी नामी वकील के घर में था। इस माया नगरी में तो जो सुनने को मिले, कम ही है।

मेरा मित्र बोला, कितना अच्छा हो, हमें अगला जन्म ग्रेट डेन का मिले और वकील साहब जैसा मालिक। मेरी चुप्पी उसे अच्छी नहीं लगी। उसने फिर पूछा क्यों तुम्हारा क्या विचार है। मैं सोच में पड़ा था। मैंने उससे, कहा मैं तो किसी गरीब बंजारे के तम्बू के बाहर, उसके खूंटे से, सुतली से बंधना चाहूंगा। पास में चूल्हा जलता रहेगा, जहां मैं उसके बच्चों के साथ सोंधी रोटी का इंतजार करूंगा। हालांकि

हम कभी कभी फांके भी करेंगे। परन्तु क्या ग्रेट डेन को वकील साहब के साथ डायनिंग टेबल पर बैठना नसीब में है? ठंड में बच्चों के साथ सिमट कर सोऊंगा। सुबह उनके साथ लाल रंग की चाय के दो घूंट भी पीउंगा।

यह भी कोई जिंदगी है, कि हम ए.सी. की कैद में पड़े रहें। मालिक अपने बीवी, बच्चों से हफ्तों नहीं मिल पाता तो हमारे सिर पर क्या हाथ फेरेगा। ट्रेनर खाना भी देगा तो कर्तव्यबोध से, प्यार से कभी नहीं। क्योंकि, उतना अच्छा खाना तो उसके बच्चों के नसीब में भी नहीं। यह बात उसके मन में चुभती तो जरूर होगी। शाम को रोज वही जुहू का किनारा। बरसों हो गए – कोई बदलाव नहीं, कोई नयी जगह नहीं। यहां का तो वह एक एक शंख और सीप पहचानने लगा होगा। कोई यार नहीं, कोई दोस्त नहीं। आदमी तो आदमी, मेरे संगी साथी भी मुझे अजीब निगाहों से देखकर दूर रहते हैं। ऐसा सोचता होगा बिचारा ग्रेट डेन। मेरे मित्र को मेरी बात समझ में आ गई।

मैंने उससे कहा – ''मेरे नानाजी हमेशा कहते थे – मॅन डज नॉट लिव्ह बाय ब्रेड अलोन।'' इन्सान को जीने के लिए सिर्फ रोटी ही काफी नहीं होती। उसे और भी बहुत कुछ चाहिए। दूर जाते ग्रेट डेन साहब को देखकर हमें बहुत दुख हुआ।

तो साहब हम प्लूटो के पहले दिन के बारे में चर्चा कर रहे थे। प्लूटो वैसे तो दादाजी की सबसे छोटी नातन, पर बचपन में उसे दादा का प्यार नही मिला। हमने प्लूटो के लिए गॅरेज में पुराना बोरा बिछाया। बगल में एक मग पानी भर कर रखा।

उस २३ मार्च १९९८ की शाम को हमारा परिवार सात की जगह आठ का हो गया था।

तब हमने महसूस नहीं किया कि ईश्वर ने हमें क्या तोहफा भेजा है।

रात गहराती गई। एक एक करके सारे कमरे की बत्तियां बुझती गई। मैंने चारू से कहा – ''गैरेज की लाईट रहने दो। बेचारा डरेगा नहीं।'' फिर रात भर हम में जो भी उठता, उसे देखने जाता। वह

कभी सोया मिलता तो, कभी टुकुर-टुकुर देखने लगता। नजरें मिलतीं तो पूंछ में थोड़ी हॅलो की हरकत होती। आंखों में होता देखने आने का धन्यवाद। कितना बैचेन होगा वह, अपने मॉ और भाई-बहनों से बिछुड़कर। माँ के गोद की गर्माहट और भाई-बहनों पर लदकर सोने का परम सुख यहां न था। माँ के आंचल की बराबरी हमारा पिलाया दूध कभी नहीं कर सकता, भले ही उसमें कितनी ही शक्कर मिलाई गई हो। आज मैं सोचता हूँ वह छोटा सा जीव सूनसान रात में अकेले कितना डर रहा होगा। हममें इतनी भी इंसानियत नहीं थी कि उसे अपने कमरे में एक बोरा बिछाकर ही सुला लेते। एक तो अनिश्चित था कि हम उसे रखेंगे कि नहीं, दूसरा सुसु करने का डर। यदि केलेंडर के पन्ने पीछे पलटा सकूं तो तुरंत उसे 'हगीज' लपेटकर अपने आगोश में सुला लूं।

लेकिन एक बात तो माननी पड़ेगी, प्लूटो ने उस पहली रात को समझदारी खूब दिखाई। राजा बेटे की तरह चुपचाप बैठा रहा। बिल्कुल कू-कूं नहीं की। अपनी शालीनता से उसने सबको इम्प्रेस कर लिया।

सुबह हुई तो अड़ोसी-पड़ोसी एक एक करके देखने आए और बधाई देने लगे। सब पूछते कहां से लाया? कोई अच्छी ब्रीड लगती है। एक ने तो दबी आवाज में यह तक कह डाला कि आपका मन न करे तो हमें दे देना। उससे उसका महत्व और बढ़ गया। यदि आपकी अलग की हुई साड़ी कोई दूसरा ग्राहक मांग ले तो आप उसे तुरंत खरीद लेते हैं।

उस गधे को न तो अकल थी, न ही टेंशन। ये तो वर्तमान में जीते हैं पीछे का याद नहीं और आगे का पता नहीं।

सुबह की शाम हो गई। दिन में उसे दो चार बार दूध पिलाया गया। चुटुर-चुटुर करके छोटी सी गुलाबी जीभ से चाट जाता। रात घिरते ही वही कहानी। क्या पता इसे अपने परिवार की कितनी याद आ रही होगी और उन विचारों का इसके आभाव में क्या हाल होगा। इसकी मां इधर उधर दौड़कर इसे खोजते हुए पगला रही होगी। कितना अच्छा हो यदि कोई उसके कान में बता दे कि सुनो, चिंता मत करो, तुम्हारा लाड़ला बिल्कुल सुरक्षित है उसे कुछ नहीं हुआ। एक भले

परिवार ने उसे गोद ले लिया है। अगली रात भी वह शरीफ बना रहा। हम सबके सोने का समय अलग था।

उससे मिले बिना कोई सोने न जाता। इसलिए उसकी सभी से सुनिश्चित समय पर मुलाकात होती थी। सभी अपने ढंग से उससे बात करते। वे विशिष्ट आवाजें उसके मन में अंकित हो रही होंगी। सबकी सुगंध भी वह अपने नथुनों में रचा बसा रहा होगा। ईश्वर उसे सिखा रहा था कि इन आवाजों और इन गंधों को अंधेरे में भी पहचान लो। इससे हटकर कोई और हो तब तुम्हे उस पर भौंकना है।

विभा दूध पानी का ख्याल रखती, "प्यारी बेटी" है रानी बेटी है रोना मत, कल सुबह फिर मिलेंगे कहती। उसके मन में विभा की माँ के रूप में पहचान हो रही थी। दूध देती है, प्यार करती है।

चारू, श्रीधर और माधव उसे कान से उठाते, हाथ-पैर मरोड़ते और शॅकहेंड करना सिखाते। प्लूटो के दिमाग में अंकित हो रहा था कि ये सिर्फ खेलने के लिए उतावले होते हैं। ये भाई-बहन हैं। उसमें भी श्रीधर पुरा ख्याल रखता परन्तु उसका परिपक्व व्यवहार पर प्लूटो समझ गया - ये सबसे बड़े भैया है।

मैं देर रात लौटता तो मेरी कार के हार्न व बत्तियों की रौशनी से चौंधिया कर प्लूटो उठता। उनींदी आंखों से विभा दरवाजा खोलती। मैं अंदर आकर प्लूटो को उठाता, सहलाता और नीचे रखकर अंदर चल देता। प्लूटो के दिमाग में वही हार्न, लाईट और आने का समय अंकित हो रहा था। उसका दिमाग उससे कहता पहचान ले इसे। रोज देर से आता है। पूरा घर परेशान होता है, पर कोई कुछ नहीं कहता। जरूर इसके इतने देर से आने पर बाकी सबका भला होना होगा। सुबह सबसे जल्दी भी निकल जाता है। ज्यादा बात नहीं करता। प्यार करता है, कुछ खाया कि नहीं, हालचाल पूछता है ओर थोड़ा सहलाकर नीचे रख देता है। पहचान ले ये बाप है।

एक बुजुर्ग औरत है, जो खूब प्यार करती पर चाटने नहीं देती। उसे चाटो तो गाली देगी और तुरंत हाथ धोने दौड़ेगी। मेरे लिए तो यह खेल हो गया है। वह दादी हैं।

जो खुद से कभी मिलने नही आता। अपने पास जाओ तो हट कहता है और अपने कमर पर एक लात पड़ती है। अपन कूँ कूँ करते हुए दूर जाते है। परंतु एक बात अजीब है – मुझे दूध दिया कि नही पूछे बिना वह खुद खाना नही खाता ये दादाजी है। सबके बॉस।

सामने वाले घर से एक व्यक्ति रोज शाम को आता है। उसके आते ही पूरे घर में हंसी-खुशी का माहौल छा जाता है। वह मेरे लिए खूब कमेंट पास करता है, मजाक उड़ाता है, प्यार भी करता है। ये चारू के मामाजी हैं।

उनकी अम्मा यानि मेरी नानी भी मुझसे मिलने आती हैं। बड़ी नर्म दिल और नेक औरत हैं। प्यार करती हैं, पर पास जाओ तो डर कर दूर भागती हैं। उसे दौड़ाने में बड़ा मजा आता हैं।

मामाजी की एक चुलबुली बेटी और सीधी-सादी धर्मपत्नी हैं।

प्लूटो के ये रिश्ते जिंदगी भर रहे। बड़े होकर भी प्लूटो का नानी से प्यार करना और उनका डरकर दौड़ना नहीं छूटा। बल्कि उसकी बदमाशी और बढ़ गई थी। वह चलते-फिरते नानी को धक्का दे देता था। समय के साथ नानी हल्की होती गई और प्लूटो भारी। वह उसके धक्के से गिरते-गिरते बचती। उस पर चिल्लाती, तो हम सब खूब मजे लेते।

समय बीतता गया। वह बिल्कुल परेशान नहीं कर रहा था इसलिए हमारे साथ बना रहा। मामूली रस्सी से बांधकर उसे बाहर ले जाना खराब लग रहा था। तभी कोई उसके लिए एक छोटा सा गले का पट्टा ले आया। सफेद प्लूटो और चटक लाल पट्टा। खूब प्यारा लगने लगा।

वह अब हमेशा के लिए अपना हो गया। गले का पट्टा मानो मंगलसूत्र बन गया। अब उसके हिफाजत की, उसकी कुशल मंगल हमारी जिम्मेदारी हो गई। वह हमारे परिवार, का आठवां सदस्य हो गया। दो बेटे पहले से थे। एक बेटी थी। एक और चाहिए थी। इसके आने से परिवार संतुलित हो गया। कुछ फैसले अपने आप हो जाते

है। जिंदगी वैसे तो ठीक ही चल रही थी, प्लूटो ने उसे और रोचक बना दिया।

प्लूटो पूरे परिवार के आकर्षण का केन्द्रबिंदु था। वह एक धुरी बन गया जिसके चारों तरफ हम सातों की जिंदगी घूमने लगी। सुबह उठने से रात को सोने तक सब उसी के बारे में आपस में बात करते। आजकल कोई कॉमन विषय न होने से और सबकी अपनी–अपनी व्यस्तता की वजह से आपस में बात करना कम हो गया है। पत्नी के कामकाजी होने से यह दूरी ओर बढ़ गई है। अमेरिका में पाया गया कि घंटों डेटिंग करने वाले युगल शादी के बाद आपस में चौबीस घंटों में मात्र ३ मिनट बात करते हैं। जितने संपन्न परिवार, उतने ही दूर–दूर कमरे। एसी की वजह से सबके दरवाजे बंद। हर कमरे में उसका खुद का टी.वी.। एक दूसरे की आवाज तक सुनाई नहीं देती। गरीब परिवारों में घर छोटे होते हैं। सब मेम्बरान एक दूसरे पर लदे रहते हैं, चीखते चिल्लाते रहते हैं, पर कम से कम साथ तो बना रहता है। खैर।

कहीं तो पीढ़ीगत दूरियों से बात नही होती। पिताजी से मेरा संवाद रोज मात्र चार छह वाक्यों में रहता है। दोपहर को खाना खाया कि नहीं, रात को लेट आए क्या? थोड़ा अपनी तबियत का खयाल रखा करो। तुम्हारी भी उम्र हो चली है।

मैं अपने बच्चों से पूछता हूँ कि क्यों पढाई कर रहे हो कि नही? वह क्यों बताएगा कि कोई चक्कर चल रहा है, अभी पढ़ाई थोड़ी एक तरफ है।

मैंने कौन सा ऑपरेशन किया उसमें मेरी पत्नी क्यों रूचि ले और उसका नौकरानी से क्या झगड़ा हुआ वह मैं क्यों सुनूं? बाजार से यह लाना और आप बच्चों की तरफ बिल्कुल ध्यान नही देते यह विभा की तरफ से घिसापिटा जुमला।

हर कोई किसी से या तो शिकायत कर रहा है, या मांग। यही संवाद रह गया है हर घर में।

हाँ कुछ अच्छे बुरे मौकों पर, जैसे लड़की की शादी तय हो रही हो, कोई बीमार हो जाए या मकान-मालिक घर खाली करने को बोले तो जरूर पूरा परिवार कुछ समय के लिए एक हो जाता है। खैर! परंतु प्लूटो जैसा एक जीव फेवीकॉल का काम करता है। पूरे परिवार को आपस में जोड़ता है, सब उसके साथ खेलते हैं और उसके बहाने आपस में बात करने लगते हैं।

✦✦✦

अल्हड़ बचपन

हमने इसके पहले न तो कभी किसी श्वान को पाला था, और ना ही ढंग से देखा था। प्लूटो तो चला आया और हमने उसे रख लिया। हम वेटेनरी कॉलेज तो गए नही थे कि फलां ब्रीड चाहिए, या फिर मेल या बिच हो। वह तो बस आ गया हमारी गोद में। इसलिए उसके साथ कई रहस्य जुड़े थे। वह कितना बड़ा होगा, बड़ा होकर कौन सा डॉगी बनेगा? सब काल्पनिक था। कोई कुछ कहता तो कोई कुछ। ना तो उसके बाप का पता था न ही माँ का, जो हम कुछ अंदाज लगा पाते। जैसे शोले के बीरू के बारे में किसी को कुछ मालूम न था– श्री अमिताभ बच्चन ने कहा था– मौसी जात और खानदान पता चलते ही आपको इत्तला दे देंगे, वही हाल यहां हमारे प्लूटो महाराजा का था। और तो और हमें तो यह तक मालूम नहीं था कि वह लड़का है या लड़की।

वह जरा सा तो था। चारू के टेडी बियर से भी छोटा। गैरज के चैनल गेट की जाली से निकल जाता। पूरे बगीचे का चक्कर मारता और बेडरूम का दरवाजा जरा भी खुला हो तो अंदर आ जाता। कभी अलमारी के पीछे, तो कभी पलंग के नीचे बैठा मिलता। डर लगता कि कहीं किसी के पैरों के नीचे न आ जाए। घर में घुसते ही सबकी नजरें प्लूटो को खोजतीं।

उसके पैरों में चारू ने घुंघरू बांध दिया। फिर क्या था? छुनुन छुनुन करते पूरे घर में घूमने लगा। ठुमक चलत रामचंद्र बाजत पैजनियां जैसे। घूमने का दायरा बढ़ता गया। उसका संकोच कम हो रहा था और हम लोगों का उसके प्रति लगाव बढ़ने जा रहा था। पिताजी जैसे पत्थर दिल भी पूछने लगे उसे दूध पिलाया कि नहीं? एक दो बार शायद उसे भूख नहीं होगी। उसने दूध नहीं लिया यह चारू को पता चला तो वह चिल्लाने लगी कि तुम लोगों ने दूध गरम नहीं किया होगा, शक्कर नहीं डाली होगी, ठीक से दिया नही होगा,

वगैरह वगैरह। उसने उसे प्यार से गोद में लेकर दूध पिलाया। मिन्नत किसे बुरी लगती है। धीरे-धीरे गोद में बैठकर, लाड़ करवा कर दूध पीने की उसे आदत पड़ गई। वह तमाशा जिंदगी भर बना रहा। उसके बगल में बैठकर उसके सामने का पैर पकड़ना पड़ता कि इधर उधर भागे नहीं। फिर दूध रोटी का पहला कौर जबरदस्ती उसके मुंह में डालना पड़ता। उसके बाद भी नखरे दिखाता और अपनी मुंडी फिर भी इधर-उधर करता। फिर हम कहते काऊ, प्लूटो की रोटी खा लो। आज प्लूटो को भूख नहीं है। उसके कान में कहते जल्दी खा लो नहीं तो कौआ आ जाएगा। गऊ मां खा जायेगी। तब तक शायद पहले कौर का स्वाद आ जाता होगा। फिर आगे के कौर वह अपने आप लेने लगता। आप बीच मे छोड़ दो तो आगे नहीं खाता। उसका कहना था ऐसे कुत्तों की तरह खाना मत डालो। हमारी भी कोई इज्जत है। हमें ढंग से खिलाओ, नहीं तो नमस्ते। डाली हुई रोटी न खाना उसने जैसे इज्जत का मुद्दा बना लिया था।

भले सब उसके सामने बैठकर खाना खाएं, वह कभी ललचाई नजरों से न देखता। जब हमें पता चलता कि प्लूटो ने अभी नहीं खाया है तो हमसे भी खाया न जाता। पहला कौर लेने के पहले दादाजी तक पूछने लगे थे कि प्लूटो को खिलाया कि नहीं। भूख लगी होने पर भी वह दिखाता नहीं। फिर चलो खाना खाने चलो कहते ही बेचारा लपककर आता परंतु, खाना खिलाने बैठो तो नखरे फिर वही देखने लायक। इतनी इज्जत की रोटी तो हमें मानुस जनम लेकर भी नहीं मिली।

पहले प्लूटो के दोनों कान बैठे हुए थे। हमें लगा, शायद वह किसी ऐसी ब्रीड का है जिसमें कान बैठे होते हैं। कुछ हफ्तों में बांयाँ कान खड़ा होने लगा। बड़ा मजेदार दिखता था। हम सब उसकी खूब हंसी उड़ाते। पर कुछ दिनों बाद हमें चिंता होने लगी, जब दूसरा कान खड़ा नहीं हुआ। हम उसे सहलाते, तानकर खड़ा करते कुछ देर तक पकड़कर रखते, एकाध लकड़ी का टुकड़ा बांधकर सीधा रखने का भी सोचा। पर कुछ असर नहीं हुआ। देखा तो कुछ दिनों में उसमें भी हरकत हुई और वह भी खड़ा हो गया तब सबने राहत की सांस ली।

बच्चे के नामकरण का समय आ गया था। जो देखो वही नाम सुझाए। अब तक पूरी गली उसको चाहने लगी थी। किसी ने कहा मोती रखो पर पूरा देसी लगा। किसी ने रॉकी, ज्यादा स्टाईलिश लगा किसी ने टाईगर, पर यह खूंखार तो कही से नहीं दिखता, किसी को सफेदू नही जमा।

मैं बोला, 'प्लूटो' सबको एकदम पसंद आ गया। वॉल्ट डिस्नी का वह चुलबुला और बुध्दिमान चरित्र किसे प्रभावित नहीं करता।

चलो नाम की खोज तो खत्म हुई। परंतु आगे का तमाशा अभी बाकी था। मेरा भाई बड़ौदा से आया हुआ था। वह यूनिवर्सिटी में माइक्रोबायोलॉजी में प्रोफेसर है। उससे जब हमने प्लूटो का परिचय करवाया तो वह जमकर हंसने लगा। हमारे कुछ समझ में नहीं आया। उसने कहा, दादा, तू कैसा डॉक्टर है रे? यह प्लूटो नही प्लूटी है। मैंने कहा हट। फिर क्या था उसकी हंसी में पूरा परिवार शामिल हो गया। उसने बोला, दादा अब तो इसका नाम बदलो। मैंने कहा, इस पर काफी रिसर्च हो चुकी है। नाम बदल नहीं सकता। प्लूटो, प्लूटी नहीं बन सकता। उस सुंदरी को प्लूटो करके बुलाना भी जारी नहीं रख सकते थे। लड़के के नामवाली हमारी बिटिया बड़ी होगी तो समाज में उसकी हंसी भी उड़ेगी। ढंग के रिश्ते नहीं आएंगे। कौन अपने शेरू या मार्शल के लिए इस नाम की कन्या को बहू बनाना चाहेगा? अब क्या किया जाए। मैने कहा देखा जाएगा वह इतनी सुंदर है कि कोई उसके नाम पर नहीं जाएगा फिर चाहें तो वह शादी के बाद नाम बदल भी तो सकता है!

वह छोटा था तब बाहर के गेट का ख्याल रखना पड़ता। थोड़ा खुला रह गया तो वह दौड़ लगा देता। तीन महीने का प्लूटो ढाई तीन साल के इंसान के बच्चे जैसा था। एकदम बिंदास। अक्ल नहीं इसलिए डर नहीं। ये सीधे सड़क पर दौड़ते हैं। प्रेस की तार खींच कर उसे अपने सिर पर ले लेते हैं। गर्म चाय की प्याली में हाथ डाल देते हैं। यह उम्र सबसे ज्यादा दुर्घटनाप्रद होती है। न तो आप इन्हें डांट सकते हो ना ये आपकी डांट को समझ पाते हैं।

जैसे ही वह बाहर छिटकता, घर के सब सदस्य एक दूसरे पर चिल्लाते देते, कि किसने दरवाजा खुला छोड़ा। फिर सारे बाहर निकल आते प्लूटो को पकड़ने। वह किसी एक के बस का न था। प्लूटो को वह भी एक खेल लगता, वह हमें अपने खूब पास आने देता। कनखियों से देखते हुए चुपचाप बैठा रहता। पर जैसे ही हम उसे पकड़ने को होते, खरगोश जैसे छिटक कर कुलांचे मारकर फिर दूर जा बैठता। था भी तो वह खरगोश जैसा प्यारा सा सफेद और गबदुल। मैं मानता हूँ कि अपने बच्चे और मोहल्ले की दूसरी औरतें सभी को सुंदर दिखती हैं परंतु वैसे भी उसकी सुंदरता एक तरफा थी।

उसके जीतने का कारण सिर्फ उसकी फुर्ती भर न थी। वह दौड़ते समय-समय सड़क हो या मैदान खाली प्लाट हो या चौड़ी, गंदी नाली घास का लॉन हो या पानी कीचड़ का डबका, किसी में भेदभाव नहीं करता। उस उम्र में आपके शब्दकोश में गंदगी नाम का शब्द नहीं रहता। हमारे सामने एक पंडितजी रहते थे। उनका ढाई वर्ष का लड़का गर्मी की दोपहर, ठंडक के लिए बढ़िया, घर के सामने वाली नाली में खड़ा रहता। प्लूटो कीचड़, सड़क सभी को लांघता शार्टकट से कहीं का कहीं पहुंच जाता। उसके रास्ते उसका पीछा करना किसी के लिए संभव न था। हमारी सड़क मार्ग से असफल कोशिश जारी रहती। फिर पूरा परिवार एक रणनीति की तरह योजना बनाता। उसे कुछ मेम्बरान इधर से तो कुछ उधर से घेरते और धीरे-धीरे घेरे को छोटा बनाते। वह सामने के दोनों पैर दबाकर और कमर ऊपर उठाकर चौकन्ना हो जाता। वह खेल का पूरा मजा लेता, क्योंकि न तो उसे स्कूल जाना था और न ही उसे दवाखाने की चिंता थी। उसके नजर में हम सारे जीव भी उसी की तरह फालतू थे। वाचा होती, तो कहती, बहुत मजा आ रहा है। चलने दो ऐसे ही शाम तक। सुहानी सुबह और पूरे परिवार के साथ यह धरपकड़ का खेल, प्लूटो को और क्या चाहिए?

मोहल्ले के लिए हफ्ते में दो बार यह निःशुल्क मनोरंजन था। हम पर तरस खाकर वह यदि पकड़ में आता तब इस पारी के कम से कम चार खिलाड़ी कीचड़ से लिथड़े होते। फिर उसे डांटते और एक दूसरे को भला बुरा हमारी बारात घर में प्रवेश करती। मैं दवाखाने का बहाना बनाकर जल्दी से नहाने अंदर सटक लेता। बाकी लोग उसे

पकड़कर अच्छे से नहलाते और राजा बेटा बना देते। कभी-कभी तो नहाना होते की छिटक कर फिर बाहर दौड़ लगा देता और सामने की नाली में मुस्कुराता खड़ा मिलता। पंडित जी के बच्चे की तरह। फिर कोई उसे गर्दन से उठाकर बाहर निकालता और गेट के बाहर ही बगीचे के पाईप से उसके पैर धोते। चारों पैर नाली के पानी के लेवल तक काले स्याह होते, मानो प्लूटो ने काले मोजे पहन रखे हों। उसे डांट पड़ती और अंदर लाकर फिर नहलाया जाता। वह सोचता होगा, आखिर ये लोग मुझे क्यों डांट रहे हैं? मेरे साथ नाली में खड़े होकर देखो तो सही कि पैरों में ठंडा बहता पानी कितना अच्छा लगता है?

प्लूटो को अंडा खूब पसंद था। उसे पकड़ने की नौबत जब अकेले दादी पर आती तब उस कठिन परिस्थिति से निपटने का उसने एक नायाब तरीका खोजा था। वह एक अंडा हाथ में लेकर प्लूटो के पीछे अंडा-अंडा चिल्लाते हुए दौड़ती। प्लूटो के शब्दकोश में 'अंडा' यह शब्द दादी ने ही जोड़ा था। हालांकि वैसे दादी अंडे छूती भी न थी। उसे लोक लाज भी एक तरफ रखनी पड़ती। एक ब्राह्मण बुजुर्ग महिला हाथ ऊपर करके अंडा दिखाते हुए और अंडा-अंडा चिल्लाते हुए दौड़ती होगी तब आप ही सोचिये कितनी हास्यास्पद लगती होगी, पर मरती क्या न करती? जो भी हो, उससे प्लूटो उसके पीछे अंदर आता और अंडे के साथ खूब सारी डांट भी खाता। हम उसे वह अंडा देते जरूर, नहीं तो उसका वह आकर्षण आगे के लिए खत्म हो जाता।

हम कहीं बाहर जाते तो प्लूटो दादी के अकेलेपन का साथी था। उससे दादी को सूनापन महसूस नहीं होता। वैसे प्लूटो से उसका रिश्ता बड़ा मजेदार था। वह उसे चाहती थी उसमें कोई शक नहीं। इस चीज को वह भी खूब समझता था, और उसका वह नाजायज़ फायदा भी लेता। वह दिन में कई बार दादी को प्यार से चाटकर भाग जाता। दादी उसे गालियां देती और बार-बार भागकर अपने हाथ-पांव धोती। हम सब मजा लेते। जब मैं काम पर और बच्चे स्कूल चले जाते तब प्लूटो का सारा समय विभा और दादी के साथ बीतता। काम करते समय विभा उससे बतियाती रहती। वह भी इतने ध्यान से सुनता, मानो सब समझ में आ रहा हो। रोटी बना रही हो तो वह उसके साथ किचन में, बगीचे में भी वह उसके साथ, बिल्कुल साये की तरह रहता। मैं

उसके अकेलेपन की व्यथा समझ सकता हूँ। बाकी हम सब तो अपने कामों में व्यस्त हो जाते हैं। परंतु घर में रह कर उस पर जाने क्या बीतती होगी? उसे तो दिन में कई बार भ्रम होता होगा कि प्लूटो उसके पीछे चल रहा है।

अब प्लूटो इतना बड़ा हो गया था कि उसे टॉयलेट ट्रेनिंग देने का समय आ गया था। सुना भर था। हमें मालूम न था कि इन्हें ट्रेनिंग कैसे दी जाती है। पूछने पर पता चला कि यह पूरा मनोविज्ञान का खेल है, रिवॉर्ड और पनिशमेंट। वह आपके मन की करे तो पुरस्कार, जैसे एकाध बिस्किट, सिर पर हाथ फेरना, गुड बॉय कहना। धीरे-धीरे आपका डॉगी समझने लगता है कि इनकी सुनो तो बिस्कुट और प्यार मिलता है और अपने मन की करो तो मार पड़ती है। हमें बताया गया कि घर में गंदगी करे तो उसकी पिटाई करो। अपने आप समझ जाएगा और बाहर करने लगेगा। कहना सुनना तो ठीक था, परंतु वह इतना प्यारा था कि उसे कैसे मारते। भला अपने बच्चे की लंगोट बदल कर कोई इस बात पर उसकी पिटाई कर सकता है, कि सू-सू करने के पहले बताया क्यों नहीं?

प्लूटो भी तो हमारा बच्चा ही था ना? धीरे धीरे खुद ही समझने लगेगा, और हुआ भी वही। लेकिन वह श्वानों वाली क्रूर ट्रेनिंग हम उसे नही दे पाए। थोड़ा बुद्धू ही सही। नहीं दिखाना हमें अपने मित्रों और मेहमानों को कि सिट बोलने से बैठता है और शैक हैण्ड बोलने से पंजा देता है। अरे दिल से अच्छे रहो, शैक हैंड न भी कर सको तो क्या फर्क पड़ता है? आप अपने बच्चों को तो ट्रेनिंग दे नही दे पाते, क्योंकि उस निरीह के पीछे पड़ते हो? पिल्ला आदमी का हो या चौपाये का, हर पांच मिनट में सू-सू करता है। परंतु जैसे ही ये बड़े होते हैं इन्हें अच्छा कन्ट्रोल आ जाता है। हमने तो बाद में यह देखा कि बरसात की वजह से प्लूटो को घंटों तक बाहर न ले जा पाए तो भी वह झेलता रहा और कभी घर में गंदगी नहीं करी।

हमने एक निरर्थक काम जरूर किया, अखबार की पुंगी बनाकर उससे उसे चार-छह बार मारा होगा। चोट तो उसे लगती नही, किन्तु चिढ़ बहुत छूटती। बचपन की उस पुंगी का कटु अनुभव उसे हमेशा

बना रहा। हम उसे छेड़ने के लिए जब भी उसके सामने अखबार को रोल करके पुंगी बनाते तो वह हमारे ऊपर जमकर भौंकने लगता। कहता कि अब धमकाने के दिन लद गए अब मैं सीनियर हो गया हूँ।

था तो वह सुंदर। दिखने में प्लूटो एक तरफा था। झक्क सफेदी में छितराया भूरा रंग। बाल पूरे शरीर में तरह-तरह के। पीठ के ऊपर कड़े तो कानों के पीछे बिल्ली जैसे नर्म रोये। आंखें भूरी, काजल लगाई हुई। आंखों के चारों तरफ काले लाईनर से मानों लगाई हुई किनार। नाक चॉकलेटी। पीठ ऊँट के समान भूरे रंग की। छाती और पेट पूरा सफेद। पेट की तरफ गले के नीचे तक एक लंबी सीधी रेखा। मानो भगवान ने इस खिलौने में भूसा और जान भरने के बाद ऊपर से नीचे तक सिलाई की होगी, उसका निशान। कान सीधे तने, गुलाबी। पूंछ कमनीय। सब उसे मिस परफेक्ट कहते थे। चाल ऐसी मोरनी समान कि रैम्प पर चल रही मॉडेल शरमा जाए। प्लूटो की पूरी सुंदरता उसके डेढ़ साल के होने के बाद निखरी। डॉक्टर पांडे जी ने कहा कि वह पॉम क्रॉस है। शुध्द नस्ल का न होना ही उसकी सुंदरता का था सबसे बड़ा राज था। शुध्द नस्ल के श्वान मुझे हमेशा एक से दिखे। हों भी क्यों नहीं। उनकी जीन्स में कोई मिलावट नहीं होती। मानो छापेखाने से एक से एक छपकर निकले हों। सुंदरता तो इन देशी पिल्लों में होती है, किसी का रंग लिया तो किसी का दिमाग। ये अपने आप में अनूठे होते हैं। अब दोबारा प्लूटो बनाया नहीं जा सकता। आप सैकड़ों जर्मन शेफर्ड और लॅब्रेडोर बनवा लो बाय आर्डर, लेकिन प्लूटो तो प्लूटो था, न भूतो न भविष्यति।

✦✦✦

टीकाकरण

जब प्लूटो महीने भर का हुआ तो किसी ने कहा कि अब टीके लगवा लो। इनके डॉ. साहब का पता किया, उनसे समय लिया। उन्होंने दूसरे दिन शाम को पांच बजे बुलवाया था। प्लूटो को हमने दूसरे दिन सुबह नहलाया ओर उसका बदन पोछकर पट्टा पहना दिया। शाम को साढ़े चार बजे जब हम निकले तब तक पूरी गली को मालूम हो चुका था कि प्लूटो टीके लगवाने जा रहा है। जैसे बच्चे को कहीं ले जाने के लिए भारी तैयारी करनी पड़ती है वैसे ही प्लूटो की भी करनी पड़ी। सीट पर बैठने का आसन, एक बोतल में पानी और पीने के लिए कटोरी। चारू के हाथ में उसके लिये बिस्कुट का छोटा पुड़ा। उसे सामने की सीट पर बैठाया। चारू, विभा पीछे बैठे, परंतु उसे अकेले बैठना भाया नही। छोटा सा था, चुलबुल कर रहा था, और गाड़ी में बैठा भी पहली बार था। इसलिए बैचेन था। मैं परेशान था कि एक हाथ से उसे पकडूं कि गाड़ी चलाऊँ? गाड़ी रोककर उसे चारू के साथ पीछे बिठाया और विभा आगे बैठी।

जीवनचक्र कैसे पूरा होता है देखिये। उसके अस्पताल का आखिरी चक्कर उसके कार का भी अंतिम सफर था। तब भी विभा सामने थी और तकलीफ की वजह से प्लूटो चारू के साथ पीछे बैठा था, खैर।

इस प्रकार पौने पांच बजे हमारी बारात चली। स्कूल के छूटने का समय था। जगह-जगह बच्चों की भीड़ की वजह से गाड़ी धीमी करनी पड़ती या रूकना पड़ता।

वह उन बच्चों के लिए आकर्षण की वस्तु बन गया था। ''ऐ देख बे, कितना सुंदर पिल्ला है!'' "कहॉ बे?" अबे देख वो कार में बैठा है। प्लूटो भी टुकुर-टुकुर देखकर मजे ले रहा था। ज्यादा मचलता तो चारू बिस्कुट का एकाध टुकड़ा खिला देती। मैने अपना पीछे देखने का

शीशा प्लूटो की तरफ केंद्रित कर दिया था। बीच-बीच में उसे देखने में मजा आता। डॉ. पांडे जी की क्लिनिक का रास्ता लगभग आधे घंटे का था। बीच में जहां कहीं गाड़ी रूकी, इनकी तारीफ हुई। अनजान जगह, प्लूटो नीचे उतरने से झिझक रहा था। मैने चारू से कहा, तुम लोग यही पर गाड़ी में रूको, मैं डॉ. साहब को देखकर आता हूँ।

शाम ढल रही थी। उस गली में गाड़ियों का ज्यादा आवागमन न था। लोग शाम को टहलने निकले थे। कहीं बच्चे क्रिकेट खेल रहे थे। कुछ अपने श्वानों को घुमाने निकले थे। डॉक्टर पांडे का एक छोटा सा ड्यूप्लेक्स था। वे व्हेटनरी कॉलेज में कार्यरत थे और शाम को प्रायवेट प्रैक्टिस करते थे। मैंने खटखटाया तो डॉक्टर साहब ने स्वयं दरवाजा खोला। दुबले-पतले, उम्र होगी कोई पचास के करीब। उन्होंने गर्मजोशी से मेरा स्वागत किया। डॉ साहब के पीछे मैं अंदर गया। उन्होंने अपने बरामदे को ओपीडी बना दिया था। अंदर उनका निवास था। तभी भीतर से एक दमदार आवाज आई। मेरी उत्सुकता को भांपकर उन्होंने कहा- ''सर हमने भी एक जर्मन शेफर्ड पाली है।'' मैंने पूछा, ''बिच क्यों?''

उन्होंने कहा- ''डॉ.साहब बिच ही ज्यादा अच्छी होती है। खूब वफादार होती है। मैं खुद एक वेटनरी डॉक्टर हूँ। इनके स्वभाव को खूब पहचानता हूँ। मुझे तो अच्छे से अच्छे ब्रीड का मेल डॉग आसानी से मिल सकता था। परंतु मैंने बिच को ही पसंद किया और वह भी एल्सेसिशीयन।''

मैं एक मिनट के लिए कहीं खो गया। मुझे परसों ऑपरेशन थियेटर में हमारे सीनियर डॉक्टर खान मिले थे। खान चाचा के शौक को पूरा शहर जानता है। उन्होंने डॉक्टरी के साथ-साथ क्या नहीं किया? कभी पतंग उड़ायी तो कभी तीतरबाजी तक की। एक सफल सर्जन के अलावा वे कुछ समय मिनिस्टर भी रहे। उन्होंने पूछा, कुछ लिख रहे हो क्या। मैंने पूछा, ''आपके ताजे शौक क्या-क्या हैं? कभी श्वान पाला क्या?'' वे उत्साहित हो गए। बोले ''बेटे, शौक का वक्त तो निकल गया। खूब जिंदगी जी ली।''

हाँ, तो तुम्हारे सवाल का जवाब-पालो तो जर्मन शेफर्ड नहीं तो नहीं। हमारे पास एक एक करके तीन थे। उनकी आंखें याद में नम हो गईं। वे बोले, लॅब्रोडोर तो सिर्फ प्यार करना जानता है। चाहे मालिक हो या चोर। डॉबरमॅन खूंखार होता है पर अनप्रेडिक्टेबल, कहो आप ही को काट खाए। जर्मन शेफर्ड में वह सब है जो आपको चाहिए-प्यार, समझदारी, बुद्धिमता वफादारी सब कुछ। वे अपने पुराने साथियों की याद में खो गए। खूब निभाते हैं बेटा।

पर मेल रिलायबल नही होते - डॉ. पांडे जी आगे कुछ कह रहे थे। इसके पहले किं मैं कुछ प्रतिक्रिया देता, मेरे पीछे तीन फीमेल आकर खड़ी हो गई। विभा, चारू और प्लूटो कौर। पांडे जी के डॉयलॉग की वजह से वे विभा को पहली मुलाकात में ही भा गए। वह मंद-मंद मुस्कुरा रही थी। उसने कहा- ''यही तो मैं बीस साल से कह रही थी कि तुम रिलायबल नही हो।'' पांडे जी आगे बोले ''और एक बार यह बच्चे जन दे तो फिर इतनी ममतामयी व प्यारी हो जाती है कि पूछिये मत।''

ये टीके इन्हें कई बीमारीयों से बचाते हैं। हमारे लिए खतरा रेबीज़ का होता है जिसकी हमें थोड़ी जानकारी होनी चाहिए। यह इसलिए जरूरी है क्योंकि इसके संक्रमण के बाद मौत पक्की है। यह लाईलाज है। इस बात का लोगों को एहसास नहीं, वरना टीकों की कीमत मुद्दा न बनता। मृत्युर्मुखी व्यक्ति जान बचाने के लिए अपनी पूरी संपत्ति को झोंक सकता है। वैसे गरीबों के लिए ये टीके सरकारी अस्पतालों में निःशुल्क उपलब्ध है।

एक चिकित्सक हूँ इसलिए मुझे अक्सर फोन आते हैं जैसे - डॉक्टर साहब हमारे डॉगी ने नौकरानी को हल्का सा काटा - अरे साहब, काटा यानी काटा, उसमें हल्का या भारी क्या? खैर। या - बेटा साईकिल चला रहा था, एक सड़क के भाई साहब ने उसका पैर लपक लिया। अब क्या करें? वैसे खून नहीं निकला है। देखिए - लावारिस जीवों में तो कोई विकल्प ही नहीं। काटना तो छोड़िए लावारिस जीव ने यदि आपको प्यार से चाटा भी हो तो उसकी लार आपके खून में जा सकती है। हाँ, यदि आपके पालतू जीव का विधिवत टीकाकरण

हुआ हो, तो कोई डर नहीं उसमें भी आपको दस दिनों तक उसके व्यवहार का निरीक्षण करना है। रेबीज से ग्रसित जानवर पगलाता है– कभी बिना खाए–पीये पड़ा रहता है– कभी खूंखार हो जाता है– कभी गोल गोल घूमता है या और कोई विचित्र हरकत करता है। दस दिनों में जानवर का व्यवहार नहीं बदला तो आप मान लें कि उसे रेबीज नहीं था। इस काटने का संक्रमण से कोई संबंध नहीं। इतने दिनों का निरीक्षण इसलिए कि जब उसने काटा तब हो सकता है कि वह बेचारा रेबीज़ से ग्रसित हो परंतु उस समय तक उसके लक्षण परीलक्षित न हो रहे हों।

हाइड्रोफोबिया मतलब – हाइड्रो–पानी, फोबिया– डर–अर्थात पानी से डर। रेबीज से ग्रसित व्यक्ति पानी से डरता है– दूर भागता है। कारण अज्ञात है। मैंने इस बीमारी से ग्रसित एक ही मरीज देखा है। वह झकझोर देने वाली घटना मेरे दिलों दिमाग से हटती नहीं। एक सात साल की बच्ची को उसके घर वालें हमारे अस्पताल लाये थे। पूछने पर पता चला कि कोई महीने भर पहले एक पागल कुत्ते ने उसे काटा था। गांव के डाक्टर ने टिटनेस का इंजैक्शन देकर अपनी जिम्मेदारी को पूरा हुआ समझा। इतने दिनों तक बच्ची ठीक रही। घाव भी नहीं पका, इसलिए उन्होंने उसे दिखाने शहर लाना जरूरी नहीं समझा। हालांकि उसके हफ्ते भर बाद वह कुत्ता मर गया था। अभी दो दिन पहले बच्ची को बुखार चढ़ा ओर विचित्र व्यवहार करने लगी, तब सब को चिंता हुई। झड़वाने–फुंकवाने से भी आराम न लगा। इसलिये उसे इलाज के लिये शहर लाया।

हमने देखा, वह बहुत बैचेन थी। बिना मतलब इधर उधर दौड़ रही थी। पानी का गिलास भी दिखाओ तो नहीं बाबू, नहीं बाबू, बोलकर दूर भागती। मेरे समझ में बात आ गई। बेचारी कुल तीन दिनों की मेहमान थी। उसके माँ–बाप का पढ़े लिखे न होना सौभाग्य की बात थी, वरना सदमे में उससे पहले तो वे चले जाते।

इस छोटी सी कृति के माध्यम से मेरी समाज से विनती है कि जीवन अनमोल है, टीके लगवाना न टालें।

तो–पांडे जी ने अपने बरामदे को इनकी ओपीडी बना ली थी। घुसते ही सामने दरवाजे से लगा हुआ उनका छोटा सा कन्सलटेशन टेबल था। उसके सामने एक स्टूल। वेटिंग रूम का इस प्रेक्टिस में वैसे भी कोई औचित्य न था। दाहिनी तरफ जांच करने और टीका लगाने के लिए लिटाने हेतु एक मजबूत, कमर की ऊंचाई का, दो फुट चौड़ा और चार फुट लंबा टेबल था। उसके बाजू की दीवार पर खूंटी से, इनके मुंह बांधने के लिए एक नायलॉन की नर्म रस्सी लटकी थी। सामने की दीवार पर इनकी सेवा, बीमारियों से बचने आदि से संबंधित कई सारे चार्ट लगे थे। उन्होंने हमारा गर्मजोशी से स्वागत किया। हम दोनों, डॉक्टर के अलावा सर्जन भी थे। मुझे भी जब मेरा कोई सहयोगी अपने बच्चे का इलाज करवाने लाता है तब मैं अपने आप को गौरवान्वित महसूस करता हूँ, मैं जानता हूँ कि उसके पास काफी विकल्प थे। परंतु उसने मुझे चुना। वहां पैसे की अहमियत काफी कम हो जाती है। शायद यही भावना डॉ. पांडे जी के मन में आयी होगी। प्लूटो को बड़ी मुश्किल से चारू कार से यहां तक लायी। वह काफी बैचेन और घबराया हुआ था। जब उसे टेबल पर लिटाया तब उसकी पूंछ अंदर थी और वह थर–थर कांप रहा था। डॉक्टर साहब ने उसके मुंह के चारों तरफ नायलॉन की रस्सी बांधी और कानों के पीछे ले जाकर उसमें गठान लगा दी। फिर उन्होंने फ्रिज में से दो तरह के टीकों की बोतलें निकाली। ड्रावर खोलकर एक डिस्पोजिबल सीरिन्ज निकाली। मुझे अच्छा लगा। वे वेटेनरी प्रेक्टिस में भी टीकों के लिए इंजेक्शन कांच वाली सीरिन्जों को उबाल कर न लगा कर डिस्पोजिबल सीरिन्ज से लगा रहे थे। उन्होंने सीरिन्ज में दवाई लेने के पहले वायल पर उसकी एक्सपायरी डेट भी देखी।

उस समय मुझे अपने प्रेक्टिस के शुरूआती दिनों की नादानी याद आ गई। नया–नया कॉलेज से पास आऊट था और यादव कालोनी में एक दस बाय बारह फुट की दुकान लेकर प्रेक्टिस शुरू की थी। मेरी कुर्सी टेबुल, सामने छह फुट का बेंच, मरीज के बैठने के लिए, और साइड में परदे के पीछे जांच की टेबिल – ऐसी व्यवस्था थी। एक पेशंट किसी चीज की एलर्जी लेकर आया। मैंने कहा – तुम्हें एक इंजेक्शन लगा देते हैं। वह तुरंत तैयार हो गया। मैंने हड़बड़ी में इंजेक्शन लगा

भी दिया। ढंग से इंजेक्शन की शीशी देख ना पाया। मुझे कीड़ा काटने लगा कि मैंने कुछ गलत इंजैक्शन तो नहीं लगा दिया, कि यह बाहर जाकर टपक पड़े। रहा नहीं गया तो तुरंत डस्ट बीन से वह एम्प्यूल उठाकर देखने लगा। अब उसका और उसे लानेवालों के चेहरे देखने लायक थे। क्योंकि यह तो वे भी जानते थे कि जो डाक्टर ने अंदर डाल दिया है तो उसे अब कोई माई का लाल वापिस बाहर नहीं खींच सकता। मैंने अपने आप को बचाने के लिए कहा- नहीं, मैं तो उसकी एक्सपायरी डेट देख रहा था। पर साहब वह भी सब तो पहले देखना चाहिए। तब जमाना उतना खराब न था, नहीं तो उस दिन मैं पिट जाता।

तो साहब - प्लूटो को दबाकर उसके दोनों पुट्ठों में एक-एक सुई रसीद कर दी गई। मुंह में बंधे पट्टे की वजह से वह चीख-पुकार न कर पाया। चारू ने उसे जब नीचे उतारा, तो खुशी के मारे उसने गाड़ी की तरफ सरपट दौड़ लगा दी। मैं और विभा वहीं रूक गए। पांडे जी ने टीकों की वायल पर प्लूटो का नाम चिपकाकर हमें खाली वायल दे दी। फिर उन्होंने एक छोटी सी पुस्तिका निकाली, जिसमें शुरू के पन्नों में इनकी देखभाल, खानपान, स्वभाव के बारे में श्वान पालकों के लिए जानकारी व निर्देश थे। उसके बाकी पन्ने खाली थे, जिसमें आपके पिल्ले का बायोडाटा और उसके टीकाकरण की जानकारी भरी जानी थी। डाक्टर साहब ने पूछा, ''नाम?'' हमने एक सुर में, बोला ''प्लूटो।'' उन्हें अच्छा लगा। बोले, ''शायद वह कार्टून चरित्र आपको भी बहुत पसंद है।'' फिर पूछा, ''उम्र?'' हमनें कहा, ''२३ मार्च १९९८ को यह हमारे घर आया। इस दुनिया में कब आया पता नहीं।'' ''वे बोले, डेढ़ महिने का दिखता है।'' जात पर आकर फिर बात रूक गई। हम एक-दूसरे का मुंह देख रहे थे। सड़क का पिल्ला-क्या बताते? कहीं से दो-पांच हजार का खरीदा होता तो पांडे जी को उसके सात पुश्तों की जानकारी दे देते। वह हमारी बैचेनी ताड़ गये। हमने उनसे पूछा- ''आप ही बताइये सर''- वे बोले ''पॉम क्रॉस लगता है।'' हम खुश हो गये। चलो, लोग पूछते हैं- बड़ा सुंदर है- कौन सी ब्रीड है? अब कम से कम जवाब तो दे पायेंगे साहब ये पॉम क्रॉस है। खाली क्रॉस बोलो तो बेइज्जती लगती है, परंतु पॉम क्रॉस बड़ा आदर सूचक लगता है।

इस जानकारी के भरने के बाद उन्होंने टीके की बोतल के साथ जो लेबल आये थे उन्हें उस पुस्तिका में चिपका दिये। बोले – ''लीजिए साहब यह पुस्तिका तैयार हो गई। इसमें टीकाकरण की अगली तारीख डली है।'' उनके काम का सलीका और सिन्सियरिटी देखकर मैं बड़ा इम्प्रेस हुआ। और तो और उन्होंने हमें नीयत तारीख के दो दिन पहले फोन करके याद भी दिलाई थी। वह तो अति हो गई। उन्होंने पुस्तिका देते समय हमसे कहा – ''इसे संभालकर रखिए और हर बार अपने साथ अवश्य लाएं। संभाल कर रखने को इसलिए बोल रहा हूँ क्योंकि इसकी आपको कानूनन भी आवश्यकता पड़ेगी, यदि आपका प्लूटो किसी को काटे तो। यह सबूत है कि उसका विधिवत टीकाकरण हुआ है।'' मैं उन्हें टीके के पैसे जबरदस्ती देकर उठा। धन्यवाद देकर हम बाहर आये। देखा तो चारू गाड़ी में प्लूटो को बिस्कुट खिलाकर मना रही थी। दर्द के मारे वह मचल रहा था। और कूल्हों पर बैठ नहीं पा रहा था।

शाम के ६ बजे थे। नेपियर टाउन की उस अंदर की गली में बहुत से श्वान अपने मालिकों को लेकर संध्या निवृत्ति कार्यक्रम हेतु निकले थे। प्लूटो कुतुहल से उन्हें और वे उसे देख रहे थे। उससे थोड़ी देर के लिए ही सही, प्लूटो अपना दर्द भूल रहा था। हमारी बरात फिर चली घर की ओर। ट्रेफिक काफी बढ़ गया था क्योंकि लोगों के आफिस छूटने का समय हो गया था, घर पहुंचते ही प्लूटो का खूब स्वागत हुआ। श्रीधर, माधव ने पूछा, ''क्या हुआ ताई? फिर उसको कैसे पकड़ा? कहां सुई लगी? सुई खूब बड़ी थी क्या?'' वगैरह-वगैरह, ढेर सारे सवाल पूछ डाले। इधर श्रीधर, माधव को देखकर प्लूटो भी उछलने लगा। दर्द और डर के मारे बैठी हुई उसकी पूंछ अब उठ रही थी। अपनी गली में लौटकर वह फिर से शेर हो गया था।

✦✦✦

जानलेवा रेबीज

यह बीमारी अत्यंत घातक होती है, इसकी जानकारी तो आम लोगों को है, परंतु यह पूर्णतया लाइलाज है, यह शायद सबको मालूम नहीं, चिकित्सक होने के नाते मैं समाज को यह जानकारी भी देना चाहता हूँ।

आपको पढ़कर आश्चर्य होगा कि लैटिन में हिंसा, उत्तेजना को रबास कहते है उससे इस शब्द रेबीज की उत्पत्ति हुई। इस बीमारी से ग्रसित अपने होश में नहीं रहता। उत्तेजित होता है व उसे पागलपन के दौरे आते हैं। ईसा के १६३० वर्ष पूर्व, ईशनुन्ना में एक व्यक्ति की मौत होने पर, जिस कुत्ते ने उसे काटा उसे जिम्मेदार ठहरा कर उस कुत्ते के मालिक को बड़ा जुर्माना भरना पड़ा था। यहाँ हर तीन मिनट में रेबीज से एक मौत होती है।

पूरी दुनिया में रेबीज़ से हर वर्ष ५५ हजार लोगों की मौत होती है। आवारा कुत्तों की बहुतायत से भारत वर्ष सबसे ज्यादा पीड़ित है। उसका मुख्य कारण गरीबी व अशिक्षा है, जिससे इन आवारा कुत्तों का टीकाकरण नहीं हो पाता। जहाँ बच्चे को खाने के लाले पड़े हैं वहाँ आवारा कुत्तों को कौन सुई लगवाता फिरेगा?

यह लिखते समय इंटरनेट पर गया था तो एक रोचक साईट दिखी। 'ग्रेटर गुड'। उसमें अपील की गई है कि सिर्फ १० डॉलर का दान दें और भारत में एक कुत्ते का टीकाकरण करवाएँ।

विशाखा व अन्य कई संस्थाएँ इनका टीकाकरण कर रही हैं तथा इनके प्रजनन को भी नियंत्रित करने का प्रयास हो रहा है परंतु समस्या बहुत बड़ी है। वे चार डॉक्टर मिलकर रोज सिर्फ चालीस कुत्तों का बंधीकरण कर पा रहे हैं। नहीं से बहुत अच्छा परंतु यह एक समुद्र में लोटे भर पानी जैसा है।

रेबीज की बीमारी वाईरस से होती है। बीमारी से ग्रसित जानवर जब किसी को काटता है तब इंसान के शरीर में वायसक जानवर की

लार से प्रवेश करते हैं। वायरस लार मे काफी मात्रा में रहते हैं। शरीर में प्रवेश करते ही ये तंत्रिकाओं पर आक्रमण करते हैं, और तंत्रिकाओं के सहारे मस्तिष्क तक पहुंचते हैं।

संक्रमण के पहले लक्षण जो कि फ्लू जैसे होते हैं, होने तक लगभग दो से बारह हफ्ते लगते हैं। कभी–कभी यह समय दो वर्ष तक भी हो सकता है।

पहले लक्षण के आते ही दो से दस दिनों में मृत्यु हो जाती है। इसके लक्षण बड़े भयानक व पीड़ादायक होते हैं। बड़ी मात्रा में आँसू व लार बहने लगती है मरीज बोलने में असमर्थ हो जाता है। जबड़े व गले की मांसपेशियों को लकवा लग जाता है। इससे पानी या थूक छाती की तरफ जाने लगती है। यह होने से मरीज को पानी पीने से, बल्कि फिर सिर्फ दिखाने से भी डर लगने लगता है। इसी को हायड्रोफोबिया कहते हैं। चूंकि इस बीमारी का कोई इलाज नहीं है अतः इससे बचने की विस्तृत जानकारी आवश्यक है। इस पूरी किताब में किसी ने यह आगे के दो पन्ने पढ़कर चार लोगों को बता दिया तो मैं अपने प्रयास को सार्थक समझूंगा।

पहले तो समझना जरूरी है कि कौन से जानवर से ज्यादा खतरा है। मैंने यह नहीं लिखा कि कौन से जानवर से खतरा है या नहीं है। ऐसा बिल्कुल नहीं है कि यदि कुत्ता पालतू है तो वह सुरक्षित है क्योंकि बिना टीका लगवाया हुआ पालतू कुत्ता तथा आवारा कुत्ता, दोनों में इस मामले में कोई फर्क नहीं है। अब घाव के बारे में समझें यह बीमारी मस्तिष्क पर आक्रमण करके जान लेती है। तथा जैसा कि ऊपर लिखा है बीमारी के जंतु तंत्रिकाओं से होकर मस्तिष्क तक पहुंचते हैं। अर्थात काटे का घाव सिर से जितना दूर होगा, जंतु उतने ही ज्यादा देर में मस्तिष्क तक पहुंचेंगे क्योंकि उन्हें ज्यादा लम्बा सफर तय करना होगा। इसके विपरीत यदि घाव गर्दन अथवा चेहरे में है तब बहुत ही जल्दी बीमारी मस्तिष्क तक पहुंच जाएगी। इसी प्रकार से घाव कितना गहरा है, कितना गंभीर है यह भी महत्वपूर्ण है। साध ारण खरोंच है या गहरा काटा है, एक जगह काटा है या कई जगह। उपरोक्त मुद्‌दे तय करते हैं कि आप कितने खतरे में हैं। एक छोटी सी बात और खुले बदन पर काटा या कपड़ों के ऊपर से। कपड़ों

से आप काफी हद तक सुरक्षित हो जाते हैं। क्योंकि जानवर की लार कपड़ों में ही रह जाती है। कुत्ते के काटे और सांप के कांटे में यही फर्क है। सांप का दांत इंजेक्शन का काम करता है। वह अंदर से सुई की तरह खोखला होता है व दंश के समय जहर की ग्रंथी उसमें विष की पिचकारी छोड़ती है। वहाँ कोई फर्क नहीं पड़ता कि कपड़ों के ऊपर से सर्पदंश हुआ है या खुले बदन पर।

अब जानवर के काटने के बाद क्या किया जाय?

सबसे पहले उस हिस्से को बहते पानी के नीचे ले आएं। जितनी जल्दी हो सके, ताकि अधिकतर जंतु शरीर में प्रवेश करने के पहले घुल जाएं, पांच मिनट तक धोना काफी असरदार माना गया है। उससे ज्यादा फायदा किसी भी साबुन से रगड़ कर धोने में है। यदि लाल लाईफबॉय हो तो सबसे अच्छा क्योंकि उसमें शायद कार्बोलिक एसिड होता है। वैसे भी उसका प्रचार तंदुरूस्ती वाला साबुन करके होता है। जो भी सामने साबुन रखा हो उससे घाव को रगड़ दें। लाइफबॉय खोजने पर या बाजार से मंगवाने में समय न गवाँए। फिर घाव को डिटौल, बीटाडीन या टिंचर आयोडीन से साफ करें। एक बहुत अच्छा विकल्प है- ऑफ्टर शेव लोशन जो हर घर में होता है। यह सब करने के बाद अस्पताल जाएँ।

पहले टीके, मोटी-लम्बी सुई के और दर्द वाले होते थे। जो १० से १४, पेट में लगाए जाते थे। अब बहुत अच्छा विकल्प आ गया है। ये दर्द रहित होते है। इनका कोई रिएक्शन भी नहीं होता। पढ़े लिखे मरीजों को कुछ बातों का ध्यान देना चाहिए। टीके उचित जगह से प्राप्त करें जो कि विधिवत फ्रिज में रखे हों। जहां से यह टीके बनते है वहां से आप तक पहुंचने तक ये ठंडे तापमान में रखे जाते हैं और इनकी यात्रा में भी ठंडे रखने का ध्यान रखा जाता है। इसे कोल्ड चेन कहते हैं। किसी भी टीके की उपयोगिता व असर हो, इसके लिए, कोल्ड चेन का बनाए रखना जरूरी होता है। अतः उचित जगह से टीका प्राप्त किया जाए तथा उसे खरीदने के बाद तुरंत लगवाया जाए। यदि आप उसे खुले में रख कर भूल गए या कार में सामने डॅश बोर्ड पर रखा रह गया जहाँ भरपूर धूप आ रही है, और वह एक बार अच्छे से तप गया तो उसे लगवाना निरर्थक है। दूसरी बात का ध्यान देना

जरूरी है– रेबीपुर (आजकल जो टीका मिलता है) के टीके के पॅकेट में अंदर एक चार्ट मिलता है जिसमें लगवाने के दिन लिखे होते हैं। उसमें आप तारीख डाल दें तथा सिनसियरली उन तारीखों पर आकर टीका लगवा लें। आखिरी बात, टीका हमेशा बाँह में लगता है, पुट्ठे पर नहीं क्योंकि पुट्ठे में चर्बी होती है, यदि दवाई चर्बी में खो गयी तो असर नही कर पाती। हो सकता है लगाने वालों से भूल हो जाए। परंतु आपको उसे याद दिलाना है कि – यह टीका बॉह में ही लगता है। ऐसा इसके साथ जो कागज मिलता है उसमें भी लिखा है।

पहला टीका उसी समय लगता है उसे दिन जीरो कहेंगे फिर तीसरे, सातवें, इक्कीसवें आदि दिन लगाया जाता है। यदि इस पूरे विधिवत टीकाकरण के बाद दोबारा कोई जानवर काटे तब सिर्फ तीन टीके लगवाने पड़ते हैं।

एक और रोचक बात, रेबीज चूंकि लार से होती है अतः जरूरी नहीं कि जानवर के काटने से ही रेबीज हो, यदि आपको पहले से कोई घाव है तथा वह उस घाव को प्यार से चाट भर दे, तब भी आपको रेबीज हो सकता है। कुत्तों के अलावा, ढोर, नेवले, बिल्ली, लोमड़ी, भालू यहां तक की चमगादड़ किसी से भी रेबीज हो सकता है। सितंबर २००० में एक १४ वर्ष के बच्चे की दर्दनाक मौत हुई। उसके कमरे में सिर्फ एक दिन के लिए एक बीमार चमगादड़ था। उस बेचारे को तो पता ही नहीं चला कि वह कैसे संक्रमित हो गया।

आखिरी मुद्दा यह कहा जाता है कि काटने पर उस जानवर को १० दिनों तक ध्यान दें। यदि वह पगलाता है या मर जाता है तब आपको खतरा निश्चित है। यह इसलिए बोलते हैं कि यदि जानवर रेबीज से ग्रसित है तो वह १०–१२ दिनों में मर ही जाएगा। परंतु मैं सोचता हूं कि यह प्रयोग फालतू है। क्योंकि जब सुरक्षित, बिना दर्द के टीके उपलब्ध हैं तो क्यों अपनी जिन्दगी से खेलें? बेहतर है कि अच्छे से टीकाकरण करवा लें।

रेबीज़ जानवरों व कुत्तों में होने वाली एक खतरनाक बीमारी है और इसके मनुष्यों पर होने वाले खतरनाक दुष्प्रभाव भी सभी को ज्ञात हैं। भारत में गत एक शताब्दी में रेबीज़ वैक्सीन प्रोडक्शन पर काफी गहन अध्ययन तथा शोध हुआ है। भारतीय पशु अनुसंधान

संस्थान (आई.वी.आर.आई.) भारत में रेबीज़ पर शोध करने वाला एक अग्रणी संस्थान है। इस संस्थान की स्थापना सन् १८८६ में हुई थी। यह संस्थान पशुओं तथा उनसे संबंधित सभी प्रकार की बीमारियों पर शोध करता है।

देश के कई शहरों में इस संस्थान की शाखाएँ हैं। आई.वी.आर. आई. के बॉयोलाजिकल प्रोडक्टस के विभाग में, रेबीज़ पर गत चार दशकों में वैज्ञानिकों जैसे, आदरणीय डॉ. एम.सी. पाण्डे जी आदि ने गहन अध्ययन किया है तथा कई प्रकार की वैक्सीन विकसित की हैं। इस संस्थान में रेबीज़ वैक्सीन प्रोडक्शन का कार्य भी किया जाता हैं।

आज इस बात की जरुरत है कि भारत के सभी पशु प्रेमी तथा पशुओं के साथ कार्य करने वाली व उनके प्रति संवेदना रखने वाली संस्थाओं को पशुओं से संबंधित बीमारियों पर शोध करने वाली संस्थाओं से जोड़ा जाए। इससे इन शोध संस्थाओं में होने वाली शोध तथा उसके परिणामों का सही लोगों में प्रचार व प्रसार हो सकेगा व इसका सही मायने में कुछ लाभ मिल सकेगा।

यह लिखकर मन काफी हल्का हुआ, क्योंकि मैं एक चिकित्सक हूँ। भले ही ये कुछ पन्ने नीरस हैं परंतु मैंने समाज को यह समझ देकर अपना दायित्व निभाया है।

✦✦✦

शुभ प्रभात

प्लूटो काफी बड़े होने तक गैरेज में रहा।

सबसे पहले विभा उठती, और तुरंत उससे मिलने जाती। परन्तु जैसे ही वह दरवाजा खोलती, वह उसे अनदेखा करके सरपट मुझसे मिलने आ जाता। न इधर देखता, न उधर। उचककर सीधे मेरी छाती पर चढ़ जाता। थोड़ा खीज कर मैं उसे डाँटता कि प्लूटो, ऐसे में मच्छरदानी फाड़ दोगे। पर प्लूटो को उसकी कहाँ परवाह। मैं उसकी तरफ करवट लेता और लेटे-लेटे मच्छरदानी उठाता, अपनी ओझील पलकें उठाकर आँखें खोलता तो मेरे सामने प्लूटो का उत्तेजित चेहरा होता। उत्तेजना इतनी मानो कई महीनों से न मिले हों। मैं कहता- बेटा हम अभी छह सात घंटों पहले ही तो अलग हुए है। फिर उसके गले को सहलाता, प्यार करता और उठकर बैठ जाता। यही तो हुआ था आखिरी दिन, सुबह साढ़े तीन बजे, जब वह मुझे आखिरी बाय-बाय करने आया था। खैर...

एक बार तो बड़ी रोचक स्थिति पैदा हुई। विभा की जगह मैंने जाकर गैरेज का दरवाजा खोला, प्लूटो न उपर दिखा न इधर उधर, वह सरपट दौड़ा मेरे बिस्तर की तरफ। देखा तो मैं गायब। वह कनफ्यूज हो गया। मैं यह मजा देख रहा था। जब उसे आवाज दी- हॅलो, मैं यहां हूँ, तब उसकी उत्तेजना व खुशी का पारावर न था। सीधे उचक कर मेरी गोद में आ गया।

हम कई बार कहते हैं... पता नहीं किसका मुंह देखकर उठा था, पूरा दिन बेकार गया। यहां दिन की शुरूआत ऐसे होती थी उससे बेहतर शुभ प्रभात क्या हो सकता है? क्योंकी इस गुडमार्निंग में कोई नाटकीयता न थी।

✦✦✦

हमशक्ल

सुबह की घुम्मी में मैने एक रोचक बात पर ध्यान दिया। ये और इनके मालिक एक जैसे दिखते हैं। स्वाभाविक है, ये हैं भी तो इन्हीं के बच्चे!

सुबह-सुबह यह नजारा खूब दिखता है जब सब के सब एक साथ अपने अपने मालिकों को घुमाने निकलते हैं।

एक बार किसी ने एक से पूछा, ''क्यों भाई, इस गधे को कहाँ घुमाने ले जा रहे हो?'' उसने गुस्से में जबाब दिया ''बेवकूफ तुम्हें यह गधा दिख रहा है क्या?'' तब वह बोला ''भाई साहब आप नाहक नाराज हो रहे हैं। मैं आपसे तो बात ही नहीं कर रहा - मैं नीचे जो आपके साथ चल रहा है उससे पूछ रहा हूँ।''

तो साहब अपने-अपने गधों को घुमाने लेकर निकले ये, आपस में भौं-भौं करके हॅलो-हॉय करते हैं। एक दूसरे का हालचाल पूछते हैं। यह पूछता होगा, देर क्यों हुई। हमेशा तो पिछले मोड़ पर मिलते थे। वह भौं-भौं में जवाब देता हैं कि कब से इन्हें उठाने की कोशिश कर रहा था। बहुत आलसी हैं। हर तीसरे दिन इन्हें घूमने जाने के नाम से जान पर आती है। हम भी इन्हें हिला-हिला कर थक जाते हैं। ये करवट बदल कर फिर खर्राटे लेने लगते हैं। माँ को स्कूल जानेवाले बच्चों का डिब्बा बनाना होता है, इसलिए वह मुझे इस समय बाहर नहीं ले जा सकतीं। माँ और मैं, हम दोनों इन्हें न हिलाएँ तो कहो रोज दस बजे तक सोते रहें।

सामने वाला भौं-भौं से बात आगे बढ़ाता है। बात तो सही है गुरू अपनी वजह से कितने लोगों का स्वास्थ ठीक ठाक बना हुआ है। कम से कम ये सुबह-सुबह हरकत में आ जाते हैं, और शाम को जब परेशान लौटते हैं तब हमसे प्यार करके, बॉस की लताड़ और बाहर की सारी परेशानियाँ भूल जाते हैं। बीबी भी हँस कर इनका

स्वागत करती है, क्योंकि हम दिन भर उसका दिमाग भी ठिकाने पर रखते हैं। दूसरा भौंक कर पहले के हाँ में हाँ मिलाता है। फिर दूसरा कहेगा, अब बस भी करो। तुम बहुत लम्बी खेंच देते हो। अब थोड़ा मुझे भी बोलने दो। इस बीच दोनों के मालिक चेन खींच-खींच कर इन्हें अलग करना चाहते हैं। पर बात है कि खत्म ही नहीं हो रही। इनकी मुलाकात भी तो चौबीस घंटे में एक ही बार होती है ना? इस बीच एक और तीसरा आ जाता है। वह अपने मालिक के लिए हमदर्दी दिखा रहा है। ये हमारा प्लूटो है। वह कहता है हमारे साहब को तो देर रात तक नींद नहीं आती। घर के बाकी लोग सो जाते हैं। हम दो ही तो हैं जो जगे रहते हैं। मैं तो दोपहर को फिर भी एक झपकी ले लेता हूं। पर हमारे डॉक्टर साहब तो अक्सर ऑपरेशन में रहते हैं। उन्हें तो बिलकुल आराम नहीं मिलता।

तभी सब का भौंकना एकाएक बंद हो जाता है। सामने से कर्नल साहब आते दिख रहे हैं। वे आर्मी से रिटायर होकर इस कॉलोनी में बस गए हैं। बच्चा कहीं बाहर विदेश में स्थायिक हो गया है। यहाँ सिर्फ वे और उनकी धर्मपत्नी हैं। पुराना रहन-सहन अभी भी बरकरार है। सिर पर गोल्फ कॅप, सुनहरी हो चली किंतु अभी भी तनी हुई मूंछें, नीचे कड़क इस्त्री की सफेद बरमूडा। पिंडलियों तक तने हुए इलास्टिक के मोजे और नाईक के स्पोर्टस शूज। दाहिने हाथ में एक छोटा सा डंडा और बाँये हाथ में मजबूत चेन से बंधा जर्मन शेफर्ड। कड़क चाल और चेहरे पर फॉर्मल हंसी। उनका रौबदार व्यक्तित्व किसी सामान्य व्यक्ति को उनके पास आने ही नहीं देता। तो मित्रो, कर्नल साहब और उनका शेफर्ड भाई, दोनों का ही व्यक्तित्व और सामाजिक स्तर एक सा। कंटोन्मेंट के बाहर दोनों ही मिसफिट।

नाजुक बच्चियाँ छोटे-छोटे पॉमेरियन लिए घूमते दिखेंगी। गुडियों जैसी दिखने वाली बच्चियाँ और खिलौने जैसे दिखने वाले उनके पॉमेरियन, दोनों एक से।

एक सज्जन दिखे-नाटे, ठोस शरीर, पिचकी हुई नाक, छोटी गोल कंचे जैसी आंखें और खड़े बाल। मानो दुर्गाजी की मूर्ति के सामने का मिट्टी का राक्षस जीवंत होकर चला आ रहा है। बच्चियों व उनके

पॉमेरियन के ठीक विपरीत। दूर-दूर तक उनमें नजाकत का नामोनिशान नहीं। उनकी पकड़ी हुई चेन का पीछा करते हुए जब हमारी नजरें नीचे गईं तो हम विस्मित रह गए। बॉक्सर महाराज शान से उनके साथ चल रहे थे। देखकर बड़ा मजा आया। दोनों का चेहरा ऐसा हूबहू, मानो इन्हीं का मुखौटा उसने या उसका इन्होंने पहन रखा हो।

एक दिन तो हद हो गई। मुझे एक सुनहरा एलसेशियन दिखा। उसके बालों का रंग एक अजीब सी लाल रंग की चमक लिए हुए था। सिर उठाकर ऊपर देखा तो आश्चर्यचकित रह गया। जो इसे घुमा रहा था-इसके बाल भी मेहंदी के रंग से चमक रहे थे। दोनों में साम्य कि फोटो लेने की इच्छा हो जाय।

श्वान अपने मालिक की मानसिकता दर्शाते हैं और उनके व्यक्तित्व के प्रतिनिधि होते हैं।

सीधे सादे लोग कभी खूंखार पिल्ला नहीं पालते। एक सीधा-सादा मध्यमवर्गीय बाबू दर्जे का आदमी, हाउसिंग बोर्ड में मकान खरीदता है, मारूति कार में चलता है और गली के देशी पिल्ले से संतुष्ट रहता है। बड़ा आदमी बंगला बनाकर रहता है, विदेशी गाड़ी और विदेशी पिल्ला पालता है।

✦✦✦

सुबह की घुम्मी

उसे घुमाने के लिए जब मैं तैयार होता, तो वह समझ जाता। यदि क्लिनिक जाने के लिए अच्छे कपड़े पहनूं तो वह चुपचाप बैठा रहता। जूते पहनूं तो वह रूचि नहीं दिखाता। परंतु यदि जीन्स और टी शर्ट पहन लूं, चप्पल पैर में डाल दूं तो वह खुश हो जाता कि इस लिबास में तो भाई काम पर जायेगा नहीं। पक्का मेरे लिए ही तैयार हो रहा है। मैं तैयार होते-होते उससे कहता देखो प्लूटो चेन कहां है, पट्टा कहां है और हां सबको बता भी दो कि प्लूटो घूमने जा रहा है।

यह सुनते ही वह खुशी से बाहर गेट के पास चुपचाप खड़ा हो जाता, गले में पट्टा बंधवाने के लिए। वैसे ही जैसे बड़े घरों में औरतें अपने पति को बाहर जाते समय टाई बांधने में गर्व महसूस होता है। वह भी चुपचाप खड़ा रहता है, प्लूटो की तरह।

तो साहब फिर हम दोनों सुबह की घुम्मी पर निकलते। दिशा और दूरी दोनों ही प्लूटो तय करता। जिस तरफ जाने का मन न हो तो आप उसे जबरदस्ती नहीं ले जा सकते थे। उसका सामने का ब्रेक बहुत मजबूत था। सामने के पैर जमीन में गाड़ देता और पीछे कमर उठा लेता। जैसे सामने के चक्के यदि कीचड़ में धस जाएँ तो आप गाड़ी को नहीं खींच सकते, वही मुद्रा प्लूटो की होती। इस अंगद को आप नही हिला सकते थे। आखिर मैं हार जाता, फिर वह अपनी इच्छा से मुझे चाहे जहाँ ले चलता।

सुबह-सुबह प्लूटो जैसे कई श्वान आपको अपने मालिकों को घुमाते हुए दिखेंगे। सभी मालिक ईश्वर से एक ही प्रार्थना करते हैं कि -हे भगवान इनको नित्यकर्म से निवृत्त करवा दो तो हम फुर्सत पाएँ। जब वह पेट खाली करता तो उसे घुमाने ले जाना सार्थक लगता क्योंकि फिर घर में वह इस काम को कमोड को छोड़कर कहीं भी करेगा उसे साफ कौन करेगा? कभी ऐसी स्थिति आए तो लॉटरी जैसे चिट्ठियां डाली जातीं कि वह काम कौन करने वाला है। यदि भैया सड़क पर

नही निपटे तो मुश्किल है, यह डर हर श्वान पालक के मन में रहता है। एक बार मैने एक व्यक्ति को प्रसन्नचित्त खड़े देखा। नीचे पाया, उसका पिल्ला निवृत्त हो रहा था। मैने उसे बधाई दी। वह अपरिचित था, फिर भी दिल खोलकर हंसा। यह क्रिया कितना सुख और राहत देती है वह उसने मान लिया।

सारे श्वान प्रेमी एक दूसरे को शुभ प्रभात कहते हैं, क्या हाल है पूछते हैं? ज्यादा व्यवहारिक और तर्कसंगत हो यदि पूछें –''क्यों भैया साहब निपटे कि नहीं?'' फिर बधाई हो करके अलग होए न हुआ हो तो बेस्ट ऑफ लक करके अलग होएं। इससे घूमने में अधिक रोचकता आ जाएगी।

मैंने सुना है कि इंग्लैंड में इनके लिए बकायदा शौचालय बने हुए हैं। यहाँ तो फिलहाल इंसानों को शौच की ट्रेनिंग दी जा रही है, खैर ।

घर लौटते ही विभा का एकमेव प्रश्न होता – ''की कि नहीं?'' मेरे हां बोलते ही प्लूटो का लाड़ शुरू होता। सयाना बेटा है, राजा बेटा है वगैरह–वगैरह। फिर उसे दूध मिलता उसे समझ में आने लगा था कि बाहर निपट लो तो घर में लौटकर काफी इज्जत होती है, लाड़ प्यार मिलता है। और घर में करने पर पेपर की पुंगी से पिटाई होती है। समय के साथ उसे स्व–नियंत्रण भी आ गया, और धीरे–धीरे फिर उसने घर में गंदगी करना छोड़ दिया।

एक बार तो उसने समझदारी की हद पार कर दी। मुझे अपने काम पर सुबह जरा जल्दी जाना था। चप्पल और टी शर्ट की जगह मैने बाहर के कपडे चढ़ाए। वह भी भ्रमित हुआ। मैं समझ गया और पलटकर बोला प्लूटो आज जरा जल्दी में हूँ। मैं आज तुम्हें घुम्मी करने नही ले जा पाऊंगा आश्चर्य? उसने सिर उठाकर देखा और चुपचाप बैठा रहा।

शाम की घुम्मी सुकून वाली होती। मालिक अपना दिन भर का काम खत्म कर चुके होते और इन्हें भी आपस में खुलकर मिलने–जुलने देते।

घर के बाहर निकलते ही दरवाजे पर रामू से और शामू से मुलाकात होती। रामू, शामू और प्लूटो ऐसे हम तीनों की बारात निकलती। चार कदम दूर हमारे साथ जूली भी हो लेती। हम अकेले ही चले थे जालिम, मगर लोग आते गए कारवां जुटता गया वाली बात थी। दो घर आगे टाईगर खरे मिलता। खूब चंचल डोबरमैन है चमकदार काले रंग का। लंबा चेहरा, कटी पूंछ, गिरे कान। धड़ के अनुपात से लंबे पैर। तेजी से दौड़ लगाने को बेताब। टाईगर का एक ही शौक है, गली के एक कोने से दूसरे कोने तक पूरी तेजी से दौड़ लगाना। थकान आने तक ऐसे वह कई चक्कर मारता। कभी-कभी मेरे छाती तक चढ़कर मुंह से मुंह लगाकर हैलो करना। प्रदीप को आश्चर्य होता, डॉक्टर साहब ऐसा प्यार वह किसी को नही देता। उसमें हिरणों जैसी चंचलता और भोलापन है। अब टाईगर भी वयस्क हो गया है। और बेवजह दौड़ नही लगाता। हैलो करो तो पूंछ का ठूंड हरकत में आ जाता है, पर छाती पर नही चढ़ता।

तभी सामने से सफेदू अग्रवाल आता दिखता। प्लूटो और सफेदू एक दूसरे से बिना भौं-भौं किये आगे नही बढ़ पाते। वही एक था जो सुंदरता में प्लूटो को थोड़ी टक्कर लेता था। वह एक वयस्क पॉमेरियन था।

चार कदम आगे भूरा श्रीवास्तव रहता था। देशी और खूंखार। जबरन गेट पर अगले पंजे मार कर हम पर भौंकता।

तभी आसमान से एक दमदार भौं-भौं सुनाई देती। पहली बार तो मैं चौंक गया। आकाशवाणी के बारे में सुना जरूर था। पर आकाश भौ-भौं नहीं सुना था। ऊपर देखा तो गुप्ताजी का शेफर्ड दूसरी मंजिल के उपर जो पानी की टंकी के लिए छोटा सा प्लेटफार्म बनता है उस पर चढ़कर हमें हॅलो कर रहा था। प्लूटो को मैने पूछा, क्या देखते हो, लड़का पसंद हो तो गुप्ताजी से बात करूं? इंटरकास्ट है पर चलेगा। प्लूटो शर्मा गया और मुझे आगे खींच ले गया।

गली के मोड़ पर कल्लू अवस्थी से मुलाकात होती। काले रंग का सुंदर-छोटा सा देशी श्वान।

सामने मेन रोड पर हमारे मित्र, अग्रवाल जी का घर है। उनका परिवार बड़ा है। तीन शेफर्ड हैं। बड़े प्यारे और समझदार। अग्रवाल साहब के दो ही शौक गाड़ियाँ और शेफर्ड।

रास्ते में स्पोर्टस शूज पहने अग्रवाल भाभी और उनका बच्चा चीकू तेजी से क्रॉस होते। अत्याधिक समझदार काला लॅब्रेडोर है, उनके खिलाने-पिलाने की लाड़ की वजह से थोड़ा मोटा हो गया है। पिछले बार घर आई थी तो भाभी ने बताया कि चीकू डायट पर है।

यह थी अपनी रोज की प्यारी दिनचर्या। सब कुछ एक सा होकर भी कभी उबाऊ नहीं लगी। अब तो न सुबहों की वह रौनक बची, न शाम की सुंदरता। सब कुछ सूना सूना सा लगता है। प्लूटो के बिना घूमने जाने की भी इच्छा नहीं होती।

✦✦✦

गोद लिया

कल शाम श्री विशाल खरे जी के साथ बैठक हुई। वे उच्च सरकारी पद पर आसीन हैं। मैं एक सर्जन। देखा जाय तो दोनों का ऐसा कोई तालमेल नही बैठता, परंतु यदि आपकी रूचि साझी हो तब आप करीब आ जाते हो। ऐसा ही कुछ हमारे साथ हुआ। हम दोनों ही श्वान प्रेमी। पिछले हफ्ते वे मुझे अमरकंटक एक्सप्रेस में मिले। मैं हर महीने सर्जरी के कॅम्प के लिए धमतरी जाता हूं। इनकी नौकरी जबलपुर में है और परिवार दुर्ग में। यह भी उसी गाड़ी में चढ़े। ट्रेन के मदनमहल छोड़ने तक सब यात्री स्थिर, स्थावर हो गए। मैंने अपनी डायरी और कलम निकाली और इस 'प्लूटो पुराण' को पूरा करने में जुट गया। तन्मयता में ध्यान न गया कि वे मेरे कंधे के ऊपर से झांककर उसे पढ़ते जा रहे थे। उन्होंने एक लम्बी सांस खींची, तो मेरा ध्यान उनकी तरफ गया। हमारी आंखें मिली। मेरे प्रश्नवाचक चेहरे को पढ़कर उन्होंने हाथ आगे बढ़ाया। गोल चेहरा, आंखों पर कार्बन की पतली फ्रेम का फोटोसन चश्मा, क्लीन शेव्ह। कानों से निकलते बालों के गुच्छे उन्हें और परिपक्व व मृदु बना रहे थे। वे बोले, ''भाई साहब मैं विशाल खरे। आप भी डॉग लव्हर लगते हैं। बड़ा मार्मिक लिख रहे हैं। किसके बारे में है?'' मैंने उन्हें बताया कि ''मैं अपने प्लूटो को श्रद्धांजली दे रहा हूँ। कुछ दिनों पहले हमारा प्लूटो नहीं रहा। उसकी यादों को कागज पर उडेल रहा हूँ। पन्ने ज्यादा हो गए तो किताब बन जाएगी, जिसे हमारा प्रेमी समूह पढ़कर आनंदित होगा। आपका भी स्वागत है, अपने अनुभव इसमें जोड़ने के लिए।''

मित्र का मित्र, मित्र होता है–हम दोनों क्षणभर में ही ऐसे जुड़े और वे मुझसे इतनी आत्मीयता से बात करने लगे मानो बरसों से जानते हों।

लम्बी सांस खींचकर वे बोले, ''यह बहुत बुरा शौक है भाईसाहब। यह लत एक बार लग जाए तो छूटती ही नहीं।''

मैंने कहा भैय्या, ये होते भी तो प्यारे हैं। कल ही मैंने अपनी बिटिया से कहा -इच्छा होती है कि हर कमरे में एक को बिठा दूं। आप जिस भी कमरे में जाओ वहां एक कुकुर बैठा दिखना चाहिए। इतने पसंद हैं ये मुझे।

वैसे मजे की बात, आप को बताऊं, जब मैंने खरे साहब से चर्चा की तब मुझे यह मालूम न था कि ईश्वर इस इच्छा को जल्द ही पूरी करेगा। चार आवारा श्वानों से प्रेम हुआ। अब यह आलम है कि एक कमरे में रामू, दूसरे में शामू, तीसरे में कल्लू और चौथे में जूली बैठी रहती है। खैर!

वे नाराज होकर बोले - ''मेरी भी तो सुनिये जी।''

''सॉरी-सॉरी बोलिये'' - मैंने कहा।

वे खुश। बोले -''भाई साहब हमारे पास एक जर्मन शेफर्ड दस साल तक रहा। अत्याधिक खूंखार लेकिन उतना ही समर्पित। क्या मजाल जो उन दस सालों में कोई हमारे घर की तरफ झांक भी सकता? वह गया तो इतनी रिक्तता छोड़ गया कि क्या बताऊं। पूरे परिवार का लाड़ला था। जाने कितने दिन घरवालों का खाना-पीना छूट गया। हम जैसे गुस्से में अपना आपा खो बैठते हैं, वैसे एक बार उसने मुझे काटा भी। मैने उसे जमकर डांटा। उसे अपनी गलती महसूस हुई। सिर झुका कर खड़ा रहा। मानो कह रहा हो, गलती तो हो गई है मानता हूँ। अब आप कितना भी डांटे लो, मार लो, मुझे मंजूर है, लो यह चुपचाप खड़ा हूँ। मैंने गुस्से में दो-चार जड़ भी दिये, पर जिमी हिला नहीं। हाँ भाई साहब उसका नाम जिमी था। यह बताते समय वे शून्य में देख रहे थे, मानो अपने जिमी के साथ हों। आगे वे बोले-भाई साहब, फिर मुझे बहुत खराब लगा और मैंने तुरन्त जिमी को अपने आगोश में ले लिया।

उसके पहले भाई साहब एक पॉमेरियन था, रिंकू। मैं पूरे ध्यान से उनकी बात सुन रहा था। हम दोनों एक दूसरे में खो गए थे। बाकी सह यात्रियों से हम अलग हो गए थे। वे आगे बोले- भाई साहब रिंकू के नामकरण की कहानी भी बड़ी रोचक है, जहॉ से उसे लाया

था जब उनको इसके नाम का पता लगा तो वे जमकर हंसे। बोले – खरे जी, आपने यह क्या किया? रिंकू तो मेरे भाई का नाम है। हम बोले, सॉरी, अब कुछ नही हो सकता। आप चाहें तो अपने भाई का नाम बदल दें। हमारा रिंकू तो रिंकू ही रहेगा। उसकी भी आखिर कोई इज्जत है, कि नहीं ?

वे चाव से सुनाते जा रहे थे और मैं सुनते जा रहा था। आप किसी भी श्वान प्रेमी को छेड़ दें। अपना पिटारा खोलकर बैठ जायेगा। कहो दिन भर सुनाने पर भी वह संतुष्ट न हो और हाँ, आपको सुनना भी पड़ेगा। वर्ना वह नाराज हो जाएगा।

आप अगर उसके बीबी बच्चों के बारे में पूछो तो कहो दस मिनट बोलकर चुप हो जाये।

यह लिखते समय कई श्वानप्रेमी मित्र मिले। सभी अपने अपने किस्से सुनाने को आतुर।

किस्से भी एक से बढ़कर एक। लेखन में लोगों के नाम अक्सर काल्पनिक रखे जाते हैं। परंतु यहाँ उल्टा है। सभी ने चाहा कि उनके और उनके प्यारों के वास्तविक नाम लिखे जाए। कौन नहीं चाहेगा कि उनके स्वीटी, फ्रास्टी, जिमी, मार्शल या जिम्बो को दुनिया जाने।

तो मैं आपसे विशाल खरे से हुई मुलाकात के बारे में बता रहा था। मैंने विशाल से पूछा, यह बताओ, तुम डॉगी के बिना जिंदा कैसे हो? क्या जिंदगी नीरस नहीं लगती? उसने कहा – भाई साहब, पत्नी के जाने के बाद यदि तुरंत शादी नहीं करो तो आप उस रिक्तता के आदी हो जाते हो। परन्तु वाकई, यहां ऐसा नहीं है।

रिंकू के जाने के बाद जिमि आ गया। लेकिन जिमि की जगह कोई न ले सका। कुछ तो हालात ऐसे थे कि कोई और आ नहीं पाया। एक दो जगह बोलकर भी रखा, देखते-देखते पांच वर्ष बीत गए। मैं भी बालाघाट से जबलपुर आ गया और अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में लग गया। यहां परसों मुझे खोजते हुए बालाघाट का मेरा पुराना ड्राईवर आया। मुझे थोड़ा आश्चर्य हुआ कि बिना किसी काम के यह कैसे

पहुंच गया। उसके हाथ में एक बास्केट था। उसने खोलकर दिखाया तो विश्वास नही हुआ। बास्केट में मेरे लिए १५ वर्ष की खुशियाँ रखीं थी। विशाल भावुकता में जो सुना रहा था। मैं समझ नही पाया। उसने कहा –छोटू से मेरी आंखे चार हुई। शुद्ध काला, पुलिस एल्सेशियन पिल्ला था। छोटू की स्याह चमकदार आंखों में मानो सवाल था। क्या तुम मेरे पापा बनोगे? भाई साहब, मैंने उसे लपककर उठाया और सीने से लगा लिया। लगा इतने सालों बाद मेरा जिमी लौट आया था। छोटू पंजे नाजुक और गुलाबी थे। नाखून काफी पैने थे। छोटी सी लाल जीभ ने मेरा हाथ चाटा। नन्ही सी पूंछ में हरकत हुई और मेरी कलाई पर उसने सिर टिकाकर अपनी आंखे मूंद ली। उसके चेहरे पर निश्चिंतता थी। 'अपने घर पहुंच गया' वाली भावना थी। दो–तीन महीनों की ही तो बात है जब यह मेरी गोद में निश्चिंत होना चाहता है। उसके बाद तो उसके सुरक्षा कवच में हमारा पूरा घर ऐसे ही निश्चिंत सोएगा। मैं बड़े ध्यान से विशाल की बातें सुन रहा था।

उन्होंने जब धीरे से बर्थ के नीचे से बास्केट खींचकर बाहर निकाली और उसका ढक्कन खोला, मैं देखता ही रह गया। छोटू ने अपनी गर्दन उठाई और मुंडी टेढ़ी करके मेरी तरफ देखा। मैंने, उससे पूछा– मुझसे दोस्ती करोगे? मैं तुम्हारा चाचा हूँ।

मैंने उसे प्यार से अपनी गोद में उठा लिया। हमारे आसपास एक सरदारजी का परिवार बैठा था। उनके बच्चों ने हमें घेर लिया और सब पीछे पड़ गये कि हमें दो, हमें दो, फिर क्या था। बच्चों के साथ छोटू भी खुश।

मैंने विशाल से पूछा– ''इसका नाम क्या रखा है?'' वह बोला– ''मार्शल''। उसने बताया, ''भाई साहब खुद पुलिस का पाला व ब्रीड किया हुआ जीव है इसके पिछले चार पीढ़ियों तक की जानकारी है। उन्होंने ही यह नाम रखा था। हमें भी पसंद आ गया। इसलिए नहीं बदला।'' मैने कहा, ''मुझे भी पसंद आया।'' फिर छोटू की तरफ मुड़कर मैं बोला– ''तो मार्शल खरे जी! आप से मिलकर मुझे खुशी हुई।'' विशाल मेरी तरफ अजीब निगाहों से देखने लगा।

मैंने कहा– ''गलत क्या है?''

''तुम्हारा बच्चा खरे ही तो कहलायेगा ना? चाहे तुमने पैदा किया हो, या फिर गोद लिया हो।''

मुझे बहुत पीड़ा होती है जब कोई पूछता है आपने कौन सा कुत्ता पाला है? वैसे यह शब्द सामने आ ही गया है तो आपको एक बात बता दूं इस पूरी कृति में 'कुत्ता' शब्द कहीं नहीं आया है।

मैं सोचता हूँ, हमारी बरकत ही नहीं कि हम किसी को पालें। विशाल बोला– ''भाई साहब। हम सब कितनी गलतफहमी में जी रहे हैं। पाल तो सबको वह नीली छतरी वाला रहा है।''

मैंने कहा – ''विशाल, क्या यह कहना ज्यादा उचित नहीं होगा कि तुमने मार्शल को गोद लिया है?''

वह मुझे देखते रह गया....

मैंने आगे कहा– जब कोई निःसंतान दम्पत्ति आदमी के बच्चे को अनाथालय से उठाकर अपने घर लाते हैं तब यह कहा जाता है कि फलां-फलां ने एक बच्चा गोद लिया है। हम ऐसा क्यों नहीं कहते कि उसने एक बच्चा पाल लिया। उस सड़क के पिल्ले और अनाथालय से उठाकर लाए लावारिस बच्चे में क्या फर्क है? उस आदमी के बच्चे को उसी की जात की मादा की कोख मिली, एक पहचान मिली और आपकी जायजाद भी। पला तो सही अर्थ में वह आदमी का नाजायज बच्चा है, जिसे एक बुद्धिमान व विवेकवान जाति की मादा ने समाज के डर से, अपने कुकर्म के फल को सड़क पर फेंक दिया हो।

दूसरी तरफ मार्शल को क्या मिला? आपने अपने निहित स्वार्थ के लिए उसे पाला। अपना वारिस बनाने के लिए अपने घर में उसे जगह नहीं दी। आपने अपने स्वार्थ के लिए उस दुधमुंहे बच्चे को उसकी माँ से अलग किया।

आप आगे यह भी विश्लेषण कीजियेगा कि अपना सब कुछ देने के बाद भी वह आदमी का बच्चा आपको क्या लौटाएगा? और दूसरी

तरफ कुछ की भी आशा न रखकर आपको मार्शल बेइंतहा प्यार देगा। प्यार तो प्यार, वक्त आने पर आपके लिए अपनी जान भी दे देगा।

वैसे उसके बदले आप मार्शल को क्या देने वाले हैं? दो वक्त की रोटी? यह तो कोई बड़ी बात नहीं। बड़ी बात तो तब होती, यदि आपके घर में आटा दो रोटियों का बचा हो जिन्हें बनाकर आप मार्शल को खिलाएँ और खुद पानी पीकर सो जाएँ। क्या कभी ऐसा होगा? कभी नहीं।

✦✦✦

गली का कुत्ता - रामू

हमारे घर के सामने कोई छह पिल्ले छोड़ गया। मेरी पत्नी विभा ने माँ की तरह उनका लालन पालन किया। उनमें सिर्फ एक बच पाया- रामू। उसके बाकी भाई बहन नहीं रहे।

लीजिए सुनिये, रामू की कहानी विभा की जुबानी .....

ठंड की दोपहर। यही कोई चार बजे होंगे। बाहर खटका हुआ। हमारे प्लूटो ने अपने कान उठाए, एक आंख खोली और छोटा सा भु....किया। उसका यह इशारा था कि बाहर कुछ है जरूर, परंतु चिंताजनक नहीं। हम भी करवट बदल कर सो गए। आधे पौन घंटे के बाद शाम की नौकरानी ने दरवाजा खटखटाया। वैसी भी चाय का समय हो गया था। हम अलसाते उठे और दरवाजा खोला।

नौकरानी ने पूछा, ''जे कहाँ से आ गये बाई जी?''

देखा तो दरवाजे के बाहर झाड़ियों की छांव में कोई हमारे लिए छह पिल्लों की सौगात छोड़ गया था। माँ से अलग होने से वे बच्चे सहमे हुए थे। एक दूसरे से चिपककर सुरक्षित रहने का प्रयास कर रहे थे। सब से बीच वाला पिल्ला थोड़ा निश्चिंत लग रहा था। दरवाजे के आवाज से उनका ध्यान मेरी तरफ गया। उनमें से दो की अनायास पूंछ हिली, मानो मुझे हैलो कर रहे हों। बीच के दो जो दबे हुए थे, किनारे वाले की पीठ पर चढ़कर उन्होंने अपना सिर उठाया और अपनी स्याह, काली आंखों से मेरी तरफ देखने लगे। बच्चों की आंखों की चमक अलग ही होती है। आप बछड़े की भी आंखें देखिये, कितनी काली और चमकदार होती हैं। समय के साथ दुनियादारी झेलते-झेलते आंखों का वह उत्साह, आतुरता व निश्चलता कम होने लगती है। चमक घटते जाती है।

मुझे इन्हें, इनकी माँ से अलग करने वाले पर बड़ा गुस्सा आया। दो तीन साल पहले, हमारी गली के एक सज्जन ने ऐसे ही छह पिल्लों को एक बोरे में भरकर कहीं दूर जाकर छोड़ दिया था। उनका जुर्म इतना ही था कि वे इनके घर के सामने गंदगी कर रहे थे। मुझे अभी भी उस माँ की अपने बच्चों को खोजती हुई आंखें और दस-बारह दिनों की वह बेबसी याद है। उस दौरान न तो उसने कुछ खाया न ही पीया। उसकी व्यथा की एक स्त्री ही कल्पना कर सकती है। खैर यह भी वही किस्सा था, अब ये छह पिल्ले मेरी गोद में थे।

उनमें एक तो बहुत ही प्यारा और अलग किस्म का था। चेहरा आधा भूरा, आधा सफेद। सफेदी इतनी कि उस तरफ के आंख की पलक और पलकों के बाल भी सफेद, मानो ईश्वर ने जब सफेदी में डुबोकर तुलिका घुमाई तब यह उस तरफ की आंख बंद करना भूल गया। मुझे तो यही लगता है कि जैसे हम मिट्टी के खिलौनों को रंगते हैं, वैसे ही वह चितेरा भी मनमाने रंगों से इस दुनिया की हर चीज रंगता होगा। तो साहब, रामू सफेद रंग पुतते समय आंख बंद न कर पाया और पलकों के बाल तक सफेद हो गए। छिटक कर भागा होगा तब कुछ सफेदी इधर-उधर बिखरी और जाते-जाते उस चितेरे ने पूंछ पर तुलिका मार दी तो पूंछ का आखिरी हिस्सा भी झक्क सफेद हो गया। खूब सुंदर दिख रहा था रामू। यह उस कलाकार का मार्डन आर्ट था। कभी-कभी वह सफेद हाथों से एक सी रंगीन तितलियाँ भी बनाता है।

क्यों माँ अब इनका क्या करें? तब बच्चे मेरे पीछे आकर खड़े हो गए थे। और क्या? इन्हें कहीं दूर छोड़ आओ। मैने कहा, वही ठीक रहेगा। नहीं ऐसा मत कहो माँ, बच्चों ने कहा। हम कौन इन्हें बुलाने गए थे और उन्होंने कौन छोड़ने वाले को हमारा पता बताया होगा। अब ये बिन बुलाये मेहमान ही सही, और हमें इनका करना भी क्या है? सुबह शाम बची हुई दो रोटियां ही डालनी हैं बस। मैं थोड़ी कमजोर पड़ी। नीचे देखा, तो छह में से चार की पूंछ पूरी हरकत में थी। दो की पूछें हिल नहीं रही थी। वे चार आंखें मानो फैसले का इंतजार कर रहीं थी। ईश्वर ने इस जानवर को दोस्ती करना भी खूब सिखाया है। प्लूटो की वजह से हमने दरवाजा बंद कर दिया था। यह

नौटंकी दरवाजे के बाहर सड़क पर चल रही थी। और दरवाजे पर प्लूटो अगले पंजे मार-मार कर पूरा दरवाजा हिला रहा था। भौंक-भौंक कर अपना विरोध प्रकट कर रहा था। वह असमंजस में था कि उसके प्यार का बंटवारा हो सकता है। तुम किसी और को चाहो तो मुश्किल होगी वाली बात थी। जब भी प्लूटो खाना खाने में नखरे दिखाता तो हम उसे धमकी देते कि तुम्हारी रौटी कौवे को दे देंगें। या गऊ को खिला देंगे। तब वह तुरंत खा जाता। वह तो धमकी भर हुआ करती थी। यहाँ तो सौतन की बारात दरवाजे पर खड़ी थी। उसकी बैचेनी व विरोध स्वाभाविक था। मैं नीचे बैठ गई। बच्चे और पिल्ले दोनों खुश हो गए। उनमें दो को उठाने की इच्छा हो गई। नई माँ के मिलते ही बाकी चारों भी खुश हो गए मैं उनकी यशोदा मैया बन गई। जाने कितने आंधी तूफान पार करके यहाँ तक पहुंचे होंगे। यहाँ फर्क इतना ही था कि पहुंचाने वाला वासुदेव की जगह दुष्ट कंस था। मैं उस कंस की इतनी तो आभारी हूँ, उसका दिल इतना पसीजा कि इन्हें वहीं न निपटाकर मेरे द्वारे छोड़ गया। खैर मैं भी कहीं खो गई। मेरे ये बच्चे तो मुझे प्रसव वेदना के बिना ही मिले, कोई मेरी गोद में चढ़ने की कोशिश कर रहा था तो कोई मेरा पल्लू खींच रहा था। जो मेरे हाथ में थे, उनके चेहरे पर विजयी भाव था। शेरू चूहे पर चढ़कर मुझ तक पहुंचने की कोशिश कर रहा था। तो रामू मुंडी टेढ़ी करके मेरा आंकलन कर रहा था।

मैंने बच्चों से कहा, ''जरा एक कटोरी में दूध ले आना।'' दूध पिलाया कैसे जाय यह भी एक समस्या थी। एक कोने में दीपावली के बचे दो तीन मिट्टी के दिये दिखे। उन्हें पानी से धोकर पंगत बिठाई गई। परंतु वह पंगत बुफे में परिवर्तित हो गई। बुफे अक्सर पानीपत की चौथी लड़ाई में परिवर्तित हो जाता है। जिसमें मार-काट मचाकर एक दूसरे पर चढ़कर जो अपनी प्लेट में ढेर लगाकर वापिस खुले मैदान में लौट आता है, वह विजेता होता है। साहब यह सीन तो वहाँ भी होता है जिनके पेट भरे हैं और घरों में खाना रखा हुआ है। यहाँ तो जाने कब से बेचारों को माँ से अलग किया गया होगा। उनके पेट पिचके थे। बच्चों का पेट तो दो चम्मच में भर जाता है और आधे घंटे में खाली हो जाता है। दूध पीने के लिए पिल्ले एक

दूसरे पर चढ़े जा रहे थे। उस आपाधापी में दो दिये पलट भी गए। दूध दिये में डालते समय हवा में खत्म हो जाता।

दूर गली के मोड़ पर दो बच्चे खड़े थे। छोटे ने बड़े का हाथ पकड़ा था। उसने खूब बड़ी, अपने पिताजी की कमीज पहनी थी। जिसमें सिर्फ बीच का एक बटन लगा था। नीचे कच्छी पहने था, जिसको, कमीज की लंबाई की वजह से वैसे जरूरत न थी। कई दिनों से नहाया नहीं था। नाक सूखकर एक लकीर बनी हुई थी। बाल सूखे थे, महीनों से धुले नहीं थे। घर में जब सब्जी छोकने को तेल न था, तो उन बालों को कहाँ से मिलता। बिना कंघी के खुले व छितरे थे। आँखे काली व स्याह थीं वही बचपन की चमक लिए। मेरे कौवुहल का उत्तर, मेरे पीछे खड़े बच्चों ने दिया। माँ आपके पीछे जो रिक्शेवाला रहता है, ये उसके बच्चे है। हमारे घर के पिछवाड़े में नवनिर्माण हो रहे प्लॉट पर उस रिक्शेवाले की झोपड़ी थी। वहाँ वह परिवार, चौकीदारी करने के लिए झोपड़ी बनाकर रह रहा था। इन लोगों की जिंदगी बंजारों जैसी होती है। मकान के पूरा होने के बाद, अगले निर्माण स्थल पर छोटी सी झोपड़ी बनाकर चौकीदारी करने लगेंगे।

बच्चों ने आगे बताया कि उनकी माँ उन्हें छोड़कर चली गई है। मैं सोच रही थी इन पिल्लों की माँ, अपनी गली में इनके लिए परेशान हो रही होगी, और बच्चों की माँ, इन सुंदर छौनों को छोड़कर कैसे जा पाई। उसका दिल कैसे नहीं फटा? रिक्शेवाले के बच्चे यह तमाशा देखने के लिए थोड़ा और पास आ गए। छोटा तो नासमझ था। पर बड़ा उन्हें इस तरह दूध पिलाना पचा नही पा रहा था। क्योंकि रोज सुबह उसका बाप उसे तीन रूपये देता था, जिससे वह स्टील के ग्लास में कोने वाली डेरी से दो छटाँक दूध लाता था। तब तक छोटू सोया रहता था। ये तीनों जीव इस थोड़े से दूध से उस काली चाय का रंग बदलकर लाल बनाते और दिन की शुरूआत करते। ऐसा सफेद दूध तो उसने चखा ही न था, पीना तो दूर। शाम ढल रही थी। धूप की गर्माहट कम हो रही थी। रात घिरने से पहले मुझे इनकी चिंता होने लगी। रात को ठंड काफी होने लगी थी। हमने एक पुराना बोरा ढूंढा और उसे फाटक के किनारे बिछा दिया। पिल्ले पेट में दूध जाते ही इधर उधर दौड़ने लगे। मानो जगह की पहचान कर रहे हों। किस्मत से हमारी

गली में अभी वाहनों का आवागमन ज्यादा न था। सिर्फ सुबह-सुबह एक स्कूल बस आती है, जिसे लेकर मुझे इनकी चिंता हो रही थी।

सुबह उठते ही बाहर दौड़ी तो देखा कि ठंड से सिकुड़े हुए सब एक दूसरे पर लदे थे। पता नहीं रात भर अपनी जगह भी बदलते होंगे या नही। पूरा का पूरा मांस का गोला उनकी सांसों से लयबद्ध ढंग से ऊपर नीचे हो रहा था। ऐसा लगा इन्हें एक बोरा और ऊपर से ओढ़ा दो। उतने में दूध वाला, उसके पीछे नौकरानी, ससुरजी की अंदर से चाय के लिए आवाज, अपने खुद के दो पिल्लों के डब्बे की चिंता, ज्यादा देर मैं वहाँ खड़ी न रह सकी। सुबह साढे छह से आठ कब बजे पता नही चला। सुबह के ये दो घंटे मानों पांच मिनट में खत्म हो जाते हैं। बच्ची को विदा करने बाहर आई तो फिर से इनका ख्याल आया। लगा देखूं, वह मांस का गोला अभी ऊपर नीचे हो रहा है या टुकड़ों में बिखर गया है।

पूर्व दिशा में भानु देवता सोना बिखरते हुए ऊपर चढ़ रहे थे। अपनी स्नेहिल उष्मा से भरी रश्मियों को बिखेर रहे थे। देखा तो हमारे मेहमान। पूर्वाभिमुख होकर उस कोमल धूप का आनंद ले रहे थे। मैंने उस ऊर्जा के स्रोत को नमन किया। मुझे हंसी आई उन विद्वानो पर जो इस जीवंत ईश्वर की उपासना न करके अपने बंद पूजाघरों में कांच की तस्वीरों के आगे घंटियॉ बजा रहे होंगे। आदित्य वहां जबरदस्ती घुसना चाहे तो भी उसे अंदर जाने के लिये वहाँ न खिड़की मिलेगी और न ही झरोखा।

मुझे देखते ही खुशी के मारे सबकी पूछें हरकत में आ गई थीं। अवचेतन मन में पूछने की इच्छा हुई, क्यों तुम लोगों ने ब्रश किया, कि नहीं? लो जल्दी से दूध पीने आ जाओ, गरम हो गया है। उतने में गली के मोड़ से वह दैत्याकार स्कूल बस हमारे घर की तरफ आते दिखी। इसी की तो मुझे चिंता थी। यहाँ ये बेवकूफ, अबोध निश्चिंत थे। जहाँ अक्ल नहीं होती वहाँ डर भी नहीं होता। जितनी बुद्धि, उतनी ही आगे की सोच और फिर उससे उतना ही डर। दैत्य की आवाज व उससे उत्पन्न हवा के झोंके से वे थोड़ा सा एक तरफ झुके। छहों गर्दनें बस का आना व निकल जाना देखते हुए बाँये से

दाहिने हुईं और सीधी हो गईं। मैं मन ही मन थोड़ी आश्वस्त हुई कि यदि इनके सो कर उठने का, धूप तापने का और इस दैत्य के यहाँ से निकलने का समय सुनिश्चित रहता है, तो चिंता थोड़ी कम है। तभी परेड खुलने जैसे, सब अलग होकर नित्यकर्म हेतु बिखर गए। पूरी गली में नव आगंतुकों के बारे में कौतुहल फैल गया। इससे आज की दोपहर, गली की औरतों को पतिदेवों के जाने के बाद आज की चर्चा के लिए विषय मिल गया। इस चर्चा के एजेंडा कई होंगे। एक कहेगी, देखो सामने वालों ने पिछले साल उस कुतिया के बच्चों को कहीं जाकर छोड़ दिया था, कितनी निष्ठुरता की थी। दूसरी धीरे से कहेगी, उनके अपने बच्चे तो हैं नहीं, उन्हें क्या मालूम वात्सल्य क्या होता है? तीसरी कहेगी, अरे ऐसे दुष्टों को तो ईश्वर बच्चे देगा भी नहीं। चौथी, समझदारी व परिपक्वता दिखाते हुए बोलेगी, अब बस भी करो, अच्छे हैं बेचारे, उस एक घटना को इतना तूल मत दो। वह तो ठीक है लेकिन कॉरपोरेशन क्यों नही करती इन आवारा कुत्तों को नियंत्रित करने के लिए, कुछ। हाँ, सही तो है, वह जहरीली मिठाई देकर मारने की बजाए इनका परिवार नियोजन क्यों नहीं करती? ऐसा पांचवी कहेगी। तब उसके बगल वाली सहेली उसे चूंटी काटेगी। उनका तो छोड़ सखी तेरे ही पेट में तीसरा है। तू कब फुल स्टाप लगा रही है। वह नाराज होकर उठ जायेगी। तब तक मीटिंग का भी समय खत्म हो चला होगा।

धीरे-धीरे प्लूटो को महसूस हुआ कि उसका प्यार बंटा नहीं। फिर उसे रामू का साथ अच्छा लगने लगा। वैसे भी श्वान प्रेमी कहते हैं कि ये दो या तीन एक साथ रहें तो खूब खुश रहते हैं। स्वाभाविक है- क्योंकि इन्हें साथ-साथ खेलने को और रहने को मिलता है। इनकी आपस में बात भी होती होगी। जाने क्या हमारे बारे में गिले-शिकवे या तारीफ करने होंगें, जो हमारे समझ में नहीं आता।

बहुत दिनों बाद प्लूटो को कोई चौपाया मिला था, दोनों की उम्र में काफी अंतर था। रामू प्लूटो के लिए बेटे जैसा था। वह उसका खूब ख्याल रखता। धीरे-धीरे पूरी गली रामू को चाहने लगी थी। उसे खाने को सब जगह से मिलने लगा था, परंतु रहने के लिए हमारा घर ही उसे अच्छा लगता, बिन माँ का अनाथ बच्चा छह भाई बहनों में अकेला

रह गया था। प्लूटो के जाने के बाद भी उसकी हमारे घर में घुसकर आराम करने की चाहत बरकरार है। जब भी मैं घर लौटता हूँ, गेट खुलते ही मेरे पहले वह अंदर होता है। यह अजीब परेशानी है। उसे निकालना मुश्किल हो जाता है, क्योंकि जो प्यार, मोहब्बत के बिना किसी चाहत के घर में घुस जाए, तो उसे आप कैसे निकालेंगे? आपका जो नौकर तनख्वाह की परवाह किये बगैर आपकी सेवा में जुटा रहे उसे अलग करना मुश्किल होता है। उसी तरह से रामू को भी बाहर करना मुश्किल था। रोटी दिखाकर भी बाहर नही जाये तो आप क्या करोगे? कोने में हाथ-पैर ढीले करके पड़ा रहेगा। उसे गोदी में उठाकर ही बाहर करना पड़ता। उस समय जैसे बिल्ली लटक जाती है, वैसे वह झूल जाता। जब वह सोया रहता तब उसे उठाने की हिम्मत न होती। विभा कहती, देखो कितने सुकून से सोया है सड़क के खतरों से दूर बेफिकर। वहाँ तो क्या पता कब कोई गाड़ी आ जाए, कौन शौकिया पत्थर मार दे, कुछ चलते-फिरते कोई ढोर सींग मार दे। जाने कैसे बिचारे सड़क पर जीते होंगे। हर क्षण असुरक्षित।

दादाजी की नाराजी का सभी को डर लगता है, उनके सीढ़ी उतरने की आवाज से वह भी उठकर खड़ा हो जाता है और पूंछ अंदर करके बाहर निकलने की तैयारी कर लेता है। डॉट खाने के डर से हम सब भोले बनकर चिल्लाने लगते हैं देखो-देखो रामू अंदर घुस आया। इसे जल्दी बाहर करो।

दादाजी अंदर ही अंदर मंद-मंद मुस्कुराते होंगे क्योंकि उन्हें मालूम है कि रामू ढाई घंटे से अंदर है। रामू को भी इतनी अक्ल नहीं कि कम से कम उस समय तो हाथ पैर तन कर अंगड़ाई न लो।

विभा तो इतना प्यार बरसाती है कि पूछिये नहीं। जब वह गॅरेज में सोया होता है तब मुझे अपनी गाड़ी बाहर ही रखनी पड़ती है रामू की नींद पूरी होने के बाद जब वह बाहर जाएगा, तब मेरी गाड़ी अंदर आएगी।

पूरी गली उसे खाना खिलाएगी पर विभा ही समझ पाएगी कि रामू प्यासा है वह उसे प्लूटो के बर्तन में चार चम्मच दूध के साथ

पानी भरकर देगी। वह लपर-लपर करके पूरा पानी पी जाएगा। उस समय यदि आप उसके चेहरे के समाधान को देखें तो आपको लगेगा मानो पानी आप ही के पेट में जा रहा है।

इतना प्यार मिले तो घर में घुसने की इच्छा किसे नहीं होगी? सुबह मैं काम के लिए निकलता हूँ तो दूर से दौड़कर आएगा यदि आगे जाकर कहीं गलती से बैठा मिलता है तो उसके लिये गाड़ी रोकनी पड़ती है। न मिलो तो वह दुखी हो जाता है, उसकी गर्दन सहलाओ, उसका हालचाल पूछो, ऊँ-ऊँ वाली गुडमार्निंग लो तब कहीं वह शान्त होगा। तब तक खिड़की पर चढ़ जाएगा और अपने धूल भरे पंजों से मेरी बांह और कमीज़ खराब कर देगा। उस धूल को मैं सांईबाबा की भभूत मानता हूँ और इन्हें ईश्वर का साक्षात रूप। कहो पूजा के समय भभूत लगाने वालों का ध्यान कहीं और हो परंतु जब रामू मुझे अपनी भभूत देता है तब इसमें कोई शंका नहीं हम एक दूसरे में मग्न होते हैं। इस शुरूआत से बाकी दिन तो अच्छा जाना ही है।

देखते देखते दिन बीत गया। गली के बच्चे अपने स्कूलों से वापस आने लगे। घरों में बस्ते पटक-पटक कर सारे स्कूल यूनिफार्म में ही हमारे घर के सामने जमा होने लगे। पिल्ले बच्चों की गोद में खेलते रहे और बच्चे अपनी अम्माओं से मार खाते रहे। पिल्ले भी अपनी गली में सबके यहाँ जा-जा कर सबसे परिचय कर रहे थे। अपने ठोर का चुनाव कर रहे थे। जब सब इधर उधर हो गये तो मैं अंदर खाना बनाने में जुट गई। दो एक घंटे बीते होंगे। गली में मुड़ती पतिदेव की गाड़ी का हार्न सुनाई दिया। उन्होंने आकर बताया उन्हें उन बारह चमकदार आंखों का इंतजार था। परंतु जाने सब के सब कहाँ गायब हो गये थे। थोड़ी चिंता भी हुईं। सोये होंगे यहीं कहीं आस पास। दिल के एक कोने में यह भी लगा, कि चलो पिंड छूटा। परंतु पिंड छूटता कहाँ इतनी जल्दी! इतनी आसानी से पिंड छूटना हमारे किस्मत में लिखा न था। उनसे अभी ढेर सारा प्यार, खूब कसक और खूब रोना लिखा था। इतना आसान न था उस दिल्लगी में, की दो रोटी डालते रहते और जुड़ने से बचे रहते।

दूसरे दिन हम फिर दौड़े फाटक की तरफ। देखा तो कोना खाली था। मन थोड़ा खफा हुआ। पर यह क्या? बाँयीं तरफ एक छोटे से गड्डे में एक मांस का गोला ऊपर से नीचे हो रहा था। हमने उनके लिए जो बोरा डाल दिया था, उससे उनकी ठंड न थमी। दिन भर में उन्होंने वह गड्डा खोज लिया था। प्रकृति की व्यवस्था पर मुझे बड़ा विस्मय हुआ। भेजा, होगा इनका अखरोट के बराबर लेकिन उसमे अक्ल देखिये कितनी भरी थी। मुझे देखकर उनमें हलचल हुई। मांस का गोला विखंडित हुआ। एक-एक करके आलस झटक कर मेरी तरफ आने लगे और फाटक के सामने बैठने लगे। बड़ा मोहक दृश्य था। पूर्व दिशा से भगवान अपनी कोमल रश्मियां बिखेर रहे थे। ये सब मानो एक कतार में सूर्य देव की उपासना करने बैठ गए। मन में कोई चिंता नही। कोई चाय के लिए पूछेगा क्या? दिन में खाना मिलेगा कि नहीं? कोई फिकर नही। अभी तो सुनहरी सुबह और कोमल धूप का मजा लो। न तो माँ ब्रश लिये पीछे दौड़ रही है, न ही स्कूल जाने की चिंता है। इस क्षण की बात करो तो तो जिंदगी बेहतरीन चल रही है।

मोहल्ले में अलिखित रूप से घोषित हो चुका था कि ये पाठक जी के पिल्ले हैं। पिल्लों ने भी पाठक जी को चुनना बेहतर समझा। इस बीच सबका नामकरण हो चुका। चितकबरा, छोटा, चूहा, लोमड़ी, काले तेज नाखूनों वाला शेरू, भूरा और इस कहानी का हीरो रामू।

रामू के नामकरण की कहानी बड़ी रोचक है। श्री रामदेव बाबा हमारे श्रद्धेय हैं। मुझे वे आरोग्य बांटने वाले धनवंतरी नजर आते हैं। उस समय बाबा हमारे शहर में आये हुए थे। पूरा माहौल आसन प्राणायाम से व्याप्त था। राम खूब उछल कूद करता। अलग-अलग मुद्राओं में बैठता। किसी ने कहा, देखो यह आसन कर रहा है। वैसे वाकई में सारे आसनों का नामकरण इन जानवरों की मुद्राओं से किया गया है। चाहे वह मयूरासन हो या कुक्कुट्टासन। जब इनकी नकल उतार कर हमने उस आसन का नाम किया हो, तब आश्चर्य नहीं कि जब ये आपको वह मुद्रा नैसर्गिक अवस्था में करते दिखेंगे तो वह उत्तम होगी ही। एक बार रात को पतिदेव के स्वागत में बाकी पांच तो खड़े थे, पर यह नहीं दिखा। माधव ने कहा आई यह जल्दी सोता

है क्योंकि उसे भोर में प्राणायाम करने उठना होता है। हमें हंसी आई और रामदेवजी महाराज का पक्का शिष्य करके हम उसे रामू के नाम से बुलाने लगे इस पर दूसरे ही दिन मोहल्ले में बवाल मचा। पड़ोस के सचदेवा साहब ने पतिदेव की गाड़ी तैश में रोक दी। बोले, ''सुनिये जी मैं रामदेव बाबाजी का शिष्य हूँ।''

पतिदेव बोले, ''मेरे समझ में नही आ रहा है कि आप रास्ते में मुझे रोककर डाँट क्यों रहे हैं। जहाँ तक शिष्यत्व का सवाल है, शिष्य तो मैं भी हूँ और आधा हिन्दुस्तान है।''

वे नाराज होकर बोले, ''नहीं डॉ. साहब मैं यह कहना चाहता था कि आपने उस पिल्ले का नाम रामू रखकर अच्छा नहीं किया।''

पतिदेव ने किसी तरह से उन्हें आश्वस्त किया कि शिष्यत्व में रामू आपसे स्पर्धा नहीं करेगा। इस प्रकार रामू के लोकप्रिय होने की शुरूआत हुई। बिना विवादित हुए कोई लोकप्रिय नहीं होता। अगले तीन घंटे, गली की औरतों को दोपहर के बैठक के लिए विषय मिल गया। सेमिनार का 'अ' भाग था रामू का नामकरण और 'ब' भाग था डॉ. साहब और सचदेवा साहब की लड़ाई। उसमें एक बोली वह तो हमारे थे जो बीच में आ गए नहीं तो कुछ हो जाता। बगल वाली ने टोका, तुम बातें बहुत बनाती हो। उस दिन तुम्हारे वो दौरे पर थे। उस पर विवाद ने एक रोचक मोड़ लिया–तुम्हें बहुत खबर रहती है कि हमारे ये कब यहाँ रहते हैं और कब दौरे पर। खैर।

चन्द्रकला की तरह पिल्ले बड़े होने लगे। बच्चे के बड़े होने से उनके घूमने का जो दायरा बढ़ता है, उससे दुर्घटनाओं का डर है, परंतु हम कुछ भी नहीं कर सकते थे। उन सबको घर के अंदर लेना संभव नही था। पतिदेव शाम को लौटते, तो उनका पहला सवाल होता सब ठीक है ना? उन्हें नन्हों ने जैसे बांध दिया था। सब ठीक है ना का सवाल हम लोगों के लिए थोड़े ही था। वह पिल्लों के लिए होता था, और बड़ा परिष्कृत था। पूछना तो वह यह चाहते होंगे, कि सब जिंदा है कि नहीं। हमें मालूम है कि इन आवारा पिल्लों में एकाध ही बच पाता है। किन्तु हम अपने मन को समझा नहीं पा रहे थे। घर में

रोज झगड़े होते थे कोई जरूरत नहीं है, इनकी इतनी परवाह करने की। इन्हें इनके हाल छोड़ दो उनकी प्रतिकार शक्ति उन्हें बचाएगी, वगैरह-वगैरह। असल में एक रात पहले मैंने उनके लिए एक पॅकिंग का खोका बाहर रखा था। ताकि वे ठंडी हवा से बच जाएँ। उसी का प्रतिरोध हो रहा था।

पतिदेव के रात को लौटते तो गली के लोगों के लिए हम और हमारे पिल्ले, एक तमाशा रहता। पिल्लों ने हमारे मेन गेट की पुलिया के नीचे अपना बंकर बना रखा था। छहों उसमें सुरक्षित रहते। रास्ते के गाड़ियों से भी व ठंड से भी। पतिदेव के गाड़ी के हार्न से वे उठ जाते। और बंकर से एक एक मुंडी बाहर झांकने लगती। आलस झाड़ते हुए वे सब बाहर आते। शेरू तेज था सबसे पहले वह बाहर आता उसके पीछे भूरा, फिर चितकबरा, लोमड़ी और चूहा। रामू का अनिश्चित रहता। मेन गेट खोलते ही प्लूटो बाहर की तरफ दौड़ लगाता। शुरू-शुरू में इनकी तरफ गुर्राता था। बाद में जब उसे महसूस हुआ कि इनसे उसका दाना पानी और प्यार नही बंटा, तब उसने उन्हें स्वीकार कर लिया। गाड़ी अंदर लेने के पहले उनको सम्हालना जरूरी होता, कहीं एकाध गाड़ी के नीचे न आ जाये।

विभा दरवाजा खोलकर प्लूटो की तरफ ध्यान देती। चारू अपने साथ कुछ टोस्ट या बिस्कुट लेकर बाहर आती व पिल्लों को एक-एक टुकड़ा देकर व्यस्त करती। माधव उन्हें दूसरी गाड़ियों से बचाता और पूरे कार्यक्रम का संचालन करता। तब जाकर पतिदेव गाड़ी पोर्च के अंदर ले पाते। उनकी एक आंख सामने रहती और दूसरी से गिनते रहते कि पूरी छह है कि नही। फिर गेट बंद करने की अपनी अलग दिक्कत होती, क्योंकि बिस्कुट खत्म होने से चारू परेशान होती। उधर प्लूटो अंदर आने के लिए इतनी आसानी से तैयार नहीं होता। बिस्कुट का आकर्षण खत्म होते ही पिल्ले या तो सड़क पर बिखरने लगते या विभा के पीछे घर के अंदर घुसने की कोशिश करते। जैसे इंसानों में व्यक्तित्व अलग अलग होता है। वही पशुओं में भी देखने को मिलता है। शेरू और रामू आक्रामक थे। चितकबरा संकोची, लोमड़ी बदमाश व चूहा बड़ा कमजोर। भूरा सामान्य था। इनकी यह प्रवृत्ति खाना देते समय भी समझ में आती। रामू और शेरू सबसे

आगे रहते। चाहे खाना हो या प्यार, सबसे ज्यादा मुझे चाहिए। रोटी का टुकड़ा लपकने शेरू तीन फीट तक उचक जाता। खूब ताकत थी उसमें। खूब सुंदर भी था वह, स्याह काला थूथन और नुकीले नाखून। बाकी पूरा शरीर गहरा भूरा। एक बार उसने रोटी का टुकड़ा लपकते समय चारू की उंगली काट ली। हम सब चारू का मजाक उड़ाने लगीं कि अब तुम्हारी नाक भी ऐसी ही काली हो जाएगी और कुछ महिनों में भोंकने लगोगी। फिर उसे पांच महंगे वाले इंजेक्शन लगाने पड़े। उसका यह फायदा हुआ कि अब कभी भी किसी श्वान को खाना खिलाना हो तब चारू सामने जाएगी या किसी अपरिचित के घर जा रहे हो और वहाँ बगीचे में भाई साहब छूटे होने की आशंका हो तब चारू आगे जाएगी। टीकाकरण से अब वह सुरक्षित हो गई है, इसलिए कोई चिंता नही माधव ने सीधी भाषा में कहा कि ताई अब तुम्हें किसी भी जानवर से कटवाया जा सकता है। हम लोगों ने तुम पर इतना खर्चा जो किया है। इतने में तो बेचारे पिल्लों को साल भर अंडे खिला देते। चूहे की तबियत कभी भी बहुत अच्छी न रही। खाने की लाईन में सबसे पीछे रहता। हम उसे अपने हाथ से उठाकर दूध पिलाते। फिर भी वह सुधरा नही। प्रकृति का नियम ही है शायद वह नहीं चाहती कि कमजोर या असामान्य ज्यादा दिन जिये। मैंने यही बात अपरिपक्व लोगों में देखी ये बच्चे जो शरीर से स्वस्थ होते हैं किंतु जिनकी उम्र मानसिक रूप से दो या तीन वर्ष की होती है, वे प्रायः तीस वर्ष की उम्र में दुनिया से उठ जाते हैं। मानो ईश्वर अपनी गलती को महसूस करता है और अपने कारखाने से निकले हुए डिफेक्टिव पीस को वापिस बुला लेता है। चूहे की प्रतिकार शक्ति कम होने से वह खेलता-कूदता नहीं। एक जगह पड़ा रहना पसंद करता। उससे उसके शरीर पर लाल चीटियां लग गई। उसके तिल-तिल करके जाने की आशंका से हमारी रूह कांप उठी। इस दर्दनाक मौत से अच्छा होता कि किसी गाड़ी के नीचे आ जाता भाग्य से उसे जल्दी मुक्ति मिली। एक दिन वह गायब मिला। कहीं मैदान में जाकर उसने अपने प्राण त्यागे होंगे। मुझे आश्चर्य हुआ कि मुझे उसके जाने के दुख क्यों नही हो रहा है। बल्कि एक हल्कापन महसूस हो रहा था। अब बचे मैं और मेरे बाकी पांच बच्चे। पांच दिन बाद चितकबरा गायब हुआ। जहाँ तक कोई उसे पालने ले गया होगा। चलो अच्छा

हुआ, उसे एक घर तो नसीब हुआ। हमें बार-बार शेरू को पालने की इच्छा हो रही थी। उसकी सुंदरता पर मानो हमारी ही नजर लग गई। उस दिन तेजी से निकली एक मोटर साईकिल का उसे धक्का लगा। बेचारे की दो पसलियां टूट गई। अत्यंत वेदना से कराह रहा था। पसलियों के टूटने का वैसे कोई इलाज नहीं होता। उसमें प्लास्टर वगैरह भी नही लगाया जाता। हाथ पैर टूटते तो शायद हम कुछ कर पाते। तीन फुट छलांग मारने वाला शेरू असहाय हो गया। उसके लिए एक एक कदम चलना भी दूभर हो गया।

अब रामू का कोई प्रतिद्वंदी न रहा। मैंने कभी सोचा भी न था कि शेरू को कभी चूहे की तरह गोद में लेकर दूध पिलाना पड़ेगा। हाथ में उठाने पर उसके दिल की तेज धड़कन और तेज सांसें और महसूस होतीं। दूसरों से दूर वह एक गड्ढे में पड़ा रहता क्योंकि किसी का धक्का उसे सहन न होता। रात को हम सोते तो सुबह शेरू मिलेगा इसकी शाश्वती न रहती। उसका और हमारा दुःख दो दिनों तक चला। तीसरे दिन सुबह ईश्वर ने उसे भी बुला लिया। गड्ढे में सोता मिला, हमेशा के लिए। उसे भावभीनी विदाई देने की इच्छा हुई घर के पिछवाड़े में खाली प्लॉट में गड्ढा खोदा और उसे उतार दिया धरती मां की गोद में। परंतु यहाँ कहानी खत्म न होनी थी। बाकी पिल्लों ने वह गड्ढा खोद डाला और दूसरे दिन सुबह उसको दावत उड़ाते मिले। दुःख यह हुआ कि उसमें रामू भी था। जो कभी एक दूसरे के बिना रहते नही थे, वह अपने उस साथी की दावत उड़ा रहा था। अध्यात्म के हिसाब से तो शेरू कब का जा चुका था। परंतु परिस्थितिवश और भूख के सामने तो इन्सान भी एक दूसरे को खा जाता है, ये तो जानवर थे। ऐंडीज पर्वत पर एक हवाई जहाज दुर्घटना ग्रस्त हुआ था। बचे हुए पंद्रह यात्री अपने साथियों को खाकर चालीस दिन जिंदा रहे।

भूरे का घूमने का दायरा बढ़ते जा रहा था। ना काहू से दोस्ती ना काहू से बैर, टाईप वह दूर-दूर घूमता रहता।

लोमड़ी सामने पानी के गड्ढे में फूलकर तैरती मिली। दो आंसू टपके और मैने आंखें बंद कर ली। किसी से अपना दुःख भी बांटा नहीं।

उलटी गिनती शुरू हो चुकी थी। इनकी मौत या गायब होने की चर्चा आपस में करना छोड़ दिया था उसके सिवा दुःख के कुछ न मिलता। सबके आंसू भी सूख चुके थे। प्लेग की महामारी फैली तब माँ ने अपने पहले या दूसरे बच्चों तक विश्वास करती। उसके बाद कौन गया उसके दुःख से ज्यादा उसे यह चिंता होती कि जो है वह बचेगा या नहीं।

धीरे-धीरे रामू को गली के सभी परिवार चाहने लगे थे। सभी घर लौटने वालों का वह गली के मुहाने पर स्वागत करता और उसके घर तक छोड़ने जाता। उसके बदले उसे कुछ थोड़ा बहुत खाने पीने को मिल जाता। गली में किसी जानवर या अवांछित व्यक्ति को घुसने न देता। उसने नेपाली चौकीदारों की तरह स्वरोजगार निर्मित कर लिया था। ये नेपाली चौकीदार रातभर सीटी मारते हुए आपके मुहल्ले की चौकसी करेंगे और पहली तारीख को सलाम शाब बोलकर पांच दस रूपये जितना आप खुशी देकर चले जायेंगे। पूरी गली में किसी को मालूम नहीं कि इस सज्जन को नौकरी किसने दी। वही हाल रामू का था। मन से आपकी सेवा कर रहा हूँ जो मर्जी दे देना।

रामू काफी बड़ा हो चला था व समझदार भी हो गया था। कहाँ चाय पीना, कहाँ खाना खाना, उसने अपना रूटीन बना लिया था। जब भी पतिदेव लौटते तो उनके पीछे आता और हमारे फाटक खोलते ही दौडकर अंदर बैठक की सीढ़ी पर बैठ जाता। हमारे दरवाजा खोलने के पहले कार की खिड़की तक चढ़कर अपना सिर उनके बराबरी तक लाता, ऊँ-ऊँ करके उनसे बतियाने की कोशिश करता। मानो दिनभर का उनका हाल पूछ रहा हो, और अपना उन्हें बता रहा हो। पतिदेव भी उससे बतियाते रहते। हमारे दरवाजा खोलने तक खिड़की से पतिदेव का दाहिना हाथ बाहर करके रामू की गर्दन और सिर सहलाते रहते हैं।

अति प्रसन्नता से व संतुष्टी से उसके पूंछ की हरकत बंद होकर नीचे लटक जाती। भावनाओं के उद्वेग में इनके पूँछ की हरकत बंद हो जाती है चाहे वह गुस्सा हो या फिर मोहब्बत। दरवाजा खुलते ही मजेदार दृश्य रहता है। प्लूटो फुल स्पीड से बाहर और रामू उसी गति से अंदर क्योंकि प्लूटो तरसता रहता कि कब दरवाजा खुले और उसे

बाहर की खुली हवा में घूमने मिले। रामू के लिये वे कुछ मिनिट ही थे जब उसे घरूपन मिलता। गाड़ी गैरेज में पार्क करने तक प्लूटो नित्यकर्म से निवृत्त होकर अंदर आ जाता। फिर रामू को बाहर भेजने का प्रोग्राम चालू होता। कभी रोटी कभी टोस्ट तो कभी बिस्किट। कभी-कभी स्थिति बड़ी मार्मिक हो जाती है। वह लिद्द होकर डल जाता है न तो बिस्कुट से उठता है न ही पेडिग्री से। तब ऐसा लगता मानो कहना चाहता हो कि 'प्लीज मुझे थोडी देर के लिये बैठने दो' मुझे यह छत अच्छी लगती है। मैं रोटी के लिये अंदर नही घुसता। दस मिनिट जरा तुम लोगों के साथ बैठने की इच्छा होती है फिर मैं खुद ही बाहर निकल जाऊंगा।

मुझे मालूम है वह अंदर क्यों घुसता है, मैं जो हूँ। माँ से ही तो मकान घर बनता है। माँ न हो तो वह ईंटे गारे का निर्माण खाने को दौड़ता है। तभी तो पीछे की झोंपड़ी में उन बच्चों की माँ चले जाने के बाद जान ही नहीं दिखती। न आदमी को उसमें घुसने की इच्छा होती होगी न ही बच्चों की।

तो रामू का घर में घुसना व उसे भारी मन से उठाकर बाहर करने क्रम जारी है।

हमारी राजकुमारी प्लूटो को कार में बैठने का खूब शौक था। एक बार मैंने इनसे कहा कि जरा एकाद बार रामू को भी बिठाकर कार में घुमा दो। ये हंस दिये कि अब यहीं बाकी बचा है कुछ दिनों पहले हमने गाड़ी बदली वे घर आते ही बोले बुलाओ अपने रामू को आज मैं उसे अपनी नई गाड़ी में घुमाऊंगा। मेरा चेहरा उतरा हुआ था। रामू सुबह से गायब था, नई गाड़ी का उत्साह न जाने कहाँ काफूर हो गया, सारा उत्साह खत्म हो गया। ये बोल पड़े यह नई गाड़ी एक तरफ दो दिन ऐसे ही गुम सुम बीते। तभी इनकी गाडी का निरंतर हार्न सुनाई दिया। वैसे यह हार्न बहुत कम बजाते हैं। मुझे भी थोड़ा आश्चर्य हुआ। ये गली के मोड़ से ही खुशी के मारे हार्न पर हाथ रखे हुए थे। देखा, तो इनकी गाड़ी के साथ फुल स्पीड से रामू दौड़ता चला जा रहा था। मैं सड़क पर दौड़ी। इनकी गाड़ी रूकी। अब रामू को उनमें और मुझमें चयन करना था। उसने माँ को चुना।

ऊँ–ऊँ करके खूब बतियाने लगा। बताने की कोशिश कर रहा था कि वह दो दिन कहाँ था। मैं भी उसकी हाँ में हाँ मिलाती रही। फिर मेरा गाऊन पकडकर खींचने लगा। और फिर से ऊँ–ऊँ करने लगा। मानो बोल रहा हो कि माँ अब मैं कभी तुम्हें छोड़कर कही नहीं जाऊंगा, और हाँ बहुत भूख लगी है, कुछ तो लाओ। मैं गेट खोलकर अंदर जाने लगी तो फिर वह भी अंदर आने का प्रयास करने लगा। मैं इस बार हारी, और उसके लिए पूरा दरवाजा खोल दिया। पूरे घर में उमंग छा गई। दो दिन पहले खरीदी गई चमचमाती गाडी वह खुशी न दे पाई जो रामू महाराज ने अपनी वापसी से दी। जिंदगी फिर से सामान्य हो चली है। बरसात का मौसम आ गया। ईश्वर फिर से हमें नये पिल्लों की सौगात देगा। परंतु उसे स्वीकार करने की अब तो हिम्मत न रही। राजकपूर की तीसरी कसम की याद आ रही है। हम भी कसम लेते हैं कि अब इस चक्कर में नही पड़ेंगे। यह दिल्लगी सिर्फ दो रोटी डालने वाली बात तो नहीं, यह तो पिल्लों को गोद में लेना है। यह वह कौर है जो न निगलते बनता है, और न ही उगलते।

हमें पता ही न चला कि कब रामू अंदर घुसकर वॉश बेसिन के नीचे बैठा था।

पोंछा लगाते समय नौकरानी जब उस तक पहुँची तब बोली, ''काय बाई जा तो पल गओ।''

✦✦✦

छोटे की कहानी बड़ी लम्बी

घर पहुंचा तो सब घर के सामने छोटू को घेर कर खड़े थे। न तो भूमिका, न संदर्भ, आपको लगेगा यह छोटू कौन ?

जूली ने हमारी गली को पंदरह दिन पहले, तीन पिल्ले तोहफे में दिए थे। बच्चे देने के लिए निर्विवाद रूप से पाठकजी का घर चुना जाता है। उस जमात के लिए सबसे विश्वसनीय प्रसूति गृह यही है। जच्चा-बच्चा दोनों का ख्याल रखा जाता है। खाना खोजने इधर-उधर गए तो अपने पीछे बच्चों की चिंता भी नही रहती।

तीन भाईयों में छोटू सबसे छोटा था। शुरू से ही खूब कमजोर था। उस दिन जब मैं दवाखाने से लौटा, तो जूली अपने नये परिवार के साथ दरवाजे पर मेरे स्वागत में बैठी थी। मेरे बच्चे बोले, ''देखो बाबा जूली ने तीन पिल्ले दिये हैं। पूरे सफेद पॉमेरियन जैसे।''

मैंने हूँ किया और अंदर आने लगा, ज्यादा रूचि नहीं ली। बच्चों को अच्छा नहीं लगा। प्लूटो के जाने के बाद स्वयं को बमुश्किल सम्हाला था, तो रामू के भाई बहनों को विदा करना पड़ा। इसे झेलना बड़ा कठिन होता है। मेरी हिम्मत टूट चुकी थी। अंदर से आभास था कि ये भी नहीं बचने वाले। बेहतर है कि न दिल लगाओ न उसका टूटना झेलो।

जूली ने फिर अपनी थकी आंखें उठाकर मेरी तरफ देखा। पूंछ में हरकत करने की भी शायद उसमें ताकत न थी। पिल्ले उसके पेट से चिपके हुए थे।

उसकी निगाहें सवालिया थी। उनमें मेरे लिए शिकायत भी थी। मानो पूछ रही हों, ''वैसे तो खूब जूली-जूली करते थे, दवाखाने से आते जाते समय गली के मोड़ पर रूककर हालचाल पूछते, सिर पर हाथ फेरते और आगे जाते। आज तुम्हें क्या हो गया है? इतनी बेरूखी क्यों?''

मरता क्या न करता, मजबूरन उसके बगल में बैठ गया और माथे को सहलाया। उसकी पूंछ हरकत में आ गई और आंखें चमकने लगीं। मैने बच्चों से कहा इसे गरम दूध पिलाओ, और हाँ अंडा भी दे देना। सिर उठाकर देखा तो मेरा परिवार मेरी लाचारी पर मंद-मंद मुस्कुरा रहा था।

उसके बाद ना तो कभी जूली को प्यार किया न ही बच्चों को गोद में लिया। चारू उनके साथ रोज खेलती रही। उसे कहीं-कहीं चोट लगी थी। उन घावों पर चीटियाँ लगने लगीं थी। वह उन्हें शॅम्पू से नहलाकर साफ रखती और पाऊडर छिड़कती। जो दूध नही पी पाते उन्हें गोद में लेकर ड्रॉपर से दूध पिलाती। उसकी सेवा भावना देखकर मैं विस्मित था।

छोटू की किस्मत में भाईयों का साथ ज्यादा दिन न था। एक बीमारी से गया और दूसरा कमजोरी से। चारू पूरे मन से उनकी सेवा करती रही। चारू डॉक्टर है। पढ़ाई पूरी हो चुकी है। काम अभी शुरू नहीं हुआ। उसका व्यक्तित्व देखकर लगता है, वह एक महान डॉक्टर बनेगी। अच्छे डॉक्टर इसी तरह के होते है। होशियार, दयालु, धैर्यवान! उसमें ये सारे गुण हैं ही। साथ ही उसमें निर्लिप्त बने रहने की जो ताकत मैने देखी, वह अद्‌भुत है। मालूम है कि यह नहीं बचेगा फिर भी आखिरी क्षण तक सेवा-सुश्रुसा करना। उसके जाने के बाद बिना विचलित हुए अगले मरीज के लिए उसी मन से तैयार- कर्मण्येवाधिकारस्ते.....खैर।

तो अब बचा था अकेला छोटू और उसे यह भीड़ घेरे खड़ी थी। विभा ने सही कहा- हमने पूरी गली को इनसे प्यार करना सिखा दिया। अब हमारी गली में सभी श्वानों को चाहने लगे हैं। इन्हें खाने की कमी नही रहती- सबके भोजन का समय और घर बंधे हुए हैं। रामू तो सबके यहाँ निस्वार्थ भाव से मिलने भी जाता है। उसका दोपहर का भोजन जरगर जी के यहाँ रहता है। शाम को चाय हमारे यहाँ। बीच में सबसे मिलने जाता है।

मैं जब पहुंचा तब सब मेरी तरफ मुड़े। चारू बोली, बाबा किसी मोटर सायकिल वाले ने छोटू को मार दिया। देखा तो छोटू कराह रहा

था। उसका एक पैर उठ नहीं रहा था। बहुत खराब लगा। मैंने कहा, मेरी नजर लग गई। सुबह जाते समय मैं बहुत खुश हो गया था कि चलो सबसे कमजोर छोटू गली में दौड़ने लगा है। देखो, वही दौड़ना उसके लिए घातक हो गया। बच्चों के जब पैर फूटते है तब उनका खूब ख्याल रखना पड़ता है। चारू ने कहा– ‘‘वो ठीक है पर अब इसका क्या करें? किसको दिखायें? जाओ जल्दी से किसी डॉक्टर को लाओ।’’ हंसी आई। असल में मेरे घरवाले मुझे डॉक्टर मानते ही नही। मैने कहा ‘‘देखो– अब तो इसकी उम्मीद छोड़ो। पसलियों और कूल्हे ंकी चोट में तो प्लॉस्टर भी नहीं चढ़ता। इसके लिए आप कुछ नहीं कर सकते।’’

वह बोली, ‘‘मैं जानती थी आप कुछ नहीं करेंगे।’’

मैंने, उनके, मेरे प्रति आकलन को फिर से मोहर लगा दी थी। वह पैर पटकते हुए घर की तरफ चली गई। श्रीमतीजी बोली–ये तो कोई बात नही हुई। इसे क्या मरने के लिए छोड दें?

मैने कहा, होना वही है– अब तुम चाहे जो बोल लो, क्यों कि अब यह चल नही पाएगा, तमाम इन्फेक्शन होंगे– चीटीयाँ लगेंगी। बेहतर होता यह गाड़ी के नीचे अच्छे से आ जाता।

सबमें खुसुर – पुसुर हुई। किसी को भी मेरे कडवे बोल अच्छे नही लगे। सब बिखर कर अपने अपने घर जाने लगे। सबके लिए मैं आखिरी उम्मीद जो था। डॉक्टर साहब आयेंगे और छोटू को ठीक कर देंगे। मेरे इसी स्वभाव की वजह से मैं डॉक्टरी में ज्यादा सफल नही हो सका। कोई रिश्तेदार यह सुनना नही पसंद करता कि उसका मरीज ठीक नहीं होगा। आप पैसे लेते रहें और उम्मीद दिलाते रहें। एक दिन उसकी क्षमता खत्म होने पर खुद ब खुद आपके पास आना छोड़ देता है।

छोटू के वाकये के बाद लगा कि मुझे अपना स्वभाव बदलना चाहिए। चारू से यह प्रेरणा मिली कि उम्मीद छोड़नी नहीं चाहिए। चमत्कार भी होते हैं, देखा तो वह एक पुराना कपड़ा लेकर चली आ रहीं थी। उसने प्यार से उसमें छोटू को लपेटा और घर के अंदर ले आई।

गर्म दूध में दर्द की गोली घोलकर पिलाई और थपथपाकर उसे सुला दिया। फिर हम लोगों ने पशु चिकित्सक को घर बुलाने का विफल प्रयास किया। दादाजी ने भी आश्चर्यजनक रूप से उसके घर में उसके अस्तित्व को स्वीकार किया। इनके शब्दकोश में इस जीव के प्रति प्रेम के लिए कोई शब्द नहीं। विभा पिल्लू, छोटू, सोनी जाने क्या-क्या कहती है। उसके विपरीत दादाजी ने पूछा, ''इस छोटे कुत्ते को क्या हुआ है?'' मैंने कहा, ''एक मोटर साइकिल वाले ने मार दिया।'' मुझे छोटा कुत्ता सुनकर हंसी आई। लेकिन कुछ न बोला। उनमें जाने कहां से दया का भाव जगा, ''६बोले वो शार्कोफेरॉल रखा है चटा देना। जल्दी अच्छा हो जायेगा।''

फिर शुरू हुई चारू की सेवा-सुश्रुसा। उसे नहलाना और चीटियाँ न लगे इसलिए बार बार जगह बदलना। उसे करवट लेने में भी तकलीफ होती। पेशाब करके बिस्तर गीला करता तो बच्चों जैसे कूं-कं करके बुलाता। जूली बिचारी, गेट के बाहर चुपचाप बनी रही। उसके दिल पर क्या बीत रही होगी? आप कल्पना कर सकते हैं। परन्तु उसने कभी अंदर आने की जिद नहीं करी। बिल्कुल वैसे ही-जैसे गहन चिकित्सा कक्ष में इनक्यूबेटर में बच्चा भर्ती हो और उसकी बेबस माँ बाहर उसके ठीक होने का इंतजार कर रही हो।

छोटू का पिछला बायाँ पैर लटक गया था। शायद रीढ़ की हड्डी की आंतरिक चोट से वह निष्प्राण हो गया था। मेरी रही-सही उम्मीद भी जाती रही। विभा के ढेर सारे प्रश्न- होते क्या छोटू कभी ठीक नहीं होगा?

मैंने कहा, ''सुना तो नहीं विभा, कि कोई लकवे को मरीज ठीक हुआ हो।'' इधर चारू की तन-मन लगाकर उसकी सेवा जारी थी। कभी वह डॉक्टर बन जाती, तो कभी छोटू की माँ बनकर बेतुके सवाल पूछने लगती। मैं तो ध्यान हटा ही चुका था। एक दिन शाम को लौटा तो देखा उसके निचले पैर में पट्टी बंधी हुई है, चिंता हुई। पूछा तो पता चला वह चलते समय उस पैर को घसीटता था। वह न छिले इसलिए चारू ने पट्टी बांध दी थी। उसे जगह बदल-बदल कर सुलाना, उसकी चादर बदलना, दो दिन मे ंएक बार शॅम्पू से नहलाना और दिन

में कई बार दूध अंडा, शार्कोफेरॉल, पोलीबियॉन वगैरह पिलाना। यह काम कोई हफ्तेभर जारी रहा। जो चारू की पढ़ाई छोड़कर हमें एक ग्लास पानी न दे, वह पूरे लगन से उसके साथ जुटी रही। मुझे लगा छोटू की आंखों में थोड़ी सी जान आने लगी थी। वे फिर काली स्याह और चमकदार होने लगी थीं।

चारू की तपस्या के आगे ईश्वर को झुकना पड़ा। वह चमत्कार देखना सबसे पहले मेरे भाग्य में था। छोटू, चलते समय वह पैर भी टिका रहा था। उसका घसीटना बंद हो गया था, अपनी आंखों पर विश्वास न हुआ। चिल्लाकर सबको बुलाया, पूरी गली में हर्ष की लहर दौड़ गई।

चारू बोली, ‘‘ज्यादा खुश न होओ। आपने तो कोशिश करने से भी मना कर दिया था।’’ बात तो सही थी। इस जीती हुई टीम से मैं कब का अलग हो चुका था।

छोटू की पट्टी हट गई, गहन चिकित्सा कक्ष से निकाल कर बच्चों को माँ को सौप दिया गया। जूली की आंखों में कृतज्ञता भरी थी। चारू की पढ़ाई के नुकसान को ईश्वर ने दूसरे ढंग से संभाला। हाल ही में समाचार आया कि उसकी सीटें दुगनी हो गई। इस बीच मैं होली की छुट्टी का फायदा उठाकर हफ्ते भर के लिए बाहर चला गया था। लौटकर आया तो दरवाजे पर छोटू ने स्वागत किया। वह मेरे सामने इठलाकर चला रहा था मानो अपने घर में मेरी अगवानी कर रहा हो। सामान रखा तो उसी ही उम्र का एक और मेहमान बैठा था कल्लू। मैं चारू पर चिल्लाया, यह नई बला कहाँ से आ गई? चारू बोली, बाबा चुप रहो। इतने प्यारे से जीव को बला मत कहो।

नीचे देखा तो कल्लू मुंडी टेढ़ी कर उत्सुकता से मेरी तरफ देख रहा था। गिरे हुए कान, चमकदार आंखें, लंबी टांगें शायद डोबरमॅन होगा। उसने आत्मीयता से अपना पंजा उठाया। मरता क्या न करता, बैठकर उसका हाथ अपने हाथ में लिया। उधर चारू बाहर आते-आते चिल्ला रही थी, बाबा यह शेकहैंड बहुत अच्छा करता है, जाने कहाँ से सीखकर आया है। वह जब तक सामने आई तब तक कल्लू का

हाथ मेरे हाथ में था। वह पूरे उत्साह से पूंछ हिला रहा था और कह रहा था ''हैलो, डॉ. पाठक।''

उधर छोटू मेरी पीठ पर चढ़कर अपना अस्तित्व महसूस करवाने की कोशिश कर रहा था।

✦✦✦

समझदार श्यामू

चौड़ा माथा, चमकदार आंखे, भूरा बदन और कालिमा लिए पूँछ। एक कान बचपन की किसी चोट की वजह से टूटकर लटका, गिरा हुआ। वह उसे कुछ और रोचक बना रहा है। सुंदर जीव है। और समझदार भी।

कुछ महीनों पहले रामू उसे हमारी गली में लाया। वे दोनों रोज शाम को कुछ देर खेलते फिर वह अपने घर लौट जाता। एक दिन रामू ने उसे, जैसे बच्चे अपने दोस्त को मिलवाते हैं वैसे मुझसे मिलवाया। एक ही नजर में हम दोनों एक दूसरे को भा गए। दोस्ती बढ़ती गई। सुबह घूमने जाओ तो एक तरफ रामू होता और दूसरी तरफ वह। रोज का साथ बेनाम कैसे होता। बचपन में 'राम और श्याम' मूवी बड़ी प्रसिद्ध हुई थी। तो साहब ये रामू के साथी श्यामू हो गए। दोनों को इतना प्यार चाहिए होता है कि चलते-चलते भी आपसे सटकर चलना चाहेंगे। आपके पैरों में उलझेंगे। हर दसवें कदम पर चाहेंगे कि आप रूको उन्हें लाड़ करो फिर आगे बढ़ो। गली में यह लोगों के लिए रोज का मुफ्त तमाशा है। दोपहर को शामू अपने घर चले जाता। शाम को मेरे लौटने के पहले फिर हाजिर। उसे मालूम हो गया था कि मैं रात साढ़े दस, पौने ग्यारह के करीब लौटता हूँ। पता नहीं कहां से गाड़ी का हॉर्न सुन लेता और इसके पहले कि कोई दरवाजा खोलता, वह मेरे बाजू में हाजिर! मिलने की इतनी खुशी और उत्साह कि पूछिये मत। उचक-उचक कर परेशान कर देता। मैं खिड़की का कांच नीचे करूं इतना भी सब्र नहीं। पीछे-पीछे रामू भी कहीं से आ जाता और उनमें मुझसे मिलने की होड़ होती, जिसमें शामू ही जीतता। रामू बेचारा बाजू में, खड़े होकर पूँछ हिलाता रह जाता। मैं बीच-बीच में उसका माथा भी सहलाता। शामू को आगोश में लेकर उसकी गर्दन सहलाता। उसके कीचड़ से सने पंजे मेरी सफेद कमीज की बाँह पर होते। कभी-कभी उसमें काला रंग और नाली की 'सुगंध' भी होती। परंतु जब मैं उसका समाधान भरा चेहरा और बंद आंखे देखता तो गंदगी की तरफ ध्यान

नही जाता। उस समय ऐसा लगता कि काश घरवाले दरवाजा खोलने में और थोड़ी देरी करें तो यह मिलन की घडी थोडी लंबी खिंच जाए!

बीच में दो दिन शामू दिखा नहीं। चारू, बोली ''उसकी शायद आंख आई है, एक आंख लाल दिख रही थी।'' वह तकलीफ में था। खाना भी कम कर दिया था, दो दिन और निकल गए। मेरी चिंता बढ़ गई। वह सामने एक गाड़ी के नीचे लस्त पड़ा हुआ दिखा, बुलाया तो बड़ी मुश्किल से बाहर आया। आँख बुरी तरह से सूजी हुई थी। किसी ने बोला, इसे इतनी तकलीफ होती है कि लॉन में सिर घुसेड़कर अपनी आंख रगड़ता है। उससे स्थिति और बिगड़ रही थी। छूकर देखा तो उसे तेज बुखार था। मैंने चारू से कहा, ''यह तो गया।'' चारू ने मुझे फिर डॉटा, ''आप बड़ी जल्दी हिम्मत हार जाते हो और कड़वी बात बोल देते हो। देखे तो उसे है क्या?'' मैंने कहा, ''क्या देखना आँख पक गई है। पूरे शरीर में जहर फैल रहा है। चाहो तो दो चार दिन एण्टीबायोटिक खिला दो पर मुश्किल है।'' उसके कहने पर हमने उसे अंदर लिया, पानी गरम किया। मैंने अपनी गोद में उसका सिर रखा और रूई के नर्म फोहे से धीरे-धीरे आँख का मैल साफ किया। वह चुपचाप पड़ा रहा, शायद सिकाई उसे अच्छी लग रही थी। साफ करते-करते मुझे ऐसा लगा कि नीचे की तरफ रूई कहीं फँस रही है। तभी चारू बोली, ''बाबा देखिए नीचे की पलक के अंदर कुछ काला दिख रहा है।'' मैंने छूकर देखा तो कड़ा सा लगा। वह बोली ''उसे निकाल दो।'' पुराने जमाने में शल्य चिकित्सक खड़े रहते थे और ऑपरेशन उस्तरे से नाई लोग करते थे। वह 'बारबेरियन' एरा कहलाता है। चारू, सर्जन बनकर मेरे सिर पर खड़ी रही और मैं नाई जैसे ऑपरेशन करता रहा। मैने कहा रहने देते है उसे दर्द होगा। वह चिल्लाई, ''मैं कहती हूँ उसे निकालो''- वह जितना बाहर दिख रहा था उससे तिगुना अंदर धंसा हुआ था निकलते ही उससे खून निकलने लगा। मैं शामू की पीड़ा की कल्पना कर सकता हूँ। वह बिना सुन्न किए वाला ऑपरेशन था। उसके पैरों में हरकत होती रही, पर बेचारे ने सिर नहीं हिलाया। आपको विश्वास नहीं होगा वह एक गुपी हुई गिट्टी का टुकड़ा था। थोड़ा मलहम लगाकर और अच्छे से पोछकर हमने उसे छोड़ दिया। पट्टी बांधना संभव न था, क्योंकि उसे वह टिकने उसे नहीं देता। उसे हमने गर्म दूध पिलाया और आराम करने दिया।

वह ऑपरेशन करवाकर चुपचाप निकल गया। दिन भर मैं चिंता में था, शाम को लौटा तो भी वह नहीं दिखा। चारू ने बताया कहीं सो रहा होगा, वैसे आज से चल फिर रहा था। थोड़ा खाया भी। दो दिन बाद चारू बोली शामू ठीक हो गया। मेरे हर्ष का ठिकाना न रहा। मैने पूछा कैसे? वह बोली मेरे आवाज देते ही हमेशा की तरह पुलिया पर छलांग लगाते हुए आया। तभी मैं समझ गई कि वह ठीक हो गया। उसके बाद तो वह ऐसा और इतनी जल्दी सुधरा कि आप सोच नहीं सकते। तब से उसके मन में मेरे लिए प्यार के साथ भक्ति जुड़ गई। जैसे लोग गोविंदा के फैन होते है- वे यह नहीं सोचते कि किस डायरेक्टर के इशारे पर वह नाचा था, वैसे ही शामू को सिर्फ इतना ही समझ में आ रहा था कि यह बंदा फरिश्ता बनकर आया और इसने मेरी आंख और जान बचाई। उसे क्या मालूम कि मैंने यह ऑपरेशन चारू के निर्देशन में किया था खैर।

एक बार मैं और विभा, घूमने जा रहे थे, तब रास्ते में एक बड़ी हवेली बनती देखी। वहाँ चौकीदार के साथ शामू बैठा हुआ था। विभा बोली देखो- ''हम शामू के सामने कितने छोटे हैं। वह उसकी हवेली तो देखो। हम उसके सामने कहाँ लगते हैं।''

मैंने कहा, ''बात तो सही है, यहाँ जो जिस घर में रह रहा है वही उसका है। जब दुनिया छोड़ोगे तो घर तो साथ जाएगा नहीं। यह आपका तभी तक है जब तक आप हो।''

तब समझ में आया कि यह कहाँ से खाली प्लाट और नालियों को पार करता हुए रात को मुझसे मिलने आता है।

वह अक्सर दोपहर को सुकून से सोने के लिए आता है। उसे खाने से ज्यादा मतलब नहीं रहता। अंदर आएगा और हमारे कमरे में लद्द से गिरकर एक मिनट में सो जाएगा। ऐसी मीठी नींद कि आपको लगे थोड़ा टीव्ही धीमे करो, कहीं शामू की नींद टूट न जाए। शामू में हमें अपने प्लूटो की काफी झलक दिखती है। जर्मन शेफर्ड का क्रॉस होने से काफी वह बुद्धिमान है। दो दिन मैं किसी वजह से जल्दी आ गया। आश्चर्य की बात, साढ़े दस बजे होंगे। चारू ने बाहर से आवाज

सुनी बोली- बाबा शामू आपसे मिलने आया है। उसकी क्या गलती? डॉक्टर साहब से मिलने का समय तो साडे दस बजे का है न परंतु इसे यह कैसे पता चला कि साढ़े दस बजे हैं? गाड़ी की आवाज और हॉर्न से दौड़कर आना तो समझ में आता है पर यह क्या? इन्होंने कौन सी घड़ी पहनी है जो ठीक साढ़े दस बजे हाजिर हो गए।

उसे खाने-पीने में कोई रूचि न थी। आया, छाती पर चढ़कर जी भर कर मिला। संतुष्ट हुआ, पेट भर पानी पिया और चला गया। हम शायद ही किसी से बिना मतलब प्यार से मिलने जाते हैं।

मैं तो इस जीव से जितना ही जुड़ रहा हूँ उतना ही अपने आप को इनसे छोटा पाता हूँ।

मेरा दो वर्ष पूर्व की पित्त की थैली का गंभीर ऑपरेशन हुआ था। तब मेरी पत्नी ने मजाक में कहा ''अब तो तुम बार-बार ऑपरेशन करवाओगे। एक बार जिसका ऑपरेशन हो जाता है, उसका बार-बार होता है। मैंने उसे खूब कोसा, परंतु अपने प्रैक्टिस में उसे सही पाया।'' ऐसा ही कुछ श्यामू के साथ हो रहा है आँख से गिट्टी निकालने के बाद वह कुछ दिन तो ठीक रहा। फिर उसके दाहिने कान में सूजन उठने लगी। सूजन के पिलपिलापन था, मानो पानी भरा हो। मैंने ज्यादा ध्यान नहीं दिया। देखा तो १५-२० दिनों में वह कान वजन से लटकने लगा। वह अपनी मुंडी उस तरफ झुकाए रहता। ऐसा कोई दर्द या बुखार समझ में नहीं आ रहा था। जब वह ज्यादा ही हो गया तब घरवालों की जबर्दस्ती पर मुझे कुछ करने की इच्छा हुई। सबसे आसान था कि सुई से वह पानी खींच लिया जाए। उस दिन मैंने उसके थूथन को एक नाड़े से बांध, मुंडी पकड़ी और सीरिंज से लगभग ४० मि.ली. तरल खींच लिया। दिखने मे वह पतले खून जैसा था। मवाद नहीं था। जब खींचने का आखिरी दौर चल रहा था तब उसने एकाएक झटका दिया। मुझे तो बल्कि आश्चर्य लग रहा था कि वह अब तक इतना सहयोग कैसे कर रहा है? उसके झटका देते ही वह सुई मेरे बांये अंगूठे में घुस गई। अब डर के मारे मेरा बुरा हाल था। जानवर का खून, यह भी पता नहीं कि बीमारी कौन सी थी? दबा दबाकर अपना खून बहाया, स्पिरीट लगाई। साबुन से धोया। अपने

मन को समझाता रहा कि मैं एक अच्छा काम कर रहा था। भगवान मेरा कुछ नहीं बिगाड़ेगा आदि-आदि।

मेरे साले साहब वेटनरी सर्जन हैं- डॉ. अच्युत दीक्षित जी। उन्हे फोन किया- ''भैया डर लग रहा है। रैबीज वैगैरे के कीटाणु सिर्फ लार में ही होते हैं या खून में भी होते हैं? मुझे कुछ होगा तो नहीं। अच्युत बोला जीजाजी चिंता क्यूं करते है। हम लोगों को भी चोट लगते रहती है। यह सब तो चलता है।'' सुनकर बड़ी राहत मिली। ज्यादा अच्छा होता तभी फोन रख देता। आगे जो उसने कहा तब फोन रखने की जरूरत नहीं पड़ी, फोन हाथों से छूट ही गया। वह बोला ''ज्यादा न सोचो जीजाजी- वैसे भी संसार नश्वर है, जो आया सो जाएगा। अगली जिंदगी वैसे बेहतर ही मिलती है जीजाजी। मैं तो यही सोचता हूँ।'' मैंने उससे कहा ''भैया, अभी मेरा जाने का समय नहीं आया है-मुझे गीता न सुनाओ।'' ऐसे तो है हमारे साले साहब-खैर। दो चार दिन ऐसे ही निकल गए। देखते देखते श्यामू का कान फिर समोसा बन गया। बुरा लगता- क्योंकि जब देखो तब उसकी मुंडी बाँये तरफ झुकी रहती। पता नहीं कान के दर्द से, या उस वजन से उसे शायद अजीब लगता होगा। दो चार लोगों से पूछा। यह तो समझ आ गया था कि दोबारा सुई से खींचने पर मवाद बनने की उम्मीद बढ़ जाएगी। पूछा तो पता चला कि यह बीमारी इनको कीड़े काटने से होती है। अब तक हमें लग रहा था कि चोट लगी होगी और उसी का खून जमा हो रहा होगा। यह भी पूछा कि कुछ न करें तो क्या होगा वे लोग बोले- ''सर फिर पक जायेगा।'' मैंने कहा तब चीरा लगा देंगे तब उनका कहना था कि इनको कहीं भी इन्फेक्शन होता है तो बहुत जल्दी इल्लियाँ लग जाती हैं। यह सुनना ही भयावह था। कहने की जरूरत नहीं- हमने कहा, तब तो इसे तुरंत कर देना चाहिए। जिनसे बात कर रहा था वे एक होनहार वैटनरी सर्जन थे। दूसरे दिन आकर घर में ही ऑपरेशन कर देंगे, ऐसा वे बोले। उन्होनें कहा कि ''वे सारे औजार भाप में पकाकर आयेंगे। चिंता न करें। श्यामू दिख जाए तब मुझे फोन कर दीजियेगा।'' क्या पता श्यामू को एहसास हुआ कि क्या? वह दूसरे दिन भर गायब रहा।

तो साहब, मानो श्यामू को पता चल गया था कि अब डॉ. साहब के यहाँ जाने में खतरा है। वह उस दिन भर दिखा नहीं। डॉ. सत्येन्द्र के एक दो फोन आए, फिर बोले- ''आज रहने देते हैं। कल मैं दोपहर तीन बजे के करीब आऊंगा और उसका ऑपरेशन करके चले जाऊंगा।'' सुबह निकला तब तक आस-पास वह नहीं था। दोपहर की एक बजे के आस पास मैंने फोन किया तब विभा ने बोला कि वह ग्यारह बजे घूमने फिरने आया था, तब पकड़ लिया। वैसे तो उसे हम अंदर आने नहीं देते। उसे थोड़ा विचित्र जरूर लगा कि ऐसा स्वागत क्यों हो रहा है। बिना ज्यादा सोचे वह अंदर घुस गया। विभा ने उसे सीधे माधव के कमरे के अंदर लेकर बंद कर दिया। बोली- कूँ-कूँ कर रहा है। मैंने पूछा क्यों? उसे तो खुश होना चाहिए। वह बोली कि उसे भूखा प्यास जो रखा है। मैं हँसा, इतना सीनियर सर्जन होने के बाद भी भूल गया था कि ऑपरेशन तो ऑपरेशन होता है, चाहे इंसानों का हो फिर इनका। उसे ६ घंटे खाली पेट तो रखना ही पड़ेगा, नही तो उल्टी करने का खतरा हो जावेगा। जैसे हमारे मरीज इंतजार में परेशान होते हैं, वैसे डॉ. सत्येन्द्र ने भी श्यामू को डेढ़ घंटे इंतजार करवाया। इस बीच मेरी एक दो बार घर बात हुई। अब लिखने में कोई संकोच नहीं कि मैंने झूठ बोला कि व्यस्त हूँ चाहता तो घर जा सकता था, परंतु हिम्मत नहीं हुई। हर आधे पौने घंटे में फोन जरूर करता रहा। विभा ने बताया कि माधव के पढ़ाई के टेबल को खाली करके उसे श्यामू के लिए ऑपरेशन टेबल बनाया गया। डॉ. सत्येन्द्र और उनका सहयोगी सारा सामान पकाकर ले आये थे। उन्होंने श्यामू को बकायदा बेहोश किया। और फिर अच्छे से कान के बालों की शेविंग की तथा ऑपरेशन किया। उसके बारे में विस्तार में पूछा तब डॉ. सत्येन्द्र ने बताया कि ''सर इनके पिन्ना में चमड़ी के दो पर्तों के बीच सीरम भर जाता है। यह एक सामान्य बीमारी है जो कीड़े के काटने से होती है। अंदर इसमें एक झिल्ली बन जाती है जिसे हम क्यूरेट (खुरच कर) निकाल देते हैं। फिर चमड़ी के बीच-बीच में १५-२० टॉके लगा देते हैं, ताकि चमड़ी की दोनो पर्तं आपस में चिपक जाएँ। दुर्भाग्य की बात है कि यह दोबारा भी हो सकता है और ८० परसेंट तक दूसरे कान में भी होता है।'' बच्चे सिनसियरली ऑपरेशन कर रहे थे। मुझे अच्छा लगा। मैंने विभा से कहा-इसका ऑपरेशन करवाना अपना शौक था।

इससे जो डॉ. आए हैं उन्हें भुगतना न पड़े। उनको सेवा के बदले पूरा मान धन देना। ''मैंने डॉ. सत्येन्द्र से भी फोन पर भी कहा कि बेटा कोई संकोच नहीं करना।'' असल में, मैं चाहता था, पैसे की कोई बात नहीं, पर श्यामू का कान अच्छा हो जाए। जब रात को घर पहुंचा तब श्यामू बेचारा पट्टी में लिपटा पड़ा था। दर्द हो रहा होगा। परंतु बता नही सकता। कमरे में कैद उसे अजीब भी लग रहा होगा। टट्टी, पेशाब सब बंद। इस जीव का यह तो मानना पड़ेगा। पूरे चौबीस घंटे, बाद जब तक हम इसे बाहर नहीं ले गए, तब तक उसने घर में एक बार कहीं गंदगी नहीं करी।

दूसरे दिन जब भी उसे निवृत्त करने के लिए हमने घर के बाहर ले जाना चाहा तो वह बाहर आने को तैयार नहीं हो रहा था। किसी तरह खींचकर बाहर ले गए तो सड़क पर बिना हिले-डुले खड़ा रहा। जबर्दस्ती थोड़ी दूर ले गए। दो-तीन बार सू-सू करी। घर वापिस ले जाने लगे तो अंदर घुसने को तैयार न हो। बेचारा बड़े असमंजस की स्थिति में था। उसे कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि उसके साथ हो क्या रहा है?

श्यामू के साथी भी हम लोगों के साथ चलने लगते। श्यामू चेन से बंधा मेरे साथ, रहता और रामू, कल्लू हमारे चारों ओर चक्कर लगाते रहते। उसके साथियों को उसका ऐसे बंध जाना अच्छा नहीं लग रहा था, मानो बिंदास लड़कियों की टोली में किसी एक ने मंगलसूत्र पहन लिया हो। यह गले का पट्टा श्यामू का मंगलसूत्र ही तो था। वे उसके छेड़ते, यह क्या, दो रोटी के लिए किसी से हमेशा के लिए बंध जाना और रोटी तो वैसे भी मिल रही थी। क्या जरूरत थी शादी करने की? श्यामू खुद परेशान था। उन्हें क्या जबाब देता।

कोई हफ्ते भर यह तमाशा चला। उसने परिस्थिति के सामने खुद को समर्पित कर दिया था। चेन में बिना झटका दिये मेरे साथ चुपचाप चलता रहता। मैंने बच्चों से कहा, जैसे-जैसे इसका प्रतिरोध कम हो रहा है और व्यवहार पालतू श्वान की तरफ जा रहा है, मेरी चिंता बढ़ते जा रही है, क्योंकि फिर उसे उसी जंगल में वापिस लौटना है, यदि वह अपने अस्तित्व के लिए लड़ना भूल गया तो बच नहीं पाएगा।

एक तरफ यह डर था तो दूसरी तरफ टाँकों के खराब होने का, यदि जल्दी छोड़ते तब। १२-१३ दिनों बाद व्हेटनरी के डाक्टरों ने आकर उसके टांके निकाल दिये। अब वह बिल्कुल ठीक हो गया था। जैसे उसकी विदाई का समय पास आ रहा था वैसे मेरा दिल बैठता जाता। क्या मैं इतना समर्थ नहीं था? क्या फर्क पड़ता यदि वह हमेशा के लिए हमारे साथ ही रह जाता? परन्तु घरवालों की उस जिम्मेदारी के वहन करने की हिम्मत नहीं हो रही थी। खैर उसे खराब या अच्छा, क्या कहें, वह दिन आ ही गया। उस दिन रात को घर पहुंचा तो बाहर ले जाने के लिए जब चेन नहीं बांधी, तो उसे अजीब लग रहा था। चलिये उसने इस बात को ज्यादा तवज्जो न देकर मेरे साथ हो लिया। साथ में रामू और कल्लू को तो आना ही था। मुझे याद आया विभा के हाथ में जब पहली बार मोबाइल आया तो वह बात करते समय लैंड लाईन की आदत से मोबाईल पकड़कर एक जगह खड़ी रही। मैंने तब उससे कहा था, मैडम, इधर-उधर टहलते हुए भी बात कर सकती हो, उसमें कोई तार नहीं लगी। मुझे अभी भी अच्छे से याद है वह तब शरमायी थी और बच्चे आज तक उस बात पर उसकी हंसी उड़ाते हैं। यही हाल श्यामू का था। रामू, कल्लू हमारे चारों तरफ घूम रहे थे और वह चेन के न रहते हुए मुझसे चिपक कर चल रहा था। थोड़ी देर बाद उसे खुद की बेवकूफी समझ में आई और मुक्त हो गया। घर वापिस लौटे तो उसे बाहर रखते हुए दरवाजा बंद करना बड़ा दर्दनाक अनुभव था। लड़की को ससुराल भेजने जैसे, परंतु वही उसके लिए उचित था। उसे खाना अच्छे से मिले इस बात का हमने कुछ दिनों तक विशेष ध्यान दिया। ज्यादा से ज्यादा घर में भी रहने दिया। इससे वह और खुश हो गया, जी भरके घूमने का स्वातंत्र्य और खाने की कोई कमी नहीं, किसी को और क्या चाहिए? वह फिर बिंदास हो गया। उसके तलाक से उसके साथी बड़े खुश है और श्यामू, रामू, कल्लू और मैं हमारी जिंदगी फिर से सामान्य हो चली है।

✦✦✦

दो दिन का मेहमान, बंडू

जब भी घर लौटता हूँ तो शामू बगल में उचकता मिलता है। गाड़ी का कांच नीचे भी नहीं कर पाता उसके पहले कांच के परे उसका सुंदर चेहरा और चमकदार आंखें दिखती हैं। गाड़ी के सामने के दरवाजे का उसने अपने नाखूनों से सत्यानाश कर दिया है, खैर। कांच नीचे करके घर का कोई आकर दरवाजा खोले तब तक उसकी गर्दन और गला सहलाना, उसकी हालचाल पूछना एक नित्यकर्म बन गया है। उस दिन जब गाड़ी रोकी तो उम्मीद थी कि शामू बंद कांच के ऊपर पंजा मारने लगेगा।

देखा तो वह बाजू में चुपचाप शराफत से खड़ा है। विश्वास नहीं हुआ। फिर थोड़ा छोटा भी दिख रहा था। ठीक से नीचे झांककर देखा तो कोई और साहब खड़े थे।

उतने में बच्चे बाहर आ गए। उन्हें भी आश्चर्य हुआ, बोले – पापा, पता नहीं कैसे आपको देखकर पूँछ हिला रहा है। अभी तक तो सबको काटने के लिए दौड़ रहा था। भूरे रंग का नाटा और लम्बा, कसावदार देह। कोई तीन साल का होगा। देशी और अल्सेशियन का क्रॉस लग रहा था। काला मुंह, भूरी आंखें सुंदर परंतु खूंखार था। हालांकि बाहर कहीं से आया था पर हमारी गली के किसी भी श्वान को अपने पास नहीं आने दे रहा था। वे चारों पांचों गुर्राते हुए दूर खड़े थे। यह अकेला उन पर भारी पड़ रहा था। गले में पट्टा बंधा था। किसी का पालतू होगा। मालिक भी परेशान हो रहा होगा। मैं गाड़ी से उतरा तो मुझसे लिपट गया। सभी और आश्चर्य चकित हो गए। मुझे छोड़ने को तैयार न हो। मुसीबत घिरने लगी। कोई भी उसके पास जाने से डर रहा था। उसे बाहर करने की कोशिश करते तो वह दॉत निकाल कर गुर्राने लगता। मैंने कहा आज रात तो इसे यहीं रहने दो। खाना खिला देते हैं। गैरेज में ही सो लेगा। उसके लिए एक बोरा डाल दिया। बाजू में बर्तन में पानी भरकर रख दिया। सारी सेवा मुझे ही

करनी पड़ी। मेरे अलावा किसी और को पास न आने दे रहा था। मैं उसके पास आराम से चला जाता। मैंने कहा– ''हो सकता है इसको अपना मालिक मेरे जैसा दिखता हो।''

बच्चे बोले ''नहीं बाबा ये गंध से अपने घरवालों को खूब पहचानते है। सभी तो आपके पास आकर पूँछ हिलाने लगते है। '' धरमपत्नी बोली– ''एक ही जात है। मैंने कहा शादी के बाद जात बदली है खैर'' ...

किसी ने कहा आदमियों जैसे इनकी भी फोटो 'गुमशुदा की तलाश' कॉलम में अखबार में छपवाना चाहिए। उतने में विभा को याद आया दो दिन पहले के अखबार में शायद किसी श्वान के खोने समाचार का आया था। फिर क्या था– फटाफट हफ्ते भर की रद्दी निकाली गई, अखबार के ऑफिस में फोन किया पर सारी कोशिशें व्यर्थ गई। अखबार वालों ने फोन पर हमारी हंसी जरूर उड़ाई।

सुबह हुई तो मुझे उससे मिलने की इच्छा हुई। वह भी खुश हो गया। उसका व्यवहार ऐसा था मानो छुट्टियों में चार दिन चाचा के यहाँ आ गया हो। इस बीच मैंने 'भतीजे' का नाम भी रख दिया 'बंडू'। घरवालों से मैंने कहा– थोड़ा बंडू को घुमाकर लाता हूँ। बंडू को और क्या चाहिए। हम दोनों निकले। गली के लिए फिर कौतुहल का विषय था, दबी आवाज में कोई कह रहा था, शायद डॉ. साहब ने फिर से पाल लिया है। अच्छी ब्रीड का लगता है। पर इतना बड़ा कहाँ से उठा लाए? तो किसी ने ऊंची आवाज में बधाईयॉ भी दे डालीं। बाहर निकलता हूँ तो रोज रामू–शामू भी साथ चलते है। पीछे जूली रहती है। आज बंडू किसी को पास फटकने नहीं दे रहा था। सब मेरे पास आने को परेशान थे। पूरे रास्ते भर में लड़ाई मची रही और इस आर्केस्ट्रा से लोगों का मनोरंजन होता रहा। मुझे चिंता हो रही थी ऐसा कब तक चलेगा। बंडू के माँ–बाप मिल जाएँ तो मेरी जिम्मेदारी खत्म हो। फिर दिमाग में एक आयडिया आया, रोज अलग अलग दिशाओं में जाकर देखें, शायद बंडू अपनी गली और घर पहचान को ले। वापिस लौटा तो बंडू फिर गॅरेज में।

इस तरह दूसरा दिन शुरू हुआ। मेरी बैचेनी बढ़ती जा रही थी और बंडू सेट होता जा रहा था। उसने घर के बाकी लोगों से पहचान बनाना शुरू कर गुर्राना बंद कर दिया था। गली के बाकी भाई लोग भी उसके पास आकर उससे हॅलो करने लगे थे। सबने उसकी दादागिरी को स्वीकार कर लिया था। दूसरे दिन सुबह घूमने निकले तो पूरी बारात बिना बैंड बाजे के निकली। उनकी आपसी लड़ाई खत्म हो गई थी। आज हम दूसरी दिशा में गए, पर प्रयत्न निरर्थक थे। बंडू को भी हम लोगों का साथ अच्छा लगने लगा था, उसने अपना घर खोजने में रूचि दिखाना बंद कर दिया था। उसकी बैचेनी खत्म हो थी वापिस लौटे तो वही दृश्य- बंडू गॅरेज में और मैं बाहर काम पर।

दोपहर को वह विभा के पीछे दूर तक कहीं गया था। फिर घर वापिस नही लौटा। हम निश्चिंत हो गए कि चलो शायद उसका घर उसे मिल गया। आया तो था सिर्फ दो दिन के लिए पर दिल लग गया। गॅरेज का वह कोना, सूना सा लग रहा था। अपने मन को समझा लिया कि एक दिन में ही मुझे इतना खराब लग रहा है तो उसके घरवाले उसके लिए कितने बैचेन होंगे। चलो बिचारा अपने घर लौट गया।

सुबह अनमने मन से मैं अपनी पुरानी टोली के साथ घूमने निकला। रामू-शामू भी कम उत्साहित दिखे। तैयार होकर रोज की तरह काम पर निकला। हमारे घर से कोई पौन किलोमीटर पर एक हनुमान मंदिर है, जहाँ से रास्ता मेन रोड की तरफ मुड़ता है। वहाँ मुड़ने के लिए गाड़ी धीमी करी तो रास्ते के किनारे कुछ भाई लोग बैठे थे। शंका हुई, अरे यह तो बंडू है! मैं खुशी से उत्तेजित हो गया। बंडू ने भी मुझे पहचान लिया। लपककर मेरी तरफ आया और गाड़ी पर चढ़ गया। हम दोनों उत्तेजित थे। राम-भरत टाईप मिलन हुआ। सड़क पर लोग यह तमाशा देख रहे थे। वह मुझसे ऐसे लिपट रहा था मानो कितने सालों बाद मिला हो कूं-कूं करके मानो बता रहा था कि कैसे रास्ता भटक गया था और फिर रात यही मंदिर में काटनी पड़ी। अब मुझे घर ले चलो। मैं विचित्र मनःस्थिति में था। एक तरफ काम पर जाने की जल्दी। दूसरी तरफ यह लगा कि यहां भगवान की शरण में प्रसाद खाते पड़ा रहेगा, बाकी भाईयों के साथ अब इसे फिर से घर ले जाकर कौन अपनी जिम्मेदारी बढ़ा ले। प्लॅूटो के जाने की

टीस अभी ताजी था! इनके बिना रहा नहीं जाता, पर इन्हें गोद लेकर अब अपने साथ घर में रखने की हिम्मत भी नहीं होती।

मैंने अनमने मन से गाड़ी आगे बढ़ा दी। बंडू के लिए यह अपेक्षित न था वह रूआँसा होकर शिकायत भरे सुर में भौंकने लगा। तुम मुझे छोड़कर कहाँ जा रहे हो। बड़ी मुश्किल से तो भगवान ने तुम्हें मिलवाया है। मैंने भारी मन से एक्सिलेटर दबा दिया वह साथ-साथ दौड़ने लगा। मुड़कर जैसे ही मेन रोड आया मेरे गाड़ी की गति और बढ़ गई।

वह भी दौड़ रहा था- पूरी ताकत से। उसके लिए तो वह दौड़ जिंदगी की थी। कुछ आगे जाकर एक मोटर सायकल वाले ने मुझसे कहा, भैया आपका डॉगी आपके पीछे दौड़ते हुए आ रहा है। बीच-बीच में गाड़ी की दूसरी तरफ पंजे मारने की आवाज आती। उसके रोते रोते भौंकने की आवाज से मेरा कलेजा फटा जा रहा था पर बंडू गाड़ी से चिपकर पूरी ताकत से दौड़े जा रहा था गाडी कम से कम चालीस की गति से चल रही होगी। मैं बीच-बीच में आईने में पीछे देखता। आवाज कम हो गई थी और दिख भी नही रहा था लगा शायद थककर पीछा करना छोड दिया होगा। परंतु अगले चौक पर गाड़ी थोड़ी धीमी हुई तो उसे फिर अपने बगल में पाया। पसीने से नहा गया था, उसकी आंखों में आशा की किरण दिखी मैंने थोड़ी देर तक अपनी गति सामान्य रखी। वह मजे से गाड़ी के साथ बना रहा। मुझे उस पर दया आई, दो किलोमीटर हो चुके थे, बेचारा कहाँ तक मेरे साथ दौड़ेगा। क्यों न अपनी गति इतनी बढ़ा दूं कि मुझे गांठने की उसकी उम्मीद खत्म ही हो जाए। मेरी एक आंख सामने और दूसरी पीछे के आईने पर लगी रही। ओडोमीटर का कांटा पचपन पार कर रहा था। वह पीछे के शीशे में दिखा। वह मानो हवा में उड रहा था रोना बंद हो चुका था अब तो वह 'इस पार या उस पार' की ताकत लगाकर दौड़ रहा था। उस बेचारे की दम पचास की गति तक थी। वह धीरे धीरे पीछे छूटता जा रहा था। मेरा ऐक्सिलेटर दबता गया और दिल बैठता गया। एक बार इच्छा हुई कि गाडी रोकूं। बंडू को अपने बगल में बिठाकर वापिस घर ले जाऊं। घरवालों को बताऊँ- उसकी गति और उसके जीवट के बारे में गर्म दूध में ढेर सारी शक्कर डालकर

उसे प्यार से पिलाऊं और फिर वापिस अपने काम पर चला जाऊँ। मेरा घर इतना बड़ा है, दो–चार जीवों के लिए जगह न बना सकूं तो व्यर्थ है। घर तो बड़ा है बेशक, पर दिल इतना बड़ा न था। परन्तु इतना निष्ठुर भी न था। मेरी आँखें डबड़बाई और बंडू हौले से उस पानी के पीछे औझल हो गया। हौले से वह उस पानी के पीछे ओझल हो गया। जाने बेचारा किस गली में जाकर लगा होगा? निश्चित है कि उसे वहाँ के भाई लोग आसानी से स्वीकार न करेंगे, क्योंकि उनका दाना पानी बंटेगा।

दो दिन का प्यार देकर बंडू जिंदगी भर की कसक छोड़ गया। बंडू ही क्या, हम इतने स्वार्थी हो गये हैं कि ऐसे कई चाहनेवालों को, जिनका हमारे प्रति इक तरफा समर्पण होता है, पीछे छोड़ हम अपनी जिंदगी की गाड़ी बेरहमी से आगे दौड़ा देते है और वे हमारे पीछे रोते हुए दौड़ते रह जाते हैं .....!

✦✦✦

दगडू बिल्ला

परम श्रद्धेय नर्मदा परिक्रमा वासी श्री अमृतलाल वेगड़ जी को कौन नहीं जानता? उन्हे उनकी कृति 'अमृतस्य नर्मदा' के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। कुछ कृतियां ऐसी होती हैं जिससे पुरस्कृत का नहीं बल्कि पुरस्कार का सम्मान बढ़ जाता है। यह वह उदाहरण है। दादा ने जितना लिखा नहीं उससे ज्यादा जिया है।

मैं उनके पास इस कृति के लिए आशीर्वाद मांगने गया था।

वे बोले- मैं इस जीव से ज्यादा परिचित तो नहीं, परंतु तुम्हें एक किस्सा सुनाता हूँ। चाहो तो उसे लिख देना।

मैं जब पिछले नर्मदा परिक्रमा पर था तब हम लोग शाम ढलते एक आश्रम में रूके। वहाँ के बाबाजी ने हमारी खूब आवभगत की। रात को नर्मदा मैया की आरती के समय मैंने ध्यान दिया कि एक मटमैले, काले रंग का श्वान उन्हें छोड़ नही रहा था। जहाँ वे जाते उनके पीछे ही लेता। जहाँ रूकते वहीं उनके बाजू में आकर बैठ जाता।

मैंनें उत्सुकतावश उनसे पूछा, "आपका यह साथी कितने दिनों से आपके पास है?"

वे बोले- ३-४ वर्ष तो हो ही गये। जाने कहाँ से यहाँ आ गया।

मैंने कहा - आपका सबसे बड़ा भक्त तो यही दिख रहा है।

वे बोले- कुछ न पूछिये, छोड़ता ही नहीं। मेरे हाथ से ही खाएगा पीयेगा। उसे दूध बहुत पसंद है उससे भी ज्यादा मलाई। मलाई देखते ही होश खो बैठता है। खुशी के मारे नाचने लगता है।

हमारी बात चल ही रही थी, कि आरती का बुलावा आ गया। चलते-चलते बाबाजी ने बताया कि इसे दूध मलाई पसंद है इसलिए सब इसे बिल्ला बोलने लगे। काला पत्थर जैसा दिखता है इसलिए दगडू। ऐसे नामकरण हुआ दगडू बिल्ला। बात आई गयी हो गई।

सुबह उठकर हम अपने अगले पड़ाव की तरफ चल पड़े। कोई १०-१२ दिनों बाद जब हम उसी रास्ते से लौट रहे थे, वहीं फिर पडाव डालने की इच्छा हुई। बाबाजी कुछ दिनों के लिए बाहर गये हुए थे और एक दिन पहले ही लौटे थे।

उनके कमरे के बाहर हमने दगडू बिल्ले को एक कोने में पड़ा देखा।

वह इतना दुबला हो गया था कि हम उसे पहचान ही न पाए। उन्होंने हमें बताया कि ग्यारहवें दिन जब वे वापस लौटे तो दगडू बिल्ला सूखकर आधा मिला। उसकी पसलियां निकल आई थीं। इतने दिन वह एक कोने में पड़ा रहा। आश्रम के लोगों ने बताया कि बाबाजी के जाने के बाद उसने खाना-पीना छोड दिया था। यहां तक कि दूध मलाई भी न छुई।

मैं मग्न होकर वेगड़ दादा को सुनाता रहा। वे बोले- तो बेटा, ऐसा है यह जीव। इसके स्वामी-भक्ति की क्या कहें। दगडू बिल्ले ने मलाई की तरफ तक नहीं देखा।

लेकिन एक रोचक बात इस जीव को सही आँखें पर तो युधिष्ठिर में बैठाया। जब चयन की नौबत आई तब उन्होंने श्वान के बिना स्वर्ग के खुले द्वार में भी घुसने से ईन्कार कर दिया। वह भी मात्र एक आवारा श्वान था जो उनके साथ हो लिया था।

मैं सोच रहा था- सच। और दूसरी तरफ हम हैं कि अपने आप्तेष्ठ के हमेशा के लिए जाने के बाद भी तेरहवें दिन छक कर मिठाई खाते हैं। मैं उस परम्परा की निंदा नहीं कर रहा। परंतु उसे प्रसाद के रूप में भी तो ग्रहण किया जा सकता है। खैर।

मैं दादा के चरणस्पर्श करके उनसे विदा हुआ। उनका यह संस्मरण ही मेरी कृति के लिए आशीर्वाद बन गया।

लो, छपते-छपते आ गई मिनी

मिनि दरवाजे पर आशा भरी निगाहों से मेरी तरफ देख रही थी। पूँछ पूरी तरह से हरकत में थी। इतनी कि कमर तक हिल रही थी।

नाजुक चेहरा, भूरी व आमंत्रण देती हुई आंखे। मेरे पीछे विभा खड़ी थी।

मैंने पूरी ताकत से स्वयं को नियंत्रण में रखा था। तभी पीछे से आवाज आई एक बार तो उसके माथे पर हाथ फेर दो। फिर क्या था? मैंने प्यार से उसे सहलाया। यह था हमारा पहला स्पर्श। मैंने धीरे-धीरे से उससे कहा- मिनि, न चाहते हुए भी तुमने हमें जीत लिया, तुम हमारी हो गई। मुझे मालूम है कि शराब का यह पहला घूंट मुझे कहॉ ले जाने वाला है। इंसान तो रिश्ते बनने न दे, पर ये हिम्मत नहीं हारते। आपको अपना बनाकर ही छोड़ते हैं।

कुछ दिनों से मैं इसे श्यामू के साथ डेटिंग करते देख रहा था। रामू भी आस पास रहता था, पर उसकी निगाहों में यह होने वाली भाभी के रूप में थी। इस तिकड़ी को खुशी से घूमते देख हम डर गए। आगे क्या-क्या होने वाला है समझ में आ गया। अब तक हमारे तीनो बच्चे रामू, श्यामू और कल्लू परिवार का हिस्सा बन चुके थे। उनकी संख्या बढ़ने का कोई डर नही था, क्यों कि तीनों लड़के थे। अब यह जो स्थिति बन रही थी वह खतरनाक थी। मिनि दूर से ही दिखती, तो उसे कुछ खाने पीने को देना तो दूर की बात, हम सबने यही तय किया था कि इसे डराकर पत्थर फेंककर किसी तरह से अपने से दूर रखा जाए। हो सके तो यह गली में भी न रहे। परंतु जब वह दूर खड़ी होकर पूंछ हिलाकर प्यार की याचना करती तो अंदर से एक टीस उठने लगी। जाने कहाँ से बिछुड़ कर आई होगी। हम इसे क्यों मार कर भगा रहे हैं।

आखिर ये भी कहाँ जाएं। आप अपने घर के अंदर किसी को न आने दो वहाँ तक ठीक है, परन्तु इस जिद में क्या तुक है। कि कोई आपके घर के आस-पास भी न आए। कोई सड़क पर भी आपकी मन मर्जी से चले। गलत बात।

धीरे-धीरे हम कमजोर पड़ते गए और मिनि डरते-डरते हमारे पास आती गई। जब कभी श्यामू के साथ घूमती दिखती तो मैं विभा से ठिठोली करता कि हमारा लड़का वैसे बड़ा भी तो हो गया है। बल्कि शादी के हिसाब से थोड़ा ज्यादा ही वयस्क हो गया है। यह लड़की जो ईश्वर ने भेजी है मना मत करो। जोड़ी अच्छी है, एक सा रंग है जॉत भी एक ही है। यह भी अलसेशियन की क्रॉस दिख रही है। रंग व पूंछ की कालिमा तक एक सी है। तब वह खीझ कर मेरे ऊपर चिल्लाने लगती। तुम्हें मजाक सूझ रहा है। करना तो मुझे पड़ता है। खूब लड़िया लो जब छह घर के अंदर घुसकर धमा चौकड़ी करेंगे और गंदगी करते फिरेंगे तब सम्हालना मुझे ही पड़ेगा। तुम तो चल दोगे सुबह साढ़े सात बजे टाटा-बाय बाय करके कॉफी हाऊस। फिर मेरा झगड़ा होता। मेरे कॉफी हाऊस जाने की निंदा मत करो। तुम लोग भी तो घर में चाय पीते हो कि नहीं। तभी श्रीधर कहना मुझे मालूम है तुम लोगों का आपस का यह झगड़ा बनावटी है। तुम दोनों ने इनको अपने सिर चढ़ाया हुआ है। मुझे घर मे ंइनका घुसना और गंदगी करना बिल्कुल अच्छा नहीं लगता।

श्रीधर का व्यक्तित्व थोड़ा अलग तरह का है। वह दिखावें में विश्वास नहीं करता। यदि प्लूटो बीमार हो तब मन लगाा कर सेवा करेंगा, परन्तु जबरन को प्लूटो को गोद में लेकर घूमना उसने पसंद नहीं किया।

विभा बोलती मुझे कुछ मत बोलो। मुझे इन लोगों से कोई मतलब नहीं। लेकिन एक दिन विभा की चोरी पकड़ी गई। वह सब्जी ले रही थी। मैंने देखा कि दाहिने हाथ से लौकी भटा देख रही है और बायां हाथ नीचे मिनि के सिर पर था। ठंड का समय था। विभा शॉल ओढ़े थी। उसका पूरा हाथ दिख भी नहीं रहा था। मिनी के सिर तक शॉल लटकी हुई थी। और शॉल के अंदर ही अंदर वह मिनी के सिर पर

हाथ फेर रही थी। इधर मिनि की पूंछ ही क्या, पूरी कमर खुशी व उत्तेजना से हरकत में थी। उससे मेरा ध्यान गया। विभा ने अपने आपको बुध्दिमत्ता से सम्हाला। अरे यह तो मिनी है, मैं सोची श्यामू हैं। फिर बनावटी हट-हट करके वह उसे झिड़कारने लगी। मैं मुस्कुरा कर वहाँ से हट गया। जाते जाते सोच रहा था काश यह औरत इसका दस प्रतिशत भी प्यार मुझे दे देती तो मेरा विवाहित जीवन धन्य हो जाता। खैर।

एक बार मैं दरवाजा खुलने के इंतजार में गाड़ी में बैठा, खिड़की से हाथ निकाल कर श्यामू का माथा सहला रहा था। यह नित्यकर्म सा बन गया है। मुझे दूर से देखकर श्यामू रामू, कल्लू और अब मिनी चारों गाड़ी की तरफ दौड़ लगा देते हैं। बड़ी मुश्किल होती है।

व्ही.आई.पी. की गाड़ी को घेरे जैसे मोटर साईकिल पर गार्ड चलते हैं वैसे ही मेरी यह बारात निकलती है। मोहल्ले के लिए यह रोज का मनोरंजन है क्योंकि किसी का गली में ऐसे स्वागत नहीं होता, परंतु ये गाड़ी के नीचे न आ जाए इसका मुझे बहुत डर लगता है। सबकी जगह भी तय है। श्यामू अधिकार पूर्ण मेरी तरफ रहेगा। रामू सबसे सीनियर है इसलिए गाड़ी के आगे दौड़ता है कल्लू ने बॉयीं तरफ अपनी जगह बनाई है और मिनी पीछे रहती है। बारात के रूकते ही श्यामू को मेरे खिड़की से काँच के नीचे करने तक भी सब्र नहीं रहता। काँच नीचे सरकाते-सरकाते भी उस पर पंजे मारते रहता है। उसके नाखूनो के सामने दरवाजे की खरोचों से जिसको बंबई की हिन्दी में कहते हैं वाट लग गई है।

दो दिन पहले मेरे मित्र श्री दीपक अरोरा जी जिनकी मारूति की डीलरशिप है, बोले- डॉक्टर गाड़ी दे देना टचिंग करवा दूंगा। मैंने कहा इनके मोहब्बत की निशानों को ऐसे ही रहने दो।

वे बोले खरोंच को मोहब्बत की निशानी कैसे कह सकते हो। मैने कहा दीपक भैया एक किस्सा सुनाता हूँ, हिल जाओगे। एक व्यक्ति ने नई गाड़ी खरीदी। दूसरे दिन वह गॅरेज के बाहर गाड़ी निकाल रहा था तब देखा तो कई जगह ढेर सारी खरोंचे लगी थी उसने अपनी पत्नी से

पूछा यह क्या? कल ही शोरूम से गाड़ी उठाई है। पत्नी बोली घर में छोटे बच्चे है उन्होंने खरोंचा होगा इतना नाराज क्यों होते हो। टचिंग करवा लो। बच्चों को समझा देंगे। आगे से नहीं करेंगे। वह गुस्सैल था उसने आव देख न ताव बच्चों की खूब पिटाई कर दी। ऑफिस के रास्ते में गाड़ी गॅरेज में खड़ी करते हुए आगे निकल गया। लंच के समय उसे गॅरेज से बुलावा आया। सर टचिंग के पहले हमने सोचा शायद आप अपनी गाडी एक बार देखना चाहे। उसे कुछ समझ में नहीं आया। गया तो देखा बच्चों ने गाड़ी पर खुरच कर घर, बगीचा, बाऊन्ड्री वॉल, आम का पेड़, बनाया था उसके सामने माँ का उसका और सामने तीनों बच्चें ऐसा चित्र बनाया था। उसके नीचे 'वी लव यू पापा' लिखा था। वह आदमी इतनी आत्मग्लानी से भर गया कि उसने आत्महत्या कर ली। तो ये होती है मोहोब्बत की खरोंचें। यह सुनकर तो दीपक की आंखे भर आई। वह बोला, बस और आगे मत बोलो डॉक्टर।

तो साहब जैसे ही मैं काँच नीचे करके हाथ बाहर करता हूँ श्यामू उसके हाथ से लिपट जाता है, और फिर उसका माथा, गला सहलाना पड़ता है और वह आंखें बंद करके उसका आनंद लेता है। उस दिन मजेदार बात हुई। मेरी कोहनी के पास कुछ हरकत हुई, गुदगुदी सी लगी, देखा तो मिनी थी मेरे हाथ के नीचे से अपना सिर घुसेड़ चुकी थी। ''मानो खड़े हैं हम भी राह में'' जैसे। धीरे-धीरे मिनी हमारी जंदगी में घुसती चली गई।

जिंदगी फिर सामान्य हो चली। तभी एक दिन विभा से कहा सुनो मिनी का पेट फूला सा दिख रहा है। मैने कहा बधाई हो। नानी बन रही हो। अब एक दूसरे पर दोषारोपण का दौर खत्म हो चुका था। फिर आपस में कसम-वादे लिए गए कि बच्चों को बिल्कुल अपने पास नही आने देना, घर में घुसने नही देना, आदि आदि। खैर। दो तीन दिनों बाद ही घर लौटा तो खुशखबरी मिली। मिनी ने घर के पास एक उजाड़ पडे प्लॉट में झाड़ियों के अंदर बच्चे दिए हैं। मुझसे रहा नहीं गया। गाड़ी रख कर उसे देखने गया। वहां गंदगी की वजह से सुअरों का भी बसेरा था। देखा तो मिनी उनको और बाकी श्वानों को खदेड़ रही थी। इस हालत में ये बड़े खतरनाक हो जाते है। मुझे

वहाँ भी खड़े होने में थोडा डर लग रहा था। लेकिन मिनी मेरे पास आकर खड़ी हो गई। चेहरे पर कमजोरी भरी थी लेकिन आंखो की चमक पहले से दोगुनी ज्यादा हो गई थी। उसकी आंखों में एक उपलब्धी झलक रही कि देखो मैने दुनिया को क्या नायाब तोहफा दिया है। दुख यह हो रहा था कि प्रसव पीड़ा के बाद भी उन पिल्लों की सुरक्षा उसे ही करनी है। इस जानलेवा थकान के बाद वह एक झपकी भी नहीं ले सकती। मैं जब नाना बनूंगा तब चारू अपने पिल्ले को विभा के हाथों में देकर मीठी नींद में सो जाएगी। मिनी को न तो सोने को मिलना है और न ही खाने को। लेकिन यह ताकत भी हर जानवर को ईश्वर ही देता है। मैं वापिस घर लौटा और मिनी के लिए ब्रेड और अंडे ले आया। उसे अपने हाथों से खिलाना पड़ा क्योंकि खाना देखकर गली के बाकी भाई लोग भी घेर कर खड़े हो गए थे। खा-पी कर तृप्त हो कर मिनी अपने पिल्लों के पास चली गई और मैं अपने घर।

उस समय शीत लहर चल रही थी। इंसान की मानसिकता देखिए जब कुछ आसानी से मिलता है तब उसकी उसे कीमत नहीं रहती। कहाँ तो मिनी के बच्चे हमारे लिये बला बन जाएंगे ऐसा मैने सोचा था और कहाँ उनके कूं-कूं की आवाज सुनाई देना बंद हुई तब मुझे चिंता होने लगी। लगा, बेचारे ठंड में ठिठुर कर खत्म हो गए होंगे। मिनि से भी कई बार पूछा, पर वह क्या जबाब दे? मैं मन को यह समझा रहा था कि २०-२१ दिनों बाद ही इनके आंखें खुलती हैं और फिर इधर उधर घूमना होता है। फिर मिनी अपना अड्डा नहीं छोड रही थी इसलिए कुछ राहत सी थी तभी मुझे परसों खुशखबरी मिली, माधव ने कहा ''आज मिनि के बच्चे को देखा।'' मै खुश हो गया। विभा से पूछा, ''कैसा दिखता है?'' उसने कहा - श्यामू जैसा, बाप पर गया है। किसके जैसा दिखता है यह एक अनादिकाल से चला आ रहा नियत प्रश्न होता है। फिर उसने मजेदार बात बोली! बोला पिल्ला अड्डे के बाहर आ गया था और जैसे माँ बच्चे को झिड़कारती है, पिटाई लगाती है वैसे मिनि ने पिल्ले की ऐसी की तैसी करी। उसे अपने मुँह में उठाकर फिर से अड्डे पर पटका। वह कूं-कूं करता रहा। मिनि हमारे पास वापिस आकर खड़ी हो गई। देखा तो वह काफी कमजोर हो गई थी। उसकी पसलियां निकल आई थी। एक महीने पहले ही खूब स्वस्थ

व सुंदर दिखती थी। इससे साफ दिखा कि माँ कैसे अपने रक्त माँस व मज्जा से बच्चों को पालती है।

अब इंतजार है, कब मिनि के बच्चों को देखने मिलेगा, खिलाने मिलेगा शायद यह कृति आपके हाथ में आने के पहले मिनि के बारे में कुछ और आपको बता सकूं।

दो तीन दिनों से मिनि ने जहाँ बच्चे दिये वहाँ मै ध्यान दे रहा था, परन्तु वे झाड़ियों की आड़ में दिख नही रहे थे। आज सुबह सौभाग्य से वहाँ से निकला तो आश्चर्य-जनक नजारा देखने को मिला। मुश्किल से उन्हे पैदा हुए पच्चीस एक दिन हुए होंगे। आँखें कोई हफतेभर पहले खुली होंगी, परन्तु वे एक सूअर के बच्चे को खदेड़ रहे थे। भू... भू की आवाज बड़ी प्यारी थी। सामने हमारे मित्र श्री प्रदीप खरे रहते हैं। वे टाईगर खरे के पिता हैं। मैने उनको यह नजारा दिखाया और अपना आश्चर्य व्यक्त किया। उनकी प्रतिक्रिया ऐसी थी, मानो उन्हें यह अपेक्षित था। वे बोले-डॉक्टर साहब- डोबर मॅन के हैं ना।

मैने कहा- आपको कैसे पता फिर कुछ-कुछ मेरे समझ में आया। मैने उनसे पूछा ये टाईगर के बच्चे हैं क्या? उन्होंने शर्मा कर मुंडी से हामी भरी। मैने कहा तभी तो वे पूरे पाँच थे, बड़े प्यारे। एक मटमैले रंग का इतना गबदुल, कि चलते-चलते बार-बार लुढक जाता था। उसका पेट जमीन से टकरा रहा था, मानो मिनि का सारा दूध यह अकेले ही गटक जाता हो। एक काले मुँह का भूरा जो खूँखार दिखने का पोज मार रहा था। एक कल्लू पूरा काला स्याह लेकिन पूँछ का आखिरी एक इंच सफेद। दादा अवस्थी को वह दिखा भी, उसी सफेद नुक्की से- दादा को वह टिप नही रहा था। उतने में मेरे प्यार से बुलाने पर पूँछ हरकत में आ गई और फिर मैने दादा से कहा कि - ''देखिये वह छोटी सी सफेद चीज हिलती दिख रही है।'' दादा ने देख तो लिया पर बोले भैया लेकिन तुम जो मुझे दिखाने लाए वह पिल्ला तो काला है ना? और तुमने तो कहा था कि बडा खूँखार है। यह तो सफेद दिख रहा है और पूँछ भी हिला रहा है। मैं थोड़ा बेचैन हुआ। लगा, कल्लू इंटरव्यू में फेल हो गया। अजनबी को ऐसे पूँछ हिलाने से

कैसे चलेगा। मैने अपने आप को सम्हाला, मैं बोला, ''दादा अभी चार दिन पहले ही तो आँखें खोली हैं। आप यह तो देखिये कितना चंचल है।'' मेरी किस्मत कहिये– तब तक कल्लू के पूँछ की हरकत बंद हो गई थी। मैने दादा से कहा – हम एक काम करके देखते है। इससे इनका स्वभाव पता चलेगा। मुझे तो पूर्ण विश्वास था कि ये आक्रामक पिल्ले हैं। मैने धीरे से छू–छू करके दो चार बार आवाज निकाला। कल्लू एकाएक पलटा और पूरी ताकत से हमारी तरफ देखकर भौंकने लगा। हालांकि वह भौंक भी इतनी मीठी थी कि लगा उसे गोद में उठा लो – परन्तु मैं उसकी इज्जत रखने के लिये जरा पीछे हटा–तब उसे और जमकर भौंकने के लिये प्रेरणा मिली।

वाह रे उपर वाले–कैसे तूने चार दिन के पिल्ले को सिखा दिया कि यू–यू सुनो तो पूँछ हिलाओ और छू–छू से आक्रमण करो।

जैसे ही वह पलटा, दादा उसकी स्याह सुंदरता पर दीवाने हो गए। मुझे याद आया – कान्हा में शेर भी दूर से अपने कान के पीछे के चमकदार सफेद धब्बे से दिख जाता है। ऐसे ही कल्लू अपनी पूछँ की सफेदी से दिखता।

पहली ही नजर में दादा को कल्लू भा गया। वे नाली को कूद–काद कर झाडियों में घुसने लगे। मैं डर गया। मैने उनको रोकने की असफल कोशिश की– ''कहा, मिनि, आस पास होगी तो आपको काट खाएगी।'' बच्चो को बचाने के लिये ये बड़े खूँखार हो जाते हैं। कुछ ही रिश्तों को ये माफ करते है – जिन पर बहुत ही ज्यादा भरोसा है।

हमारे यहाँ जब प्लूटो ने बच्चे दिये तब मैं दिल्ली गया हुआ था। वापिस लौटने पर प्लूटो को अधीरता से मेरी प्रतिक्षा करते पाया। वह मुझे जबरदस्ती अपनी उपलब्धि के पास ले गई। मानो कह रही हो – देखो मैने कितने प्यारे बच्चे दिये हैं। अब तुम नाना बन गए हो। जब तक मैने एक एक बच्चे को उठाकर प्यार नहीं किया तब तक वह मेरे बाजू में खड़ी रही और के बाद ह उसका दिल भरा। परन्तु यह किस्सा कुछ और था। दादा जब झाड़ियों में घुसे थे तब मै सड़क

पर खड़ा रहा यदि मिनि आती है तब उसे रोकने के लिये। तभी दूर से मिनि ने मुझे देखा और दौड़कर मुझसें मिलने चली आई। उतने में गली के इस छोर तक टाईगर खरे सरपट दौड़ता हुआ निकल गया। दादा की मुंडी भी उसका पीछा करते हुए इधर से उधर हो गई। मैंने दादा के कान में धीरे से कहा – दादा कल्लू नया हो गया चंचंल क्यों न हो यह हवा से बातें करने वाला टाईगर ही तो उसका बाप है। दादा बोले, तो बस, अब सुबह आता ही हूँ। उनके हाव भाव से तो ऐसा लग रहा था कि कोई कल्लू को न ले जाए इस लिये कहीं रात को यही खटिया न तान दे। आपको लग रहा होगा कि यह प्रदीप खरे जी के बारे में बताते बताते दादा अवस्थी की एंट्री कैसे हो गई। असल में प्रदीप से इनके जन्म की कहानी सुनने के बाद मैं तुरन्त दादा के घर गया था। वे गली के मोड़ पर रहते हैं। मैं जाकर बोला–दादा आपका कल्लू नहीं, रहा आप बड़े दुखी रहते हो – वैसा ही एक और चाहिये क्या? फिर क्या था वे फटाक से मेरे पीछे बैठ गये और मैं उनको यहाँ ले आया। मैंने सोचा चलो एक की तो व्यवस्था हुई। अब बचे चार। मुझे चिंता इस लिये हो रही है क्योंकि इन पाँचों में यदि मैंने ध्यान नही दिया, इनको अच्छे घरों में नही बाँटा तो एकाध ही बच पाएगा। कोई नाली मे डूबेगा तो कोई गाड़ी के नीचे आएगा। और सबसे ज्यादा दुर्भाग्य की बात यह होती कि जो सबसे प्यारा और मजबूत होंता है वह सबसे पहले जाता है। आपको पढ़कर आश्चर्य होगा, परन्तु ऐसा इसलिये होता है क्योंकि वह सबसे पहले माँ के सुरक्षा कवच के बाहर निकल कर सड़क की तरफ दौड़ता है। जो कमजोर होता है वह काफी दिनों तक बाहर नहीं निकलता। अब देखते है–बाकी चार के लिये कौन जजमान मिलते हैं?

माँ तो माँ होती है चाहे विभा हो या फिर मिनि। अवस्थी दादा उस दिन कूद फांद कर मिनि के बच्चे को उठाकर ले तो आए, परन्तु मुझे चिन्ता भी, उसी गली में होने से मिनि इसकी क्या प्रतिक्रिया देती है। आश्चर्यजनक रुप से वह सामान्य बनी रही। बाद में उसकी हरकतोंसे समझ में आया कि वह कितनी होशियार थी। आते जाते उसने छोटू को देख लिया था कि वह अवस्थी जी के यहां है और सुरक्षित है।

चार छह दिनों बाद मैं वहाँ से निकला तो अपनी तारीफ करवाने, दादा के यहाँ रुका। वैसे ही जैसे पंडित शादी करवाने के बाद आते जाते जजमान के यहां रुक कर अपनी खातिर करवाता है- क्या बच्ची सुझाई पंडित जी आपने। हमारे घर में तो रौनक आ गई। बड़ी प्यारी व गुणी बहू है। छोटम मोटी सी रस्सी से बंधा प्यारी भौं-भौं कर रहा था। पूरा अवस्थी परिवार मेरे स्वागत में बाहर निकल आया । सब खुश थे। छोटू ने उनके गए हुए कल्लू की जगह ले ली थी। मुझे भी अच्छा लगा कि चलो इन्हें इनका कल्लू वापिस मिल गया और कल्लू को एक प्यार करने वाला परिवार। मैने दादा से पूछा ''क्यों दादा मिनी ने परेशान किया क्या? वे बोले ''बिल्कुल नहीं डाक्टर साहब, बल्कि वह तो रोज सुबह शाम इससे मिलने आती है।''

मैं विस्मय में था। वाह रे अकल।

दादा आगे बोले- दो दिन पहले एक मजेदार बात हुई डॉक्टर साहब- ''पहले छोटू एक सुतली से बंधा था। मिनी ने उसे खूंटे से काटकर अलग किया और छोटू को रस्सी पकड़कर गली में घुमा लाई। मिनी से सोचा होगा कि तू एक जगह बोर हो रहा है चल घुमा लाती हूं। रास्ते चलते लोगों के लिए वह एक अविस्मरणीय दृश्य होगा। लोगों को चेन से बंधे श्वानों के साथ देखना तो सामान्य बात है परन्तु एक बड़ा श्वान छोटे पिल्ले को मुँह में रस्सी पकड़ कर घुमाते देखना कितना रोचक व हास्यास्पद होगा? कोई उसकी शूटिंग करता तो वह दुनिया के सबसे रोचक विडियोज में शामिल हो जाता। उसके बाद यह भी नही कि कहीं भी छोड़ दिया हो। मिनी ने बकायदा घंटे भर बाद छोटू को दादा के यहाँ वापिस पहुंचा दिया।

अधिक अकलमंद होना कभी-कभी घातक भी होता है। आगे की कहानी थोड़ी दर्दनाक है। लड़की को ससुराल भेजने के बाद उसके जिंदगी में जरुरत से ज्यादा हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। मिनी ने वहीं गलती की। उसे लगा छोटू ब्राम्हण के घर में पल रहा है- दाल रोटी के अलावा इसे अच्छा पौष्टिक खिलाओ तो उसकी बाढ़ अच्छी होगी। मिनी कहीं-कहीं से शिकार करके छोटू के लिए माँस के टुकड़े लाने लगी। जब तक वह थोड़ा सा लाती और छोटू गपक जाता तब तक

इन्हें पता भी न चलता। परंतु फिर माँ तो माँ– फिर चाहे विभा हो या मिनी। बच्चा जब तक थाली में छोड़ न दे या फिर उसके मुँह में ठूंसते–ठूंसते वह ओंकने न लगे जब तक माँ को लगता नही कि बच्चे को खिलाया। मिनी जब ज्यादा बड़े टुकड़े लाने और लगी और छोटू की थाली में नॉन व्हेज बचने लगा तब अवस्थी परिवार हुआ। गेट खुला रहता। मिनी कब आकर छोटू को परोस जाती पता ही न चलता। पूजा पाठ वाला परिवार, कभी अंडा भी न छुआ, यह तो झेलना मुश्किल था।

वह परिवार मिनी के वात्सल्य की वजह से परेशान होने लगा। एक दिन तो अत्त हो गई। यह लिखते समय भी मुझे विचित्र लग रहा है। दादा बोले ''डॉक्टर साहब वह किसी जानवर की मुंडी छोड़ गई अब बताइये हम कहाँ तक झेले? आखिर छोटू को कहीं दूर छोड़ कर आ गए।''

मुझे बहुत दुःख हुआ। पंरतु वह परिवार और करता भी क्या?

कुछ दिनों बाद वहाँ से निकला तो छोटू एक आवारा श्वान की पहचान लिए दादा के गेट के बाहर बैठा मिला। और खराब लगा। कितना फर्क हो जाता है गेट के इस तरह और उस तरफ में।

उस पिल्ले के नियति के लिए मैं बेबस हूँ।

कुछ दिनों बाद मिनी काफी बीमार पड़ी। जब दो दिनों तक दिखी नही तो मैंने विभा से डरते–डरते पूछा– मिनी दिख नहीं रही। शंका सही निकली। बोली उसको शायद उल्टी दस्त हुए थे तीन दिन पहले मुझसे मिलने आई थी। चेहरा उतरा हुआ था। उसके बाद से वह कभी नहीं दिखी। मुझे आपको बताने की हिम्मत नहीं हुई।

इनका करें तो क्या?

ये आवारा जीव बड़ी समस्या है। इस अशिक्षित व गरीब देश में जहाँ हमारे खाने के लिए पैसा नहीं है वहाँ इनके टीकाकरण की व्यवस्था कौन करे, इनके काटने से लोगों को रेबीज होता है इसलिये कॉरपोरेशन इन्हें मिठाई में जहर मिलाकर खत्म करती है। बहुत दुख होता है। सबसे अच्छा उपाय शायद इनका बंधीकरण है।

एक संस्था है, जिनकी टीम दिन में ४५० बंधीकरण करती है। आवश्यकता है ऐसी अधिक से अधिक संस्थाऐं बनें। मैंने हमेशा यह कल्पना की कि ऑपरेशन एक मुश्किल काम है परंतु क्या इन्हें ऐसा कुछ खिलाया नहीं जा सकता कि इन्हें बच्चे पैदा होना बंद हो जाए। मैंने कई आयुर्वेदिक विशेषज्ञों से असफल चर्चा की है। मेरा पूर्ण विश्वास है कि कोई ऐसी चमत्कारी जड़ी जरूर मिलेगी जिससे यह काम हो पाएगा।

तब तक कम से कम हम जो हमारे आसपास हैं उनको हम गोद ले सकते हैं या खिला-पिला सकते हैं। विश्वास करिए इसमें ज्यादा खर्च नही आता। यदि आप एक पिक्चर न देखे तो उसके बदले आप एक जीव को महीने भर खिला सकते हो।

यदि इनमें कोई बीमार दिखे तो ऐसी संस्था होनी चाहिए जो इनका यथा संभव इलाज करवाए या फिर यदि बीमारी लाईलाज हो तब पीड़ा रहित मृत्यु दे। फिर बहुत वेदना होती है जब गाँव वाले पागल कुत्तों को पत्थर मार-मारकर खत्म करते हैं। उनकी भी कोई गलती नही क्योंकि उन्हें अपने बच्चों की जिंदगी असुरक्षित दिखती है। यहॉ तो इन्सान की कीमत नहीं है, तो जानवर और वह भी आवारा, उसे कौन पूछेगा?

मैं ''मारले एण्ड मी'' श्री ग्रोगन की किताब पढ़ रह था वहाँ यदि श्वान बहुत ज्यादा उम्र में किसी ऐसी बीमारी से ग्रसित हो जाए जो कि लाइलाज हो तब उसे हमेशा के लिए सुला देते हैं। (इसे लेट पुट हिम टू स्लीप कहते है) जब श्री ग्रोगन मारले को आखिरी समय डॉक्टर के पास ले गए तब उसे लकवा लग चुका था और अर्ध बेहोशी में था। उम्र ज्यादा होने से वह कई हफ्तों से बहुत पीड़ा में था। डॉक्टर ने श्री ग्रोगन की तरफ गहरी नजरों से देखा। वे समझ गए। उन्हों कहा जैसा आप ठीक समझे। वे बोले-डॉक्टर क्या आप हमें दो मिनट अकेले छोड़ सकते हैं? डॉक्टर के जाने के बाद श्री ग्रोगन मारले से लिपट कर खूब रोए और उसके कान में बोले, अंत में मैं तुम्हें यह कहना चाहता हूं कि तुम एक शानदार जीव थे और हम तुम्हें कभी न भूल पाऐंगे। वह पढ़ते समय मैं रोया था ओर यह लिखते समय भी मेरी

ऑख नम है। डॉक्टर साहब, ने धीरे से श्री ग्रोगन का कंधा थपथपा कर उन्हें अलग किया और मारले को मीठी नींद का इंजेक्शन देकर उसे हमेशा के लिए सुला दिया। ग्रोगन साहब उसे लपेटकर इज्जत से घर ले गए और उसका अंतिम संस्कार किया।

मैं नमन करता हूँ उन लोगों को जिनके मन में जानवरों के लिए भी यह प्रेम और आदर की भावना है। शायद हम थोड़े और शिक्षित हो जाऐं और जनसंख्या काबू में आ जाए, तब हम भूख से ऊपर उठेंगे और इन मापदंडों की कल्पना कर पायेंगे।

✦✦✦

अद्भुत जीव, अद्भुत रिश्ता

मेरे मित्र हैं- श्री प्रवीण मेबेन। वे एक स्कूल चलाते हैं। बेटी शादी के बाद ऑस्ट्रेलिया चली गई। ये अकेले रह गए। ये जहाँ रहते हैं वह इलाका सूनसान है और आए दिन वारदातें होती रहती हैं। उनकी सुरक्षा के लिए उनके कोई कर्नल मित्र ने उन्हें एक रॉट व्हायलर पालने की सलाह दी। प्रवीण के परिवार वाले इस फैसले के विरूद्ध थे, क्योंकि सबने रॉट व्हायलर के भयानक किस्से सुन रखे थे। वे न माने। एक दिन फोन आया, ''डॉक्टर आ जाओ तुम्हारे लिए एक सरप्राईज है।'' मैं समझ गया, पक्का प्रवीण ने जो नहीं करना चाहिए था, वही कर बैठा है। उसके घर पहुंचा तो उनके चेहरे की चमक देखते बनती थी। अंदर गया तो एक डलिया में नन्हा मेहमान बैठा था। मैंने तुरंत फोन करके चारू और विभा को भी बुला लिया। पता चला, महाशय चेकोस्लोवाकिया से मद्रास आए हैं, जहाँ उनको हवाई अड्डे पर रिसीव्ह करने यहाँ से प्रवीण की टोयोटा कोरोला गई थी। किस्मत हो तो ऐसी।

प्रवीण ने उसका नाम टॉफी रखा था। हमने उसको तुरंत डलिया से उठा लिया। चारू बोली बाबा ये तो बिलकुल टेडी बियर लग रहा है। कहने को सिर्फ सतरह दिनों का था, पर वजन आठ किलो हो गया था। भालू के पिल्ले जैसा गबदुल। बड़े-बड़े पंजे, परन्तु चेहरे पर भोलापन।

मैंने पूछा प्रवीण, इसे क्या खिलाते हो?

वह बोला ''मत पूछिए- इसका खाना भी बाहर से आता है। इनके लिए अलग तरह के बिस्कुट बने हैं जो दिन भर में साढ़े चार सौ ग्राम देते है। उससे ज्यादा नहीं। अपनी दाल रोटी इस ब्रीड को नहीं चलती। रॉट व्हायलर के स्वभाव के बारे में उसने आगे बताया कि यह ब्रीड अत्याधिक खूंखार होती है। यूरोप और दुनिया के कई देशों में तो इन्हें पालना प्रतिबंधित है। इन्हें दिन भर अंधेरे में, इनके लिए बनवाए हुए लकड़ी के खास पिंजरे में रखा जाता है। दिन भर यह किसी को देख नहीं पाता। अपने मालिक को सिर्फ उसके पदचाप

से पहचानता है। वह भी, यदि मालिक नियमित सम्पर्क में रहा हो तो। वर्ना सिर्फ अपने ट्रेनर को ही जानता है। रात को इसे खुला छोड़ देते हैं। फिर क्या मजाल जो कोई अपरिचित आपके घर में घुस जाए। खतरनाक बात तो यह भी है कि यह पूर्व सूचना नहीं देता। सीधे लपककर आपकी बोटी अलग करता है। काटना तो छोटी बात है। यह आपके शरीर का जो हिस्सा इसके मुंह में आता है, उसे अलग ही कर देता है।''

प्रवीण उत्साह से बताये जा रहा था और मैं दहशत से सुनते, क्योंकि टॉफी मेरी ही गोद में था। मैंने प्रवीण से कहा कि– ''क्या यह सब जब टाफी मेरे पास न हो तब सुनाओ तो ज्यादा अच्छा नही होगा?'' टॉफी भोलेपन से अपनी तारीफ सुनकर कभी प्रवीण तो कभी मेरी तरफ देख रहा था।

मैं प्रवीण से बोला ''उस दिन पेपर में विज्ञापन पढ़ा था – पंदरह दिनों में अपना छह किलो वजन कम करावाईये। तुम तो इसे बिजिनेस बना सकते हो। हमारे यहाँ आइये और पंदरह मिनट में चाहे जितने किलो कम करावाइए। बड़े घर के औरतों की तुम्हारे यहाँ लाईन लग जाएगी। एक नर्स को साथ रख लेना। एक कमरे को ऑपरेशन थियेटर बना लेना। उनसे इतना ही कहना कि जो हिस्सा या टायर फालतू लगे उसे टॉफी के सामने कर देना। पंदरह बीस मिनट में जितना चाहो कम करवा लो।''

प्रवीण हँसने लगा। बोला, ''डॉक्टर तुम्हारा दिमाग अलग ही ढंग से चलता है।''

मैंने कहा– ''मेरे दिमाग की तो छोड़ लेकिन इस खूंखार का नाम टॉफी रखने का तुम्हें किसने सुझाव दिया?''

टॉफी ने गर्दन टेढ़ी करके मेरी ओर देखा।

मैंने कहा ''फिलहाल तो तू वाकई में मीठा है।''

इस रिश्ते को वही समझ सकते हैं जो इनके दीवाने है। बच्चों का क्या लाड़ होगा जो इनका होता है। इनके खाने तक के नखरे देखते बनते हैं।

,d Fkk lyVks-

मैं एक बार हमारे वरिष्ठ सर्जन डॉ. गिरीश पाठक जी के यहाँ बैठा था। उनका एक पॉमेरियन बेटा है- मून।

भाभी ने मेरे लिए पोहे बनाए। मैंने पूछा, भाभी मून भी खाएगा क्या? वे बोली ''गधा सब खाता है, लेकिन नखरे बहुत हैं।''

मैंने पूछा- कैसे? वे बोली - "देखते जाओ"।

उन्होंने मुझे और डॉ. पाठक सर को पोहे परोसे। हम दोनों शुरू हो गए।

वे हँसी। बोली ''यही तो फर्क है तुममे और मून में। तुम्हें दिया और तुम तुरंत खाने में जुट गए। यह भी नहीं देखा कि उस पर सेव डाली या नही? साथ में नीबू का टुकड़ा है कि नहीं? यदि सेव नही थी तो माँग भी सकते थे। अब यहाँ मजा देखा" उन्होंने मून को भी पोहे परोसे। वह हिला तक नहीं। एक बार वह ऊपर देखे, फिर नीचे अपने प्लेट की तरफ।

भाभी बोली - ''देखो वह सेव मांग रहा है।'' मुझे मून की हरकतों पर रूचि आने लगी थी। मेरा खाना रुक गया। भाभी आगे बोली- ''अभी देखो सेव कम डालूंगी तो भी नहीं खाएगा।'' अब तो मेरे बेहोश होने की बारी थी।

मैंने कहा - ''कुछ भी बोलती हो भाभी आप यहा तो अति हो गई।'' परंतु हुआ वही। मून का एक बार अपनी प्लेट की तरफ और एक बार भाभी के हाथ में पकड़े सेव के डब्बे की तरफ देखना जारी था। भाभी ने कहा- ''देखो भाई साहब ये और सेव माँग रहा है। जब तक और सेव नहीं डालूंगी, नही खाएगा। वाकई में मून ने पोहे तभी खाए जब भाभी ने और सेव डाले।

भाभी ने कहा- ''ये कोई डॉ. पाठक थोडे ही है जो कैसे भी दो तो खा लेंगे और जबरन को यह भी कहेंगे कि भाभी बहुत अच्छा बना है- भले उसमें नमक तक न डला हो।

मुझे बरबस प्लूटो की याद आ गई। आप जिस बर्तन से खिलाओ, पहले वह उसे गर्दन उठाकर देखता था, और फिर उसकी नजरें आपके हाथों को पीछा करती हुई अपने थाली में आती थी, मानो आंकलन करता हो कि देखूं तो, क्या खिला रहे हो और कितने दिनों का बासा है, उस डिब्बे में रखा हुआ। हमारे प्लूटो के नखरे भी कम न थे अपने हाथ से न खिलाओ तो कहो दो दिन भूखा रह जाए पर रोटी को मुंह भी न लगाएं।

हमारे सहयोगी है डॉ बोस। उन्होंने अपने पिल्ले की मजा सुनाई। वे बोले, यहाँ तो तवे की उतरी गर्म रोटी चाहिए। रोटी बनाने की शुरूआत वह खूब समझता है। चाहे पटे बेलन की आवाज से हो या फिर रोटी की सोंधी खुशबू से, वह हल्ला मचाने लगता है। पहले उसे भोग लगाना पड़ता है, फिर बाकी घरवालों के लिए रोटियाँ बनती है।

हमारे एक और मित्र है थारवानी जी। उनके पॉमेरियन को आदत पड़ गई, धूप का काला चश्मा और टोपी पहन कर घूमने निकलने की। मैं जब उनके यहाँ गया था उन दिनों हम आपके है कौन? पिक्चर की खूब धूम थी। उसमें एक पॉमेरियन श्वान टोपी व चश्मा पहनता है। थारवानी जी के बच्चों को चुहल सूझी और इन्हें चश्मा टोपी पहना दिया। पहले इसने झटककर निकाल दिया, परंतु फिर उसके समझ में आया कि इसका विरोध न करो तो घूमने जाने को मिलता है। वह बिना शिकायत चश्मा पहनने लगा। बाद में चश्मे की ठंडक से उसे मजा आने लगा। अब तो जब तक उसे काला चश्मा न पहनाओ वह घूमने ही नहीं जाता। और तो और वह खुद ही चेन पट्टा और काला चश्मा उठाकर ले आएगा और कहेगा चलो ले चलो घुमाने ।

हमारे मित्र हैं कर्नल हेमन्त सक्सेना साहब। उनका बेटा एक तिब्बत का पॉमेरियन है। नाम फ्रॉस्ट। खूब सुंदर है। मैं दिल्ली गया था तो पहली मुलाकात में ही मैं उसे पसंद आ गया था और वह मुझे। वह मेरे ऊपर क्यों नहीं भौंका इसका कर्नल साहब को भी आश्चर्य हुआ। इनकी धर्मपत्नी भी नौकरी पर जाती है। बच्चे भी स्कूल जाते हैं तो सुबह फ्रॉस्टी अकेला रह जाता है। उस स्थिति को वह स्वीकार कर लेता है कि सुबह सबको अपने अपने काम पर जाना जरूरी है।

लेकिन शाम को वह अनुमति नहीं देता। मेरी बच्ची का ऑल इंडिया पी. जी. में चयन हुआ, तो मुझे सबको पार्टी देने की इच्छा हुई। शाम के छह साढ़े छह बजे होंगे। मैं और हेमंत चाय पी रहे थे और कहाँ जाया जाए यह योजना बना रहे थे। मैंने कहा– ''हेमंत सेलिब्रेशन में तो मजा है लेकिन मुझे अखर रहा है कि फ्रॉस्टी को अकेले छोड़ कर जाना पडेगा।'' तब हेमंत ने फ्रॉस्टी की मानसिकता बताईं मुझे भी उसकी समझदारी पर आश्चर्य हुआ। जब हमें तैयार होते देखा तो वह बैचेन हो गया वह समझ गया कि ये लोग मुझे छोड़कर कहीं बाहर जा रहे है। इनका प्यार और भक्ति अद्‌भुत होती है। हेमंत ने कहा कि ''फ्रॉस्टी उसको छोड़ता ही नहीं। सोने के लिए कमरा बदला तो भी रहेगा उसी के साथ।''

खाली पास रहने से ही ये संतुष्ट नहीं होते। ये तो चाहते हैं कि ये आपसे सटे रहें। आप अपना पैर इनके ऊपर टिकाए रहो।

चारू तो प्लूटो पर किताब रख कर घंटों पढ़ते रहती थी। यहाँ तक कि उसका लोड की तरह उपयोग करके सो भी जाती थी। क्या मजाल है कि वह हिलकर उसको डिस्टर्ब करे। जब उसे चारू से थोड़ी छुट्‌टी मिलती, तो बाहर दौड़ लगाता निवृत्त होने के लिए।

इनकी स्वामी भक्ति तो हम अनादिकाल से प्रसिध्द है। युधिष्ठिर का श्वान ही तो था जो उसके साथ अंत तक गया। स्वामी को कुछ हो जाये या वह इन्हें छोड़कर चला जाये, तो ये दाना–पानी तक छोड़ देते हैं। हम प्लूटो को व्हेटनरी कॉलेज इलाज के लिए ले गए थे तब, बगल वाले टेबुल पर एक प्यारे से पॉमेरियन को ग्लूकोज की बोतल चढ़ी हुई थी। उसका पैर पकड़कर एक सज्जन बैठे हुए थे। उन्होंने मुझसे कहा "जरा प्लीज इसे देखिए मैं अभी आया।" वे जैसे ही उठे इस जीव ने अपना कमजोर चेहरा उठाया और उनकी तरफ ऐसी नजरों से देखा मानो कह रहा हो कहाँ जा रहे हो मुझे छोड़कर? जब वे फिर बैठ गए तो वह निश्चिंत होकर सो गया।

वे बोले – ''क्या बताएँ भाई साहब हम सिर्फ तीन दिनों के लिए बाहर गए थे। पड़ोसियों को इसकी सब खाने पीने का समझाकर

और व्यवस्था करके गए थे। वे अच्छे लोग हैं पर इसके जिद्द के आगे उनकी एक न चली। इसने तीन दिन पानी तक नहीं पिया और देखिए इस हालत तक पहुंच गया। हम इसे जानवर क्या कहें इन्सान तक इतने भावुक नहीं होते।''

उनकी बातें सुनते हुए मुझे एक घटना याद आ गई। मेरे एक परिचित की अम्मा लम्बे समय से बीमार थीं। घर की दिनचर्या में उससे कोई फर्क नही पड़ रहा था।

एक कोने में उनका कमरा था। सम्पन्न परिवार था। तीन चार दिनों में एक बार डॉक्टर आकर देख जाता। सेवा सुश्रुषा के लिए नर्स लगी हुई थी। उस दिन सुबह मैं किसी काम से उनके यहाँ गया था। थोड़ी ही देर पहले डॉक्टर साहब आकर गए थे। अम्मा की साँस फूल रही थी। वे बताकर गए थे कि अब ज्यादा उम्मीद नहीं बची। कुछ ही घंटों की मेहमान लग रही है। मेरा मन उदास हो गया। लगा इनके सिर से माँ का साया उठ रहा है जिसने जन्म दिया, पता नहीं कितनी तकलीफें सहकर पाला पोसा, घर को पनपाकर इस स्थिति तक लाया वह अब जा रही है। इन्हें अपनी संवेदना कैसे व्यक्त करूं समझ में नहीं आ रहा था। परंतु दूसरी तरफ मुझे यह भी आश्चर्य लग रहा था कि घर का वातावरण तो बिल्कुल ही गमगीन नहीं लग रहा। बच्चे रोज की तरह स्कूल चले गए।

मेरे मित्र भी अपनी दुकान खोलने के लिए जा रहे थे। अम्मा का जाना इतना सहजता से किया जा रहा था, मानों दो पांच दिनों के लिए किसी तीर्थ यात्रा पर जा रही हो। चाय-पान के बाद वे मुझे बाहर छोड़ने के लिए उठे। उतने में उनकी धर्म पत्नी बैठक में आई और उनसे पूछा कि अब कैसे क्या करना है। इतनी सहजता से, मानो पूछ रही हो कि अम्मा को स्टेशन छोड़ने कौन जाएगा। मेरे मित्र ने कहा अम्मा का तो कोई भरोसा नहीं तुम तो जल्दी से खाना वाना बनाकर निपट लो तो अच्छा रहेगा। मुझे काटो तो खून नहीं! मैं सोच रहा था कि जन्म-दात्री माँ जा रही है- हमेशा के लिए, और इस परिवार को खाने की सूझ रही है।

तो साहब यह है हमारी मानुस जात।

ये अपनी मर्जी के मालिक होते हैं। चाहे खाना पीना हो या घूमना फिरना मूड न हो तो आप इन्हें घर के बाहर नहीं निकाल सकते। बाहर निकल कर भी दिशा और दूरी ये ही तय करेंगे। कहाँ किस साथी से हैलो करना, किस खंबे को उपकृत करना सब ये खुद ही तय करते हैं जनाब।

आपकी छाती पर चढ़ जायेंगे। जब आपका और उनका सिर एक धरातल पर आ जायेगा, तब आपकी आंखों में आंखे डालकर हालचाल पूछेंगे। आप आगे बढने की अनुमती दो तो चेहरा भी चाटेंगे। दो पाव पर खड़े होकर ये अपने आप को आप ही की बिरादरी का मानने लगते हैं। फिर उनको आप आगोश में लें, गर्दन ओर पीठ सहलाएं, तब जाकर उन्हें थोडी देर के लिए तृप्ति मिलेगी। थोड़ी देर के लिए इसलिए कहा क्योंकि आप दो घंटे बाद ही लौटे, फिर भी ये आपका उसी गर्मजोशी से स्वागत करेंगे और आपसे भी उतने ही प्यार लौटाने की उम्मीद करेंगे। इनके पास मोहब्बत इफराद होती है। ये खूब देते हैं और खूब चाहते भी हैं।

रीडर्स डायजेस्ट में एक किस्सा पढ़ा था– ''मैं एक हवाई अड्डे पर खड़ा था। एक परिवार किसी को छोड़ने आया था। मैं अकेला था, और कोई काम न था, इसलिए उनकी हरकतों की मजा ले रहा था। उसने पहले एक एक करके दोनों बच्चों को गोद में लेकर प्यार किया, उन्हें चॉकलेट दिए, खिलौने लाने का वादा किया। पत्नी एक तरफ गुमसुम सी खड़ी थी वह उसके पास जाकर उसे समझाने की नाहक कोशिश करने लगा। उसका चेहरा ऐसा था मानो अभी बादल फट पड़ेंगे। उसने उसे पास खींचा, उसके माथे को चूमा और अपना सामान उठाने पलटा। तब तक आखिरी बुलावे की आखिरी उद्घोषणा हो रही थी। इस भावभीनी विदाई को देखते हुए मैं भी भूल गया कि मुझे उसी हवाई जहाज से जाना है। मैं समझ गया कि बेचारे का कहीं तबादला हुआ होगा, और कुछ महीनों बाद अपने परिवार को बुला लेगा। लंबे बिछोह की कल्पना से सब विभोर हो ही जाते हैं। संयोग की बात, वे सज्जन मेरे बगल में बैठे मिले। कमर पट्टा कसते हुए

मुस्कुराहट का आदान प्रदान हुआ। आसमान में पहुंच कर जब कॉफी परोसी गई तब चुस्की लेते हुए उनसे बात करने की इच्छा हुई। मैंने पूछा- ''आप कहाँ जा रहे हैं। लगता है कोई अच्छा अवसर मिला है। शायद परिवार को मकान वगैरह लेकर बुला लेंगे।'' उन्होंने असमंजस में जवाब दिया- ''मैं कुछ समझा नही। मैं तो हफ्ते भर के लिए दौरे पर जा रहा था। मेरी नौकरी ही कुछ ऐसी है कि हर महीने दौरे पर जाना पड़ता है।''

परंतु वह विदाई देखकर....

मेरी बात समझ गए। खुलकर हँसे और बोले, सभी को देखकर ऐसा लगता है कि लगता है कि हम लोग ना जाने कितने दिनों के लिए अलग हो रहे हैं। मेरे लौटने पर ये लोग ऐसे ही बेताबी से इंतजार करते भी मिलेंगे। परिवारों के टूटने की वजह रिश्तों को अधिग्रहित मानना है। शादी के बाद हम प्यार को व्यक्त करना जरूरी नहीं समझते।

तो साहब, ऐसे ही यह जीव भी, आप कहीं से दो घंटे बाद ही लौटे हो, आपका इतने उत्साह से नाच कूद कर स्वागत करेंगे, मानो सालों बाद मिल रहे हो।

मेरे सहयोगी हैं- डॉ. सनी भसीन। नाचने कूदने से याद आया उनकी बिटिया है टिंकल! बड़ी प्यारी बॉक्सर बिच है। एक दिन मैं दो आपरेशन के बीच यह लिख रहा था। सनी मेरे बगल में आकर बैठ गया उसने कहा ''सर मेरे यहां भी एक बॉक्सर बिच है।'' पूछने पर उसने नाम बताया टिंकल। उसने कहा, ''सर चाहे रात के तीन बजे लौटूं या चार स्वाभाविक है- कोई नहीं उठेगा, पर टिंकल दरवाजे पर खड़ी मिलेगी। और तो और मेरा नाचकर स्वागत करेगी।'' मुझे हंसी आई। कहा-कुछ भी बोलते हो सनी ऐसा कभी होता है? वह बोला झूठ नहीं बोल रहा सर आप भी आकर देखिये-कमर मटका-मटका कर नाचती है। पहले तो हमें भी आश्चर्य होता था कि इसमें यह कहां से सीख लिया। एक और मजेदार बात वह बड़ी आध्यात्मिक है सर-माँ जब भी पूजा करेगी, यह पीछे बैठी मिलेगी चाहे कोई और आए न

आए। ''मैंने कहा''– सनी, तुम बिल्कुल ठीक कह रहे हो, क्योंकि मैंने पाया है कि इनका भी हमारी तरह व्यक्तित्व होता है। जैसे हम में राजसी तामसी या सात्विक लोग होते हैं इनका भी वैसा ही है। मेरे ससुराल में कई वर्षो पहले एक साहब थे भोला। वह शुक्रवार को उपवास करते। कुछ नहीं खाते तो पता चलता उस दिन शुक्रवार है।

तो जैसी टिंकल वैसे ही डॉ. गुईन की टिमटिम तो साहिल भैय्या का झोरो। मालिक घर लौटे तो ये उसके स्वागत में नाचने कूदने लगते हैं।

इनको प्यार करने के बाद यदि कुछ बचे तो फिर आप अपनी बीवी को दें।

समाज में तीन तरह के लोग होते है–एक जो इनके प्रेमी होते है। आप और मेरे जैसे। तभी तो मैंने यह लिखा और आप पढ़ रहे हैं। दूसरे अभागे जो इन्हें ठेठ पसंद नहीं करते। और तीसरे बीचवाले। डॉ. सुनीता वारके जैसे। जो कई बार इन्हें लाने की योजनाएँ बना चुके घर में अक्सर इनके बच्चे जिद मचाते हैं कि एक डॉगी लाना है। दो चार बार वे झिड़क देते हैं। फिर इन्हें खुद को कभी–कभी इच्छा होने लगती है। घर में दो समूह बनते है। एक इनको लाने के पक्षधार और दूसरे विरोधी। जैसे–जैसे थोड़ी सहमति बनने लगती है, उस परिवार को आप कहते सुनेंगे कुछ नहीं जी बाहर बंधा रहेगा। आजकल समय भी बहुत खराब आ गया है। थोड़ी चहल पहल रहेगी, सूनापन खत्म हो जाएगा चौकीदारी करेगा। खाने की कोई विशेष समस्या नहीं। रात की बची दो रोटियाँ खिला दो बस। इनके लिए ज्यादा कुछ नही करना पड़ता। जो इस दिल्लगी में फँस चुके, हमारे जैसे और आपके जैसे–जिनके घरों में खो–खो की तरह अगला श्वान पिछले की जगह लेता हैं, उनकी बातें सुनेंगे तो हँसी आती है कि वे इस तमाशे को कितनी आसानी से ले रहे हैं। ये अभी अंजाम जानते नहीं। एक बार भाई साहब घुस तो जाए इनके घर में, फिर साल भर बाद आप इनके यहाँ जाएं और देखें कि कितनों ने उसे चौकीदार बनाया, और साल भर में कितने दिन बासी रोटी खुद खाई और कितने बार उसको खिलाई। शायद एक बार भी नहीं। भावनाओं के

अलावा उसका कारण भी बड़ा रोचक है, जो उस समय समझ में नहीं आता। जब वह आता है तब छोटा सा पिल्ला होता है दाँत भी नहीं होते। उसे आप उसकी माँ से अलग करके लाते हो। वह रोटी कैसे खा सकता हैं? स्वाभाविक है उसे तो दूध ही चाहिए। दूधवाले को कहा जाता है कि भैय्या, कुछ दिनों के लिए आधा किलो दूध ज्यादा लाना।

पिल्ले को धीरे-धीरे यह समझ में आने लगता है कि दूधवाला आता है तब दूध मिलता है। दूर से आती दूधवाले की मोटर-साईकिल की आवाज, डिब्बा बजाकर पुकारना इनके छोटे से दिमाग में अंकित होने लगता है।

हमारे दूधवाले को प्लूटो इतना अच्छा लगा कि उसने पहले दिन से ही प्लूटो का बर्तन मांग कर उसके लिए अलग से दूध दिया। वह एक नित्यकर्म बन गया। उसके डिब्बा बजाते ही प्लूटो घर में कहीं भी हो सरपट बाहर की तरफ भागता। हालांकि दूधवाले और पेपर वाले कभी नहीं रूकते, उन्हें हमेशा जल्दी रहती है, पर प्लूटो के लिए वह खुशी से रूकता। अपने हाथों से दूध पिलाता और फिर आगे जाता। उस दूधवाले का यह शौक आदत और फिर मजबूरी बन गई। कभी प्लूटो बाहर न आए तो वह बैचेन हो जाता। उसके लिए रूकता। फिर प्लूटो एहसान जताते हुए उठता और बाहर जाता। फिर जैसे यह थोड़े बड़े होते हैं और दाँत आने लगते है तब आप रोटी के ऊपर का छिलका और फिर एकाध टुकड़ा उस दूध में भिगोकर देने की कोशिश करते हैं। वैसे ही जैसे हम अपने बच्चों को खिलाना शुरू करते हैं। इनकी हरकतों से दो तीन महीनों में इतना लगाव हो जाता है कि कहीं की बची खुशी और कहीं की बासी रोटी। वे तो पतिदेव के हिस्से में जाती हैं।

हमारी अग्रवाल भाभी का लॅब्रेडोर बच्चा है, चीकू काले रंग का, खूब सुंदर खूब समझदार। लॅबॅडोर बड़े बुद्धिमान और स्नेह बरसाने वाले होते है। घर में घुसने वाले का मनोभाव समझ लेते है। उनकी नौकरानी झाडू-पोछा लगाते हुए कुछ और उठाती है, तो वह हाथ पकड़ लेता है, दूसरी तरफ बाहरी आदमी भी शुद्ध भाव से दरवाजे पर खड़ा है तो भौकेगा तक नहीं।

,d Fkk IyVks-

चीकू के कान का ऑपरेशन हुआ। रोज डॉक्टर पट्टी बदलने आता है। डॉक्टर साहब को दूर से देखकर ही वह डर के मारे काँपने लगता है। क्योंकि जब वे घाव साफ करते हैं तो उसे काफी दर्द होता है। परंतु उसकी बुद्धि देखिए, उसे पता है यह उसके अच्छे के लिए हो रहा है और दर्द सहना पड़ेगा। मुंह बंद करने के लिए पशुचिकित्सक यह पट्टा बांधते हैं। उसके लिए इन्हें दो लोगों को दबाकर पकड़ना पड़ता है पर चीकू खुद ब खुद मुंह सामने करके पट्टा बंधवा लेता है।

आज ही चीकू की देखरेख करनेवाला लड़का होरीलाल हमारे घर आया था। मैंने पूछा जरा चीकू की समझदारी के बारे में और बताओ। उसने कहा– क्या बताएँ भैय्या, आदमी भी इतना समझदार नहीं होगा । परसों उसके कान के टांके निकले और पट्टी खुल गई तो उसने तरीके से कान फड़फड़ाए और खुश हो गया कि कान बचा हुआ है। वह खुजाए नहीं इसलिए, उसके दाहिने हाथ में हम मोजा पहनाते हैं। दो बार में वह इस बात को समझ गया। अब हम उससे कहते है कि चीकू हाथ उठाओ मोजा पहनाना है तब चुपचाप हाथ उठाकर आपके हाथ में दे देता है। मैंने पूछा खुजाना उससे बच जाता है क्या? होरीलाल बोला कहाँ डाक्टर साहब, बदमाश ऐसा है कि जब तक जागते रहो चुपचाप बैठा रहता है जैसे ही आपकी झपकी लगी तुरंत खुजाने लगता हैं। उसकी आवाज से यदि हमारी नींद खुल जाए तो एकदम खुजाना बंद भी कर देगा। हर श्वान प्रेमी के पास खूब सुनाने को होता है, अपने पिल्ले के बारे में।

✦✦✦

माँ का प्यार

डॉ. पाण्डे जी ने सच कहा था। एक बार ये बच्चे जन दे तब तो अत्याधिक प्यारी व ममतामयी हो जाती है।

स्त्री को मातृत्व देकर ईश्वर ने बड़ी भूल की। उससे वह ईश्वर से भी ऊपर उठ गई। राम, कृष्ण, ईसा मसीह का जन्म तो आखिर उसी ने दिया। वे उससे बड़े कैसे हो सकते है?

सृजन का घमंड तो स्त्री ही कर सकती है। हम तो सिर्फ विनाश ही करना जानते है।

मेरी माँ के देहावसान के बाद प्लूटो ने ही उसकी जगह ली थी। देर रात घर लौटता। सब सोये रहते। चारू बंद आंखों से दरवाजा खोलती। मैं नाराज होता कि प्लूटो कहाँ है? क्या फायदा उसके घर में रहने का यदि रात को भी बाहर नहीं आता। चारू मुझे डांटती कि नाराज क्यों होते हो। मैंने दरवाजा खोल तो दिया। और हाँ प्लूटो को कुछ नहीं कहोगे। अंदर अपने कमरे में कपड़े बदलते समय प्लूटो को मैं अपने पलंग पर शान से सोता हुआ पाता। उसे देखते ही सारा गुस्सा काफूर हो जाता। वह एक आँख खोलकर और पूंछ हिलाकर वह मुझे हॅलो करता। अब तक चारू फिर से बिस्तर पर डल जाती। मैं कपड़े बदलकर और हाथ-मुंह धोकर डायनिंग टेबल पर रखे हुए खाने को माईक्रोवेव में गर्म करने रखता और टी.वी. का बटन चालू करता। दूर से प्लूटो मेरी सारी गतिविधियों पर ध्यान रखता, माँ जैसे वह मुझे खाना परोस तो नहीं सकता था। परंतु जैसे ही मैं अपनी थाली लगाकर टेबल पर बैठता वह आलस झटक कर मेरे पैरों के पास आकर बैठ जाता। मैं खाना खाते बाये हाथ से उसे सहलाता रहता। आज भी रात को अकेले खाना खाते समय अपनी बायी तरफ सूनापन लगता है। किसी भी चीज का कौर लेते समय हाथ, पहले प्लूटो को देने के लिए अनायास उठ जाता है, पर वह है कहाँ? उसे देकर खाना शुरू करना मेरे लिए नेवेद्य जैसे था। कहाँ तो लोग फोटो, पत्थर के सामने थाल रखते हैं।

इन जीवों से साथ बैठकर खाना खाना तो भगवान के साथ पंगत में बैठकर खाने जैसा है। मैं फ्रिज से मलाई चुराता तो उसका एक हिस्सा प्लूटो को भी देना पड़ता। वह बार-बार फिर मुंह उठाकर मांगता कि और दो। उसे एक बात समझ आ गई थी। आप बोलो कि प्लूटो अब खत्म हो गया और हाथ घुमाकर ईशारा करो तो फिर चुपचाप बैठ जाता। मलाई रबड़ी निपट गई है तो मेरा इंटरेस्ट खत्म तुम बचा घास फूस खा लो। फिर जिद न करता। प्लूटो के जाने के बाद मेरी चुपचाप मलाई की इच्छा भी खत्म हो गई है। रात को खाना खाते समय मैं अकेला न रहूँ इसका वह पूरा ख्याल रखता। उसे वह अपना कर्तव्य समझाता था। कभी-कभी सिर्फ फल फूल लेकर टी.वी. के सामने बैठूं तब भी वह साथ बना रहता। इससे यह महसूस हुआ कि खाने के लालच में मेरे पास नहीं आता था।

अभी कुछ दिनों पहले मेरे मित्र डॉ. सुधीर तिवारी मेरे साथ ऑपरेशन थियेटर में बैठे थे। मैंने उनका भी इंटरव्यू लिया। उनके यहाँ कई वर्षों तक एक शेफर्ड बिच थी। उसका नाम उन्होंने 'रक्षा' रखा था। उसके दो बच्चे हुए, एक साहस और दूसरा उधम। नाम बड़े अच्छे रखे थे। वीर रस से ओतप्रोत। रक्षा पूरे घर की लाड़ली थी। उसने डॉ. तिवारी की माँ की गोद में अपने प्राण छोड़े। तब वह उसका माथा सहला रही थी। उसे उन्होंने गंगा जल भी पिलाया। और तो और उसके अंतिम समय में गीता पाठ भी हो रहा था। डॉ. तिवारी ने बताया वह भी थी उस लायक। फर्क खाली दो और चार पैरों का था, वर्ना वह बच्चों का बिलकुल माँ की तरह ध्यान रखती थी। डॉ तिवारी की बच्ची उस पर घोड़े की तरह चढ़ती। लगाम की जगह कान पकड़ लेती, उसके जबड़े में अपना पूरा हाथ डाल देती पर रक्षा सब झेल जाती। उन्होंने एक बात तो अविश्वसनीय बताई, बच्ची जब तीन महीने की रही होगी तब उसने पहली बार करवट ली। रक्षा को बच्ची गिरनेवाली है, उसका एहसास जाने कैसे हुआ और वह तुरंत पलंग से सटकर खड़ी हो गई। बच्ची सीधे जमीन पर न आकर रक्षा के पीठ पर गिरी। यह ममत्व सिर्फ बिच में होता है।

मज़े के लिए आप 'डॉग' को लिख कर आईने के सामने पकड़े, आईने में आपको 'गॉड' दिखेगा।

✦✦✦

सबसे अलग रिश्ता

प्लूटो की एक खास अदा थी हर व्यक्ति को वह अलग से समय देता। हम प्लूटो से यह बात सीख लें, तो रिश्तों का सीन ही बदल जाएगा। मैं जब कभी अपनी मां को समय न दे पाता तब वह अक्सर कहती- शिवाजी इतना बड़ा राजा था, पर रात को सोने से पहले अपनी माँ से मिलने जाता था। इस अंतरंग भेंट के समय वहाँ कोई और नहीं होता। उस समय वह उसे राज पाट से संबंधित सलाह भी देती।

हम सुबह उठकर गुसलखाने में चल देते है। तैयार होकर बाहर काम पर निकल जाते हैं लौटकर हाथ मुंह धोकर टी.वी. के सामने बैठ जाते है। खाना खाकर सो जाते हैं। यदि खाना पीना साथ हुआ तो यही एक मौका रहता है परिवार वालों का आपस में मिलने का। परंतु वह व्यक्तिगत मिलना नहीं हुआ। हो सकता है आपका बच्चा किसी वजह से परेशान हो, पर वह आपको बताए कब? या मां-बाप बुजुर्ग संकोच में अपनी परेशानियां दूसरों के सामने न बताएं।

तो साहब प्लूटो सबको अलग-अलग वक्त देता था। उस समय सिर्फ प्लूटो और वह व्यक्ति होता।

सुबह बगीचे में विभा के साथ उसका साया बना रहता। वह लॉन संवारने, गुलाबों का कटिंग या गमलों में गुड़ाई करते समय उससे बतियाती रहती।

उसके नहाने जाते ही वह माधव के साथ उसके कमरे में रहता। माधव के कॉलेज जाते ही वह चारू के साथ रहता।

इस बीच यदि सामने से नानी आती तो उसे धक्का देकर छेड़ता और उसके आजू-बाजू घुटियाता।

दादी माँ के लिये भी उसका समय तय था। दोनों टाईम की चाय के समय वह उसके सामने जाकर खडा हो जाता। वह चाय बनाने

की, और कप प्लेट की आवाज खूब पहचानता था। दादी को पहले उसे भोग लगाना पड़ता फिर बाकी खुद पीती। सुबह की चाय के बाद वह उसके साथ नही रूकता क्योंकि वह समय माधव के लिए था। पर दोपहर की चाय के बाद वह दादी के पास आधे घण्टे बैठता जब बाकी लोग सोये रहते और दादी दाल चांवल बीनते रहती या सब्जी काटते रहती तब। उसने प्लूटो को कम ही सहलाया और छुआ होगा। पर सूनी दोपहर में उसका साथ उसे कितना अच्छा लगता होगा।

दादाजी दोपहर के आराम के बाद। अपने कमरे से नीचे उतरने और एक घंटे तक ड्राइंग रूम में बैठते। वह समय प्लूटो का उनके साथ बैठने का होता। दूर बैठा रहता। उनका उसे हैलो कहने का व उसके माथे पर हाथ फेरने का सवाल ही न था। परन्तु वे महाराज अपनी ड्यूटी निभाते। साथ बैठते बैठते धीरे-धीरे उनको उसके लिये अपनत्व जगने लगा। फिर शाम को छह बजे के आसपास बाहर वालों से मिलना, घूमना, सामने मामाजी को हैलो कहना उसका नित्यकर्म था।

मेरे आने तक फिर बच्चों के साथ और रात को मेरे खाना खाते समय मेरे साथ। उसने किसी के साथ भेदभाव नहीं किया। सबका लाड़ पाया। माधव उसके कानों को मोड़कर समोसा बनाता, चारु उसे लोड बनाकर, उस पर सिर रखकर पढ़ने लगती। कभी ज्यादा दबा तो बीच-बीच में एक लम्बी सांस लेता चारु उसको सिर के नीचे लेती तो विभा पैर के नीचे। विभा के पैर दुखते तो उन्हें ऊपर रखने के लिये अक्सर प्लूटो के ऊपर पैर टिकाकर कर सोती। उस पच्चीस किलो के वजन के लिये भी कभी उसने उफ नहीं की। विभा को तो उसका जाना सबसे ज्यादा अखरा होगा। वह उसका साया था। उससे गप्पे मारती, खाना बनाने में साथ बैठा रहता। बिल्कुल हच का विज्ञापन आता है उसी तरह। वह पूजा करती तब भी वह उसके पीछे बैठा रहता। भगवान जी भी हंसते होंगे कि अरी पगली मैं तो तेरे पीछे बैठा हूँ। पलटकर आरती कर दे। पार लग जाएगी।

आने-जाने वाले और रिश्तेदारों को भी उसने खूब लुभाया। फोन पर मौसी पहले प्लूटो का हाल पूछती फिर बाकी बच्चों का। सिर्फ चार दिनों के लिये आई थी वह सूरत से। उतने में प्लूटो से प्यार हो

गया। जब जाने लगी तो उसे अंडे खाने के लिये दस रूपये दे गई। बाकी बच्चों को सूखा आर्शीवाद मिला। उसके बाद हम हर रिश्तेदार को यह किस्सा सुनाते तो वह इशारे को समझकर प्लूटो को अंडे के लिये १०-२० रुपये दे जाता।

जब पूरा परिवार साथ मैं बैठकर टी.वी. देखता तब वहाँ प्लूटो को तो होना ही था उस साथ की खुशी के लिये वह टी व्ही अठारह गुना तेज आवाज झेलता। इनके कान हमसे अठारह गुना तेज सुनते हैं। दृष्टि के बारे में कहते है कि इन्हें रंग नहीं दिखते। कितना भी अच्छा टी.वी. हो, इन के लिये ब्लैक एण्ड व्हाइट ही है। एक हास्यपद बात अक्सर होती। जब पूरा परिवार आँखे गडाकर टी.वी. देखता तो प्लेटो का मुँह दूसरी तरफ होता।

✦✦✦

हम उम्र

प्लूटो ने अपने आखिरी दिनों में पिताजी के साथ रहना पसंद किया। काफी समझदार और परिपक्व हो गया था वह। अल्हड़पन कब का जा चुका था। आराम कुर्सी पर पिताजी पेपर पढ़ते रहते और वह उनके बाजू में बैठा रहता। उन्हें भी वह अच्छा लगने लगा था।

पिताश्री को कुकुर कभी नहीं भाए। शुरू में वे प्लूटो से जानवरों सा व्यवहार करते वह उनसे बच्चों सा लडियाता और लात खाकर चिल्लाता वापिस लौट आता। फिर वह उनसे डरने लगा। उनके इस व्यवहार से हम सब दुखी होते। एक बार तो इनके झगड़े की अति हो गई पिताजी बोले इस घर में या तो यह रहेगा या फिर मैं। घर छोड़ने का सवाल तो दोनो के लिए ही न था। इंसान तो घर छोड़कर फिर भी जिंदा रह सकता है परंतु यह साहब तो किसी लायक नहीं रहे। इनकी बिरादरी वाले अब तो इन्हें सड़क पर आने ही न देंगे। ये खाना कहाँ खोजेंगे? इन्हें तो विनती करके कौर इनके मुंह में ठूंस कर जबरदस्ती खिलाना पड़ता है तब वे खाते हैं। सबक चेहरे उतर गए। घर में मातम छा गया। दो दिन में पिताजी समझ गए। प्रजातंत्र की पुकार पर उन्होंने हथियार डाल दिए।

समय के साथ प्लूटो ने उनका दिल जीता। रिश्ते के इस रूपांतरण का हमने खूब मजा लिया। प्लूटो गांधीवादी तरीके से जीता था। आप हमें कितना ही दुतकारो हम आपसे प्यार करना न छोड़ेंगे। वह उन्हें कभी अकेला न छोड़ता। कहीं जरा सा खटका होता तो उन्हें भौंककर चेतावनी देता। इससे वे बड़े खुश होते। क्योंकि उन्होंने जिंदगी में इन्हें कभी प्यार करने के लिए पालना सोचा ही नहीं। उनके हिसाब से ये तो हमारी सुरक्षा और चौकीदारी के लिए ही पाले जाते है।

पिताजी सांप से बहुत डरते है हालांकि सांप से कौन नहीं डरता, परंतु उनके मन में कुछ ज्यादा ही भय है। एक बार सांप के आहट की चेतावनी प्लूटो ने उन्हें दे दी। फिर क्या था। जावेद मियाँदाद के

जीतने वाले छक्के का काम प्लूटो ने किया था। वह सबसे प्लूटो की तारीफ करते न थकते। हालांकि उस गधे को भी समझ में नहीं आया होगा कि उस अजीब सी हिलती चीज के बारे में सबको बता भर देने से उसकी इतनी इज्जत क्यों बढ़ गई। पिताजी को कौतुक था कि जो आवाज उन्हें सुनाई नही देती। उसके बारे में वह उन्हें बता देता है। स्वाभाविक है ये हम से कई गुना ज्यादा सुनते है। पिताजी के कान वैसे भी जवाब दे चुके थे। एक पिन का जमीन पर गिरना प्लूटो को थाली पीटने जैसा लगा है और थाली का पीटना पिताजी को सुई गिरने जैसा। वैसे प्लूटो की आहट की प्रतिक्रिया भी देखने जैसी होती, पहले वह एक आंख खोलता फिर दोनों, फिर गर्दन उठाकर मुंडी सीधे तानता, उसके कान खड़े हो जाते और आवाज की दिशा में मुड़ जाते, मानों आनेवाली सारी ध्वनि तरंगों को सोखकर उनका आंकलन करना चाहता हो। तब वह यथोचित आवाज में भौंककर हमें बताता कि उस आहट को कितना महत्व दिया जाय।

प्लूटो की उम्र बढ़ी तो उसकी खेलने में रूचि घट गई। मेरे भी वहीं हाल थे। घरवाले मेरे पीछे पड़े रहते कि थोड़ा प्लूटो के साथ खेलो। तुम दोनों के लिए अच्छा होगा। तुम भी आजकल बहुत आलसी हो गए हो। पांच साल पहले यह आलम था कि जी भरके खेले बिना प्लूटो मुझे अंदर ही नहीं घुसने देता। मेरे अंदर आते ही बच्चे मेरा ब्रीफ केस ले लेते और फिर मैदान में सिर्फ हम दोनो होते। हमारे कई खेल थे जिसमें लुका छुपी मुख्य था। वह मुझे छुपने देता, फिर मैं हल्की सी आवाज करता तो उसके कान खड़े हो जाते और वह मुंडी टेढी मेढी करके मेरी स्थिति का जायजा लेता। उसकी यह मुंडी टेढ़ी करने की हरकत का दर्शक गण खूब मजे लेते। फिर वह मेरी तरफ दौड़ लगा देता। मुझे पकड़कर सबके सामने लाता और अपनी जीत पर खुश होता। उसके बाद उसकी बारी होती। वह पलंग के नीचे जाकर छुपता और उम्मीद करता कि मैं उसे खोजते हुए वहाँ पहुंचूँ। मजे की बात यह, कि गधे की जगह फिक्स थी। लेकिन मुझे यह दिखाना पड़ता कि मैंने उसे बड़ी मुश्किल से खोजा है। फिर दौड़कर एक दूसरे को पकड़ने का खेल होता। बीच में मध्यांतर होता, जिसमें वह लपर लपर करके पेट भर पानी पीता। फिर क्रिकेट का

खेल होता। हमारे गेट से पीछे की दीवाल की दूरी ६० फुट है। प्लूटो बॅट्स मॅन की तरह सिरे पर खड़ा होता। और मैं बॉलिंग करता। हास्यास्पद यह कि वह मुझे यानी बॉलर को बॉल लाकर देता और फिर दूसरे छोर पर खड़े हो जाता। उसने अपने मन से खेल के कुछ नियम बनाए हुए थे, जिसका हमें पालन करना पड़ता। बॉल यदि बीच में रूक गई या वाईड हो गई तो वह अपनी जगह पर बना रहता और आपको खुद जाकर बॉल उठानी पड़ती। वह उम्र उसकी खेलने की थी। तब उसने दादा या दादी की तरफ ज्यादा ध्यान नहीं दिया। जब और छोटा था तब तो वह मुझसे भी आकृष्ट नहीं देखा हुआ। नन्हों को माँ अच्छी लगती है वह विभा के आगे पीछे होते रहता और चारू, श्रीधर, माधव उसे ज्यादा अच्छे लगते।

इनका एक साल और इंसानी सात साथ के बराबर होते हैं। स्वाभाविक है, शुरू के दो तीन साल उसे बच्चे अच्छे लगे, फिर मैं। क्योंकि तब तक वह हमारी गिनती में जवान हो गया था। सात आठ साल का होते होते परिपक्वता में मैं भी उसके सामने छोटा हो गया। तब वह साठ के करीब पहुंच गया था। जायज है कि उसे दादा दादी अच्छे लगने लगे। वह उन्हें एक मिनट नहीं छोड़ता। यह कहानी श्री अमिताभ बच्चन के चलचित्र 'पा' जैसी है जिसमें वे १२ वर्ष की उम्र में ही वे अस्सी के हो गए। सोचकर विचित्र लगता है। कछुआ दादा जिनकी आयु ३०० वर्ष है, सौ के होकर भी बच्चे हैं और तितली रानी जो सिर्फ दो दिन की मेहमान बन कर आती, है वह कुछ घंटों में ही वयस्क हो जाती है।

दादी के लिए तो प्लूटो मानो चौथी नातन बनकर आई थी। लड़कों में हमारे यहाँ श्रीधर और माधव पर लड़कियों में चारू अकेली है। वैसे भी घर में एक और बिटिया की जरूरत थी जो प्लूटो ने आकर पूरी कर ली।

दादी की उम्र के लोग पुराने ख्यालात के होते हैं। ये रसोई घर में छुसा-छूत को खूब मानते हैं। हालांकि रसोई घर का ऑपरेशन थियेटर जैसा अनुशासन उसे स्वच्छ, व परिवार को स्वस्थ रखता है, परंतु नई पीढ़ी उसे उतना महत्व नहीं देती। प्लूटो रसोई में घुसता तो दादी पसंद

न करती। छोटा सा पिल्ला, कहीं भी मुंह मार देता। धीरे धीरे उसे दादी का झिड़कारना समझ में आया और फिर खाने-पीने की चीजों को मुंह लगाना छोड़ दिया। बाद में तो इतनी परिपक्वता आ गई थी कि आप बाजू से बैठकर खाना खाते रहो, यदि वह दो दिनों का भूखा होगा तो भी आपकी तरफ देखेगा नहीं। हम कहीं बाहर जाते तो प्लूटो ही अकेलेपन में दादी का साथी था। उसके रहते मां को कभी सूनापन नहीं लगा। उसका उससे रिश्ता बड़ा मजेदार था। वह उसे चाहती थी उसमें कोई शंका नहीं, परंतु छुआछूत की कल्पनाओं से ऊपर नहीं आ पा रही थी। जब भी वह उसे चाटता तो वह उसे गालियां देते हुए हाथ पैर धोने दौड़ती। हम सब मजे लेते प्लूटो को भी इस खेल में मजा आता। वह दादी को समय असमय जबरन को चाटकर भाग जाता। उसके रिश्ते को दादी ने भी खूब निभाया। उसने इहलोक अपने जाने से पहले रात को प्लूटों को अपने हाथों से खाना खिलाया। हमें बड़ा आश्चर्य हुआ कि माँ अपने हाथों से प्लूटो को मुंह में कौर देकर कैसे खिला रही है? क्या पता उसे मालूम था कि यह प्लूटो से उसकी आखिरी मुलाकात है? प्लूटो भी शांति से खा रहा था। कई चीजों का बाद में आंकलन होता है। प्लूटो को खिलाकर मां ने विभा से कहा कि घर का ख्याल रखना और सोने चली गई, तो दूसरे दिन उठी ही नहीं। क्या उसे खुद के जाने का पूर्वानुमान था? क्या पता?

विभा तो उसकी मां थी। हमउम्र वाली कोई बात ही नहीं। वह शुरू से आखिर तक विभा का साया बना रहा। जहाँ विभा वहाँ प्लूटो पीछे बैठा मिलता, चाहे बगीचे में गमलों मे गुड़ाई कर रही हो, या फिर रोटी बेल रही हो, काम करते विभा उससे बतियाती रहती। वह सब कुछ ध्यान से ऐसे सुनता मानो उसके सब समझ में आ रहा हो। मैं विभा की व्यथा को समझ सकता हूँ। कई बार तो उसे अभी भी भ्रम होता होगा कि प्लूटो पीछे बैठा है। मैं अपने काम पर और बच्चे कॉलेज चले जाते है। विभा को प्लूटो के बिना अकेलापन खूब झेलना पड़ रहा होगा। इस तरह वह १० वर्षो में पूरी जिंदगी जी कर चला गया।

✦✦✦

रफ्ता-रफ्ता

प्लूटो २३ मार्च १९९८ से १ सितंबर २००७ के बीच हमारा मेहमान था। उसने हमारी जिंदगी का वह समय अविस्मरणीय बना दिया।

सफर चाहे रेल का हो या जिंदगी का, मैंने महसूस किया है कि रिश्ते जब चरम सीमा छूते हैं तभी अलग होने का समय आ जाता है।

आपका हम सफर पहले तो एक अजनबी रहता है। धीरे-धीरे पहचान, फिर आत्मीयता होती है। तभी उसका, या आपका गंतव्य आ जाता है और आप अलग हो जाते हो।

जब प्लूटो हमारी जिंदगी में आया तो वह मात्र एक श्वान का पिल्ला था। धीरे धीरे वह हमारे दिलों तक घुसता चला गया।

शुरूआती दिनों में उसे गॅरेज में रखा गया। कितना छोटा सा था वह। चैनल गेट के आर पार हो जाता, पूरे घर के चक्कर लगाकर बेड़रूम के दरवाजे पर पहुंचता और अपने नन्हें पंजों से खुटुर-खुटुर करता। आज सोचो तो दुःख होता है। कॅलेंडर को पीछे पलटा सकते तो उसे अपनी गोद से नीचे भी न उतरने देते। कितने बेवकूफ थे हम अपनी इस बेशकीमती जागीर को खुले में छोड़े हुए थे। हमारी स्वार्थ बुद्धि ने उसे घर की चौकीदारी और सुरक्षा के लिए पाला था। वह छोटू क्या खाक चौकीदारी करता। वह खुद ही इतना सुंदर था कि चोर घुसते तो उसी को ले जाकर संतुष्ट हो जाते। और जब तक चौकीदारी के लायक बड़ा हुआ तब तक वह बेड़रूम में घुस चुका था।

एक बार हम शिप्रा दीदी के यहाँ गए थे। उनके यहाँ एक भूरे रंग का श्वान था। हमें वह हमेशा अंदर ही मिला हमने उनसे पूछा दीदी क्या यह रात को भी अंदर ही? हमने पूछा- तब तो इसे पालने का कोई मतलब ही नहीं। फिर यह रात को परेशान भी करना होगा।

इसे बाहर क्यों नहीं रखते? दीदी ने मासूमियत से कहा- किसी ने चुरा लिया तो? हम सब हंस पड़े। पूरी दुनिया तो इन्हें सुरक्षा के लिए पालती है। यह भी कोई बात हुई। माझी नैय्या डुबाए जैसी! पर समय के साथ हमने देखा कि हमारी भी वहीं सोच हो गई थी। हमें भी डर लगता कि किसी ने इसे कुछ खिला दिया तो? या चुरा लिया तो? प्लूटो बाहर रहता तो हम बैचेन होते। बाहर करते ही वह भी अलग हल्ला मचाता। दस पंद्रह मिनट में ही ड्राईंग रूम के दरवाजे पर पंजे मारने लगता। फिर हम उससे जाकर मिलते, प्यार करते, डॉटते और सो जाते। कुछ दिनों में यह समझ में आया कि इनके रहने से घर क्यों सुरक्षित रहता है। न तो ये खुद सोते हैं, ना ही मालिकों को सोने देते है। रातभर पूरे घर को जगाए रहते है। ठीक से नींद न होने से मेरे दूसरे दिन के काम पर असर होता। चिड़चिड़ाहट होने लगी।

तब यह सोचा कि क्यों न इसे घर के बीचों-बीच लॉबी में रखा जाए। चारों तरफ इसका ध्यान भी रहेगा। कोई भी कहीं से घर में घुसा तो यह भौंकेगा। गॅरेज तो फिर भी एक तरफ पड़ जाता है। उसका पूरा तामझाम लॉबी में सीढ़ी के नीचे शिफ्ट कर दिया गया। उसके लिये बगल में पानी की व्यवस्था भी की। हमें थोड़ी राहत मिली। नींद मिलने लगी। कुछ दिन तो यह कार्यक्रम सही चला, फिर देखा तो महाराज बेडरूम का दरवाजा खटखटाने लगे। ज्यादा ही परेशान हुए तो हमने उसे बेडरूम के अंदर कर लिया। फिर अपने मन को समझाया कि चोर आया भी तो इसे उसकी आहट तो सुनाई देगी ही। भौंककर हमें चेताएगा। मन के किसी कोने से यह जा नहीं रहा था, कि हमने इसे अपनी सुरक्षा के लिए पाला है। खैर।

लेकिन फिर एक तक मजेदार दिक्कत सामने आई। बाहर गली में इसके साथी भौंकते, तो आवेश में आकर यह भी भौंकने लगता। गॅरेज में भौंकता तो हम तक उतनी ही आवाज न आती। परंतु अब तो बगल में बैठकर चिल्ला रहा था। रात की नीरसता में यदि कोई श्वान आपके बाजू में बैठकर पूरी दम से भौंके तो आप कहाँ सो पाओगे? फिर नया नाटक - जैसे ही वह भौंकता तो डॉट-डपटकर उसे उठाकर गॅरेज में पटक देते कि यहाँ बैठकर चिल्लाओ, जितनी तुम्हारी मन मर्जी हों। ये बड़े होशियार होते है। दो चार बार में ही प्लूटो को

समझ में आ गया कि भौंको तो बाहर कर दिया जाता है। फिर वह डॉटते ही चुप होने लगा।

कुछ दिनों बाद उसे लगा कि अपने साथियों को जवाब देना भी तो जरूरी है। अपने आराम व सुखों के पीछे जात छोड़ना कहाँ तक उचित है? उसने बीच का रास्ता निकाला बीच बीच में धीरे से भू.. .. करके अपने धर्म को निभाता। उसकी वह छोटी सी भू.... बड़ी प्यारी लगती। वह छोटी से भू.... तीन गलियों पार से जो भौंक रहे हैं उन्हें कहाँ सुनाई देती? पर इसे महसूस होता मानो अपने कर्तव्य का पालन किया। कुछ समय में प्लूटो ने भी महसूस किया होगा कि यह औपचारिकता से भरी भू निरर्थक है। क्यों बेकार में अपने घरवालों को परेशान करो। इनसे और अपने साथियों दोनों से रिश्ता निभाना संभव नहीं अब दो में एक को चुनने का समय आ गया है। अच्छे लोग हैं इन्हीं से रिश्ता रखना व्यवहारिक है। इस प्रकार से वो भू बंद सी हो गई और हमारी रातें फिर से शांत हो गई। वह पलंग के नीचे चुपचाप सोया रहता। सुबह दादाजी के उठने से पहले हम उसे बाहर कर देते। बाहर एकाध राउंड मारकर दादाजी के सामने आकर वह ऐसा खड़ा होता मानो रात भर आंखों में तेल डालकर ड्यूटी निभाई हो। हम भी अपने कमरों से अबोध बनकर बाहर आते। कुछ समय बाद दादाजी को शंका हुई। वे बोले यह बीच-बीच में ऊपर आ जाता था, आजकल क्यों नहीं आता? इसके भौंकने की आवाज भी नहीं आती? हम उनसे नजरें चुराकर विषय बदलने की कोशिश करते। कुछ दिनों बाद हमारी चोरी पकड़ी गई। हम दादाजी को नाहक समझाते कि आजकल इन्हें घर के अंदर ही रखा जाता है। उन्होंने हमे डाँटना तो छोड़ दिया परंतु वे अंदर से कभी इस दलील को पचा नहीं पाए।

जिंदगी सामान्य चलती रही। उनका लिहाज रखने के लिए उनके नीचे उतरने से पहले प्लूटो को बाहर कर दिया जाता।

कोई एकाध साल बीता होगा। प्लूटो को ऐसा लगने लगा कि मेरी जगह तो माँ-बाप के बीच में हैं मैं अलग क्यों सो रहा हूँ? इस अक्ल के आते ही वह मच्छरदानी में अपना थूथन टिकाकर मुझे शिकायत करता ऐ मिस्टर यह बर्ताव अच्छा नहीं। या तो मुझे अंदर लो या खुद

बाहर आकर मेरे साथ सोओ। मैंने प्रतिकार किया कि अब बहुत हो गई।

बच्चों की बाप के सामने नहीं चलती तो माँ के पीछे लगते हैं। प्लूटो ने अपने हक की लडाई जारी रखीं। फिर वह विभा की तरफ से उसे अगले पंजे मारकर भौंकता कि माँ मुझे अंदर ले लो।

हमने आखिर हार मान ली। थोड़ी मच्छरदानी हटाई तो वह पलंग के ऊपर चढ़ गया लेकिन मच्छरदानी से बाहर बैठा। छह आठ दिनों बाद देखा तो मच्छरदानी के अंदर विभा के बाजू में विराजमान था। वहाँ भी शांत नहीं हुआ, क्योंकि मैं दूर था। हमने भी बोलना डॉटना छोड़ दिया, क्योंकि लिहाज की वह सारी सीमाएँ पार कर चुका था। प्यार बढ़ता गया। अब तो वह गंदा भी न लगता। अब मेरे साथ के लिये वह बैचेन रहता। तब तक वह शांत नही हुआ जब तक कि वह मेरे पैरों के पास नहीं सोया। धन्य है इस जीव की हनुमान भक्ति। अपने मालिक के प्रति समर्पण। उसे मेरे चरणों में ही शांति मिली। उससे कभी मेरे बगल में सोने की कोशिश नहीं करी। फिर तो यह नित्यकर्म सा बन गया कि माँ को विनति करके उसकी तरफ से अंदर घुसना और पिताजी के कदमों में आराम से सो जाना। हम सब उसे इतना प्यार करते कि कभी कभी स्थिति हास्यास्पद हो जाती। कभी देर रात ऑपरेशन से लौटता तो मेरी पूरी जगह को घेरे हुए प्लूटो को फैलकर सोते पाता। मैं किसी तरह खुद के लिए जगह बनाने की कोशिश करता या चिड़चिडाता तो विभा मुझे डाँटती – हल्ला मत मचाओ प्लूटो की नींद खुल जाएगी। मालिक कुकुर के लिए रात के समय सोचे कि कहीं यह उठ न जाए तो उस कुकुर की किस्मत की क्या कहें। जाने कितने जन्मों से पुण्य के बाद वह राजसी सुख भोग रहा था।

सही फरमाया है किसी ने –

रफ्ता–रफ्ता वो मेरी हस्ती का सामांन हो गए,

आप तो नज़दीक से नज़दीक से नज़ंदीकतर आते गए,

,d Fkk lyVks-

पहले दिल, फिर दिलरुबा, फिर दिल के मेहमां हो गए,

रफ्ता–रफ्ता .....

सड़क का आवारा पिल्ला हमारे दिलों में अंदर तक घुसता चला गया।

✦✦✦

यदि मैं कुछ कह पाता

मुझे बड़ी इच्छा हो रही हे खुद के बारे में आपको बताने की।

आँखें खुली तो पांच भाई-बहनों के साथ माँ की गोद में अपने आप को धंसा पाया। दिन की रोशनी आंखों की बड़ी चुंधियाने वाली थी। रात के अंधेरे में जरा सुकून मिलता। भूख लगती तो मां के अमृत की धार मिल जाती। उसके लिये भाई-बहनों पर गिरते पड़ते कई बार अपनी बारी का इंतजार करना पड़ता। कभी आधे पेट कोई धक्का मार कर अलग कर देता। गुस्सा भी आता, कि हम एक दो ही होते तो कम से कम भरपेट दूध तो पीने को मिलता।

हमारे बगल में एक भैंस ने पड़ा जना था। हमें उससे जलन होती। वह अकेला और माँ के थन चार। पर पाया कुछ और ही। हम दूध पीकर सो रहे होते तब देर रात तक उसकी भूख से रोने की आवाज आती। भैंस भी विचित्र आवाजें करती। पड़े को दिन में दो बार भैस के थन से मुंह लगाने दिया जाता और जैसे वह प्यार से दूध की धार छोडने लगती, वह दूधवाला भैया, पड़े को खीच कर अलग कर देता। कितनी क्रूरता है यह।

समझ में नही आता कि यह दूध किसके लिए था ?

जिनके लिये जा रहा है क्या उनकी मां उन्हें दूध नहीं देती? उस दिन बकरी दीदी सामने सड़क से गुजर रही थी। उसका छौना बार-बार उसके थन से मुंह मार रहा था। देखा तो किसी ने उसके थन को एक कपड़े की थैली से बांध दिया था, ताकि वह छौना उसका दूध न पी सके। लगा कि जिनके लिए इस बकरी दीदी का दूध जानेवाला है, उनके बच्चों के सामने दूध की जगह इसी छौने की तरह पीपल के पत्ते डाल दें तो उन्हें कैसा लगे ?

मुझे माँ ने बताया कि यह दूध इनके साधु संन्यासी भी पीते है, और पूजा में काम आता है। हमारे समझ नही आया कि यह पूजा क्या

होती हैं? पता चला कि ये किसी शक्ति को मानते है, जो दुनिया चला रही है। कल्पना अच्छी है। वे सुबह शाम चिल्ला चिल्लाकर और घंटियां बजकर उसे बताते हैं, कि हम तुम्हें मानते है। तुम सर्व शक्तिमान हो। इन्हें कुछ चाहिए होता है तब वे उसे लालच भी देते है- कि तुम हमें बच्चा दो तो तुम्हें ये देंगे या पैसा दो तो उसमें एक हिस्सा तुम्हें भी देंगे। कभी-कभी लाउड स्पीकर भी बजाते है शंख बजाते है- क्या पता शायद वह ऊंचा सुनता हो?

यह सब करने को ये पूजा कहते है और पूजा व उस व्यवसाय से जो जुड़े है वे साधु संत कहलाते है। उनके साथ, जो अपना पेट भरने के लिये निक्कमें चलते है वे शिष्य कहलाते हैं। ये सब दूध को पवित्र पेय मानते हैं और उसे खूब पीते है।

पड़े को दूध नहीं मिलने से वह धीरे-धीरे सूखकर मर गया। उधर बकरी दीदी का छौना जैसे ही थोड़ा बड़ा हुआ हो उसे कसाई खाने भेज दिया गया।

वाह रे मानुस जात।

खैर उनसे तो हमारी किस्मत भली। अभी तक इनका ध्यान हमारे माँ की दूध की तरफ नहीं गया है। वर्ना इस दो पाये ने तो किसी का दूध छोड़ा ही नहीं चाहे गाय, बकरी हो अथवा फिर उंटनी या गधी।

हम छह भाई बहन थे। मेरे अलावा टाईगर, चूहा, झबरा, लोमड़ी और ब्राउनी।

हमारा जन्म एक पुलिया के नीचे हुआ था। पुलिया के नीचे की नाली सूखी थी। वहाँ सिर्फ बरसाती पानी बहता था। उससे लगे हुए घर की मालकिन बड़ी दयालु थी। उसे हम भा गए थे। वह हमें रोटी के छोटे-छोटे टुकड़े दूध में भिगोकर खिलाती। कभी-कभी थोड़ा दूध पिलाती। वह एक मध्यमवर्गीय साधारण परिवार था। ज्यादा पैसे वाले न थे। उसके बच्चे बल्कि जिद कर रहे थे कि हममें से किसी एक को पाले। कई बार हममें आपस में चर्चा होती, कि कौन वह भाग्यवान होगा जो हमेशा के लिए इस परिवार का हिस्सा बनेगा। उसी ने हमारे

नाम रखे थे। मुझे वह सफेदा कहती थीं। मैं उसका बहुत प्रिय था। आजकल हमारी माँ का दूध कम होता जा रहा था। उसकी पसलियां निकल आई थी। वह दोपहर को खाने की खोज में निकलती तब हम बेसहारा हो जाते। दिल के टुकड़ों से अलग होने में वह भी बैचेन होती होगी। जब तब हमारी आंखे बंद थी, हफ्ते भर एक मिनट के लिए हमसे अलग नहीं हुई। कोई चलता फिरता जरा भी हमारे करीब आता तो वह खूंखार हो जाती, उस पर दांत निकाल कर गुर्राती।

बिचारी ने अपना हाँड मांस गलाकर हमे जिंदा रखा। आधी रह गई थी। अब खाने की खोज में न निकलती तो उसके जान पर भी आ गई थी।

जब वह जाती तो हम एक दूसरे से चिपके रहते।

कुल मिलाकर हमारा भरा पूरा परिवार था। माँ लौटकर हमें पूरी संख्या में एक साथ पाकर खुश होती। हालांकि उसके नसीब में इस भरे पूरे परिवार का साथ ज्यादा दिनों तक न था।

हमें पहला झटका तब तक लगा जब चूहा गायब हुआ। खूब कमजोर था वह। आंटी रोटी के टुकड़े डालती तो बाकी लोग उससे भी सबसे पहले टाईगर हवा में ही लपक लेता। उससे बचा हुआ हमें मिलता। चूहे के हिस्से में कम हो आता। आंटी बड़ी प्यारी थी। वह कभी कभी चूहे को उठाकर अपने हाथ से खिलाती।

झबरा तो अपने बालों से ही परेशान था। कितने बार तो उसे अपने आंखों के सामने का भी न दिखता और इधर उधर टकराता। उसे ऐसे टकराते देख हम सब खूब हंसते। हमे क्या मालूम था कि हमें वह खूब जल्दी इसी बातपर रूलाने वाला है। चूहे के गायब होने के आठ दस दिनों बाद ही झबरा एक गाड़ी के नीचे आ गया। बेचारे को ठीक से न दिखना ही, उसके मौत का निमित्त बन गया।

जब कोई गायब होता, माँ रात भर इधर उधर दौड़कर उसे खोजती रहती। हम बेसहारा हो जाते। उस अंधेरी पुलिया के नीचे माँ के बिना हमें खूब डर भी लगता।

अब माँ के दूध से हमारा पेट न भरता। धूप चढ़ते ही हम भी खाने के खोज मे इधर उधर बिखर जाते। अंधेरे घिरते तक फिर अपनी पुलिया में इकट्ठे होते। सुबह जब अलग होते तब शाम को सब वापिस मिल पाऐंगे कि नहीं इसका कोई भरोसा न था।

रात को ठंड से बचने के लिए एक दूसरे पर लदकर सो जाते। सुबह भगवान सूर्य अपनी ऊर्जा बिखरते लगते तो हम सब फिर बिखर जाते कुछ खाने की खोज मे।

आजकल माँ बहुत बैचेन रहती। कमजोरी से अब इसका गुर्राना बंद हो गया था। उसने अब हार मान ली थी। वह बेचारी समझ गई थी कि हमें अन्न व सुरक्षा देना अब उसके बस में नहीं। हमारी आवश्यकताऐं उसके सामर्थ से कहीं आगे बढ़ गई थी। कहाँ तो वह पहले कोई हमारे पास तो आए जाए तो अपनी आंखों से ही उसे जताती, खबरदार जो मेरे बच्चों के पास आए तो। परंतु अब यदि कोई राहगीर हमारे परिवार के पास से रूके। तो वह उसके पास जाकर अपनी पूँछ हिलाती। उसे अपने सिर पर हाथ भी फेरने देती। उसकी आंखों में आंखे डालकर उससे विनती करती कि ले जाओ हो सके तो एकाध को। मेरा थोडा बोझ हल्का हो जाएगा, नही तो मरेंगे बिचारे किसी गाड़ी के नीचे आकर या फिर नाली में डूबकर। हम सब उस गरीब की बच्ची के समान थे जिसे जो भी ब्याह कर ले जाए, एहसान ही करेगा।

ब्राउनी को किसी ने पत्थर मारा तो वह लंगड़ा रहा था। टायगर के गले में किसी बच्चे ने जमकर सुतली बांध दी थी। वह ठीक से साँस भी न ले पा रहा था।

हम छह थे। मुझे शंका है- दो भी बच पायेंगे कि नहीं? शाम के चार बज रहे थे। भानु अपने घर लौटने की तैयारी में थे। हमारे पुलिया की छाया लंबी होती जा रही थी। रोज जब यह छाया बगल के बिजली के खंबे तक पहुँचती है तब तक मां वापिस आ जाती है। आंटी दूध वाला आया तब बाहर आई। उसने टायगर को तडप़ते देखा उसके गले की फाँस काटकर उसे मुक्त किया। बड़ी भली औरत है।

मुझे मेरी माँ की चिंता सता रही थी। मैने टायगर से कहा, तुम ब्राउनी की तरफ ध्यान दो, मैं जरा माँ को देखकर आता हूं वह मुझे मना करना चाहता था, परंतु मैं निकल पड़ा।

हम अपनी आंखों से छह इंच ऊपर की दुनिया देख सकते थे। ज्यादा दूर का न दिखता। जिराफ चाचा के तो मजे हैं। वे दुनिया को बीस फुट ऊपर से दिखते थे। हमें दूर-दूर तक सिर्फ खूब सारे पैर दिखते। अलग-अलग जूते चप्पल पहने और अलग अलग कपड़ों से सजे हुए। मेरी कोशिश थी कि इन पैरों से बचकर सड़क के किनारे चलता रहूँ। सड़क पर चलो तो कुचलने का डर था। सड़क छोड़कर चलो तो बड़े-बड़े गड्ढे थे। बीच-बीच में सिर उठाकर दूर का जायजा लेने भी कोशिश करता, परंतु माँ कहीं दिख नहीं रही थी। मैंने सोचा क्यों न रास्ते के उस पार जाकर माँ को खोजने की कोशिश करूं। परंतु रास्ता पार करना आसान न था। एक तो ढेर सारे पैर जिन्हें मैं न दिखता, दूसरे बीच-बीच में भयानक आवाज करते हुए बड़े-बड़े काले गोल पैर वाले दैत्य बगल से निकल रहे थे। आदमियों के पैरों तले आकर तो फिर भी बचने की कुछ उम्मीद थी, परंतु उन्हें देखकर बहुत डर लगता। थोड़ा आगे जाकर लोगों की भीड़ कम हुई तो मैंने सड़क पार करने की हिम्मत जुटाई। लोगों के पैरों से धक्के खाते किसी तरह बीच सड़क तक पहुंचा। मैंने देखा कि एका-एक भीड छट गई थी। शायद किसी दैत्य को जगह देने के लिए लोग अलग हुए होंगे। मैं डर गया। न तो मैं उस दैत्य की दिशा या दूरी देख सकता था, और ना ही बाकी लोगों की तरह तेजी से हट सकता था। मेरे पास ईश्वर को स्मरण करने के अलावा और कोई रास्ता न था। मैंने कहा हे प्रभू बचा लें। लोग चिल्लाए देखो पिल्ला गाड़ी के नीचे आ गया। तभी एक दूसरी भयानक आवाज आई। क्षण भर के लिए अंधेरा हुआ फिर उजाला छा गया, और लोगों की आवाजें आई- चलो अच्छा हुआ बच गया। मैंने लम्बी सांस ली। वह दैत्य मेरे ऊपर से निकल गया था। चूंकि मैं रूक गया था, इसलिए बच गया। माँ ने बहुत पहले समझाया था कि ऐसी परिस्थिति में जहाँ हो वहीं खड़े हो जाओ। बदहवास होकर भागोगे तो मौत पक्की है। माँ की सलाह काम आ गई। हमारा झबरा इसी दैत्य के नीचे ही तो कुचल कर मर गया था।

माँ को आवाज देता मैं सड़क की भीड़ के साथ काफी दूर तक बहता चला गया। दो चार लोगों की लातें खाकर मैं सड़क की दूसरी तरफ मैदान में फिका गया। मैदान में बैठ कर मैंने थोड़ी राहत की साँस ली।

शाम ढल रही थी। लोगों के उस महासागर में दोबारा कूदकर, उसे पार करके, दूसरी तरफ अपनी पुलिया के नीचे वापिस जाने की मेरी हिम्मत न हुई।

तब लगा कि अपन हैं और अपनी किस्मत। जिंदा रहने के लिए सारी जद्दोजहत इसके आगे खुद ही करनी पड़ेगी।

मैदान के उस पार एक बस्ती दिख रही थी। कुछ बच्चे भी खेलते दिखे। एक पगडंडी उस तरफ जाती दिखी। कोई दूसरा विकल्प वैसे था भी नही। मैं अनायास उनकी तरफ बढ़ता गया। उनमें एक लड़के का दूर से ही मेरी तरफ ध्यान गया। वह मुझे अच्छा लगा और उसे मैं। मानो पहली नजर का प्यार। हम दोनों एक दूसरे की तरफ दौड़े। उसने लाड़ से मुझे अपनी गोद में उठा लिया। मुझे पहली बार लगा कि मैं एकदम सुरक्षित हूँ। फिर उसने मुझे बाकी बच्चों और अपने भाई बहनों से मिलवाया। सब बाहर खेल रहे थे। उतने में उसकी माँ घर के बाहर आई। उसने भी मुझे पसंद किया। मैं था ही सुंदर। पुलिया वाली माँ भी तो मुझे सफेदा-सफेदा कहकर सबसे ज्यादा लाड़ देती।

मैं जिनकी गोद में इठला रहा था वे माधव भैया थे। उन्होंने अपनी मां से कहा- माँ-माँ हम इसे पालेंगे। देखों ना कितना प्यारा है। मां ने उसे झिड़क दिया। मेरा दिल बैठ गया। थोड़ी देर बच्चे मेरें साथ खेलते रहे। मुझे रह-रहकर अपने टायगर और लंगड़े की याद आ रही थी। वे मेरे अकेले इंतजार कर रहे होंगे। पता नहीं माँ पुलिया में अब तक वापिस पहुंची होगी कि नहीं?

धूप की गर्मी कम हो रही थी। भास्कर अपने घर लौट रहे थे। जिस तरफ से मैं आया वहाँ का आसमान गुलाबी हो चला था। गली के सब बच्चों को उनकी मॉऐं वापिस घर बुलाने लगी। मैं भी माधव भैया के पीछे हो लिया। उन्होंने और चारू दीदी ने मुझे पकड़कर

नहला दिया। बगीचे में बाहर पानी की टंकी है दिन भर के धूप से उसका पानी कुनकुना हो जाता है। बहुत मजा आया। जिंदगी में पहली बार नहाने को मिला था। दीदी ने अच्छे से पोछा। फिर क्या था। मैं तो एकदम टेडी बियर जैसे दिखने लगा। मुझे जो देखता वह तारीफ करने से न अघाता। काश मैं खुद को आईने मे देख सकता! जिसने मुझे देखा वह मेरी सुंदरता का गुलाम बन गया।

इन सभी सुखों को उपभोग करते समय मेरे दिल से टायगर और लंगड़े की चिंता जा न रही थी, पता नही उनके पेट में कुछ गया होगा कि नहीं। माँ वापिस पुलिया पर पहुंची होगी कि नहीं? यदि वापिस आ भी गई होगी तो उसे आज रात मेरे लिए तड़पना होगा।

मैं ऊपर वाले से पूछूँगा, हे प्रभु यदि हम छह में एकाध को ही बचना था तो हमारी माँ को बाकी पांच की प्रसव वेदना क्यों दी? इतना ही नही, फिर उनके बिछोह का दर्द भी? इस खेल में तुम्हें क्या मजा आया भगवान?

हाँ तुमने एक नेमत जरूर दी है। वह है विस्मृती। कल उगते सूरज के साथ माँ टायगर और लंगड़े की मेरे बिना नयी दिनचर्या शुरू हो जाएगी। वे फिर से कचरे में रोटी खोजने जुट जायेंगें। यह भी हो सकता है कोई काले चकों वाला दैत्य लंगडे को झबरे के पास पहुंचा दे और फिर माँ अपने कलेजे के आखिरी टुकड़े को किसी के गोद में डालने के लिए तरसती फिरे। इस तरफ सिर्फ दो ढाई महीनों में हमारे परिवार का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा।

पूरी रात अपनों की याद और भविष्य की उत्कंठा में कटी। यदि इन्होंने फिर मुझे सड़क पर फेंक दिया तो क्या होगा? अभी तक तो ऐसा लगता नहीं। और हाँ यदि ऐसा हुआ तो फिर इन्होंने मेरे साथ बहुत गलत किया। तब इन्होंने मुझे इस मोहोब्बत का स्वाद देना ही न था। यही सोचते-सोचते थोड़ी देर के लिये मुझे झपकी लगी।

दो तीन दिन इसी ऊहा पोह में गए। धीरे धीरे मुझे बाहर करने का विषय समाप्त हो गया। पांच को छोड़कर आया था, यहाँ सात मिल गए। दादा, दादी, माँ, पिताजी, चारू दीदी, श्रीधर और माधव भैया।

हे प्रभु, तेरी लीला को क्या कहूँ।

परिवार के हर व्यक्ति ने मुझे अलग तरह का प्यार दिया।

जैसे-जैसे मेरी समझ बढ़ती गई, इस दो पाये के बारे में काफी जाना। है तो यह बुध्दिमान, क्योंकि इसने हम सभी चौपायों को गुलाम बनाकर रखा है। एक बार तो मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ जब हमारे घर के सामने एक पहाड़ जैसा चौपाया आकर खड़ा हुआ। चार क्या, बल्कि उसके पांच पाँव थे। सामने के दो पैरों के बीच एक और पैर लटका हुआ था। क्या पता पैर कहे भी कि नहीं क्योंकि वह जमीन तक तो पहुंच ही नहीं रहा था। उससे वह चलते समय सहारा भी नहीं ले रहा था। उसमें हड्डी भी न थी। बाद में पता चला कि ये हाथी दादा है। माधव ने जब चिल्लाकर सबको बुलाया तब मुझे इनका नाम पता चला। दादा इसलिए क्योंकि माधव भैय्या बोले कि देखो इन्हीं के रंग के चूहे जी चौपायों में सब से छोटे हैं और ये सब में बड़े। उनके इस डायलॉग से सबको खूब हंसी आई थी। वह जो बीच का पैर लटका हुआ था पता चला सूंड कहलाता है। इन्हें चौपायों में सबसे बुध्दिमान माना जाता है। माँ के भगवान घर में बुध्दि के देवता करके इनकी मूर्ति भी है। उसे ये गणेश भगवान कहते है। पर देखा तो इन्हें, इनके सिर पर बैठा हुआ एक पिद्दी सा आदमी वश में किये हुए था। है ना विचित्र बात!

धीरे धीरे मैंने जाना कि असल में इस दो पाये में बुध्दि के साथ धूर्तता भी होती है। वह धूर्तता हममे नहीं इसलिए हम मर जाते है। ये आपस में भी एक दूसरे पर इसी गुण से राज करते है। जो जितना ज्यादा धूर्त उतना ही बडा राजा। सोचकर हंसी आती है। क्योकि राजा उसे होना चाहिए जो नेक और अच्छा हो! हमारे यहाँ भी राज वही करता है जो सबसे ज्यादा शक्तिशाली है यानी शेर दादा। यहाँ तो सब उल्टा दिखता है। खैर.....

एक बात और देखो इस दो पाये में, जो हम में नहीं। वह क्रूरता। हमारे शेर दादा भी खूंखार है, परंतु क्रूर नहीं। खूब गुस्सैल हैं, किन्तु किसी की जान नहीं लेते। जब उनका पेट भरा होता है, तब वे और चीतल के साथ-साथ पानी पीते है।

एक दिन मैने किसी को कहते सुना लडका अव्वल आया है, आज तो बकरा कटेगा। भाई लड़का अव्वल आया है, खुशी की बात है, उसमें उस बकरे की जान क्यों ले रहे हो?

मनोरंजन के लिये ये लोग हमारी जान लेते हैं। निहत्थे जानवर को बंदूक से मार गिरने में बहादुर कहलाते हैं। जंगल में सब भूख के लिए शिकार करते हैं। मजे के लिए कभी नहीं।

तो इनकी ताकत इनकी धूर्तता है, क्रूरता है। ये एहसान फरामोश भी खूब होते है। काश हम ही से कुछ वफादारी सीख लेते।

उस दिन हमारे यहॉ कोई पुलिस वाले अंकल मिलने आए थे। मुझे बडी मुश्किल से डाइंग रूम में घुसने को मिला। मैं एक तरफ बैठकर सबकी बातें सुन रहा था। मुझे देखकर उनको अपने डॉग स्क्वॅड की याद आई। वे बोले हमारे यहॉ कल एक स्निफर डॉग रिटायर हो रहे हैं। माधव ने हँसकर पूछा कि वे उसके लिये इतनी इज्जत दिखाते हुए बोल रहे हैं?

अंकल बोले, ''उम्र में तो नहीं बेटा, पंरतु पद से जरूर बड़े हैं। वे डी.आई.जी. हैं। इन्हें इनके काम व समय के हिसाब से वरीयता मिलती है। इनकी भी हमारी तरह तनख्वाह होती है, नौकर-चाकर होते हैं। हम सब जूनियर इन्हें सेल्यूट भी करते हैं।''

मुझे सुनकर बड़ा मजा आ रहा था। जलन भी हो रही थी। यहॉ पांच साल हो गए। इतनी ईमानदारी से सेवाऐं देने के बावजूद वह गेरेज में पड़ा पुराना बोरा तक नया नहीं हुआ। पानी पीने का मग और खाना खाने का बर्तन भी वहीं। गले का पटटा भी पुराना हो चुका है। उसका बक्कल एक तरफ से थोडा चुभता है, परंतु किसी का ध्यान ही नहीं।

मेरा ध्यान फिर उनकी तरफ गया जब माधव ने अंकल से पूछा अब रिटायरमेंट के बाद क्या? उन्हें पेंशन और नौकर चाकर भी मिलेंगे क्या? अंकल बोले नहीं बेटा, जो मैं बताऊँगाा, उसे तुम झेल नही पाओगे। उन्हें कल सुबह शूट कर दिया जाएगा। ''हम सब सुनकर सन्न रह गए। अकंल आगे बोले'', ''बुरा तो लगता है बेटा, पर ऐसा करने में उसी का हित है जिसे इतनी इज्जत मिली वह बुढ़ापा

बेईज्जती और बीमारी में क्यों काटे। उससे तो अच्छी यह बिना दर्द की मौत है। फिर मरना तो हम सभी को है ही एक दिन। तुम शायद मालूम नही, रेस के घोड़े को भी, यदि उसके पैर की हडडी टूटी तो शूट कर देते हैं।''

हमारा पूरा घर सन्न था।

मैं पुलिस अंकल को देखकर सोच रहा था, आप भी कल एस. पी. और परसों डी. आई. जी. बनोगे। आप भी तो आज रेस के घोड़े हो दुनिया आपके आगे-पीछे हो रही है। क्या रिटायरमेंट के समय आपको भी शूट कर दिया जाए? आपके ही हिसाब से मरना तो सभी को एक दिन है ही, क्यों आपको बुढ़ापे की तकलीफ झेलने के लिए छोड़ा जाए। क्या आपको वह बिना दर्द की विदाई मंजूर है। जिंदगी भर उस जीव ने आपकी सेवा क्या सिर में गोली खाने के लिए की?

मुझे एकाएक अपना बोरा, मग्गा और गले का बेल्ट सुदंर लगने लगा।

बाहर घूम रहे मेरे आवारा साथियों की हालत मुझसे देखी नहीं जाती। न उन्हें खाना मिल रहा है न दवा दारू। ट्राफिक इतना बढ़ता जा रहा है कि अधिकांश गाड़ियों के नीचे कुचले जाते हैं।

बीच-बीच में इन्हें मिठाई में जहर डालकर मारने की मुहीम भी चलती है। यह आदमी भी बडा अजीब जानवर है। जिसे देखो मारता फिरता है। जानवरों को तकलीफ देगा, उन पर प्रयोग करेगा, अपनी नई दवाईयों को आज़मा कर देखेगा। शायद इसे लगता है कि वह इस धरा का बेताज बादशाह है। सारे जीवन को नष्ट किये पड़ा है। जंगल काट रहा है, वातावरण का नास कर रहा है।

इतना बुद्धिमान होकर यह कैसे नहीं समझ रहा है कि ऐसा करके वह उसी डाल को काट रहा है, जिस पर वह बैठा है। उसकी आनेवाली पीढ़ियाँ एक-एक बूंद पानी के लिए तरसेगी। सूर्य के तेज से झुलस कर मरेंगी।

मुझे मेरा परिवार बहुत प्यार करता है। अब उम्र हो चली है। थोडा स्वार्थी हो गया हूँ। बाहर के साथियों के दुःखों के बारे में कम ध्यान जाता है। अभी कुछ दिन पहले कोई हमारे घर के बाहर सुंदर छह पिल्ले छोड़ गया। पता नहीं उन बेचारों की माँ का क्या हुआ होगा। मुझे अपना बचपन और भाई बहन याद आ गए। मैं जानता था इनमें भी एकाध ही बचेगा। माँ प्यार से उन्हें दूध रोटी देती रही। मैने कभी प्रतिरोध नहीं किया।

इतिहास की पुनरावृत्ति हुई। एक-एक गायब होते गया। उनकी घटती संख्या देखकर मेरा परिवार बेचैन होता रहा। उनमें दो ने प्यार से चारू और माधव को काटा भी, दोनों को इंजेक्शन का पूरा कोर्स चला। ये इंजेक्शन महंगे होते हैं। यह भी मजाक में कहा गया कि इतने पैसों में तो इन्हें साल भर अंडे खिला सकते थे। खैर बेचारे बचे कहाँ अंडे खाने के लिए। ले देकर एक बच पाया- रामू। बड़ा प्यारा जीव है। घर के अंदर घुसने के लिए तरसता रहता है। ये लोग उसे प्यार भी खूब करते है। वह खाने लिए अंदर नहीं घुसता। पूरी गली उसे प्यार से खिलाती है। उसे बस हमारे यहाँ आना अच्छा लगता है। मैं उसे अपने बाजू में बैठने भी देता हूँ। मुझे अपना बचपन याद आता है, तब उसके बारे में मन में सहानुभूति आती है।

आजकल मेरा घर से बाहर निकलने को ज्यादा मन नहीं करता। वैसे दिन भर इन सबकी तरफ ध्यान देने में निकल जाता है। रात को थोड़ी झपकी लगती है तो पिताजी दवाखाने से लौटते हैं। दादी जाने के बाद उनके साथ मैं ही होता हूँ जो खाना खाने समय बैठेगा। बाकी सब सोए रहते हैं। उनके खाने के बाद फिर मेरा अपना काम चालू होता है, रात की चौकीदारी का।

कोई तीन साल पहले की बात होगी। दादी मुझे प्यार से खाना खिला रही थी। रात का समय था। मुझे उसके लिए बड़ा बुरा लग रहा था। उस बेचारी को यह मालूम न था कि वह कल की सुबह नहीं देख पायेगी।

हमें तो आगे का सब दिखता है। उससे अक्सर दिक्कत ही होती है। जिंदगी का हर अगला पल भी रहस्यमयी हो तो वह रोचक होता

है। भूकम्प आने के पहले हम सब बैचेन होकर चिल्लाने लगे थे। इनकी सारी अत्याधुनिक प्रयोगशालाऐं कुछ न बता पाई थी। तो दादी के ऊपर काल मंडाराता मैने साफ देखा। भली औरत थी बेचारी। कितने प्यार से खिला रही है। उसे यह समझ में नहीं आ रहा है कि मैं सामने रखी रोटी दिल से क्यों नहीं खा रहा। अब यह जाकर हमेशा के लिये सो जाएगी और इस घर में कल की सुबह चीखें गूंजेगी।

दादाजी भी अब मुझे पसंद करने लगे हैं। रोज सुबह पहले मुझे दूध पिलाते हैं और फिर सबकी चाय में डालते हैं। पहले मुझे झिड़कारते थे। अब मेरा हालचाल पूछे बिना खुद खाना नहीं खाते।

चारू तो मुझे टेडी बियर की तरह मानती है। जब वह जोर-जोर से अपने मेडिकल की पढ़ाई करते रहती हैं तब मैं ही अकेले हिम्मत करता हूँ उसके बाजू में देर रात तक बैठे रहने की।

दादी के जाने के बाद मैंने उसकी जगह ली है। सबका ख्याल रखना पड़ता है। माँ खाना बनाती है या बगीचे में कुछ करती है तो साये की तरह उसके साथ बना रहता हूँ। वह दिन भर मुझसे लाड़ करती है। और बतियाते रहती है। पिताश्री के आने के बाद मुझे फिर उनकी तरफ ध्यान देना पड़ता है।

अब मुझे भी नौ वर्ष हो चले। दूर से आती काल की छाया अस्पष्ट सी दिख रही है। मौत से उतना डर नहीं क्योकि जो थोड़ा बहुत बचा था वह इस जिंदगी में पूरा कर लिया। अब तो मोक्ष ही है। इस परिवार के आगे स्वर्गलोक भी क्या होगा? श्वान योनी बदी थी, पर पिछले करम अच्छे थे। मालिक ने कहा, तुझे एक बार नीचे जाना तो पड़ेगा, पर मर्त्यलोक की तकलीफें नहीं होंगी। तेरा राज योग है। वाकई मैं जिया भी राजकुमारों की तरह। इस परिवार ने मुंह में कौर डालकर खिलाया और अपने साथ सुलाया। इनके अपने बच्चे और मुझमें सिर्फ फर्क था दो और चार पैरों का। प्यार तो खैर मुझे ही ज्यादा मिला।

इनकी यह सेवा व्यर्थ नही जाएगी। ये नहीं जानते कि हम ही ईश्वर के रूप हैं। जो हम चौपायों को प्यार देगा, हमारी सेवा करेगा, वह साक्षात ईश्वर तक पहुंचेगा। ये जीव जंतुओं का भला सोचेंगे, तो

उनके अस्तित्व को बचाने के लिए पेड़ पौधे बचायेंगे। जंगल पनपेंगे तो बादल घिरेंगे। इन्द्रदेवता प्रसन्न होंगे तो धरा शस्य-श्यामला होगी। अन्न जल की कमी न रहेगी। यदि कह पाता तो कहता, हमें पूजो और बचा लो अपने अस्तित्व को, अभी भी वक्त है।

संन्यास या पलायन

प्लूटो के जाने से हमारी जिन्दगी मानो ठहर सी गई।

एक भयंकर सूनापन आया। अब उस रिक्तता को कैसे भरा जाए? हालांकि किसी भी जाने वाले की जगह कोई और नहीं ले सकता, परन्तु फिर भी कई बार मन किया कि उसके बदले रामू को अंदर लूँ। हिम्मत न हुई। उसके दो कारण थे। एक तो बंधन, और दूसरा वियोग का दुख, जो कि होना ही है।

इस दौरान ऐसे कई मित्र मिले जिनके यहाँ पहले श्वान पले थे, वे नहीं रहे, और अब ये उस खालीपन को झेल रहे हैं, परन्तु दूसरा लाने की ताकत नहीं जुटा पा रहे। मेरे परिचित के एक अतिशय संभ्रात परिवार के यहाँ एक 'कुली' था। उसका नाम उन्होंने विजय रखा था। विजय को श्वान क्या कहें –वह इन्सान से भी ज्यादा समझदार और संत स्वभाव का था। चुपचाप बैठा रहना उसके ऊपर चूहे दौड़कर आर–पार हो जाते तब भी वह कोई प्रतिक्रिया न देता, इतना सीधा। विजय की मालकिन एक समाज सेवी व मृदु स्वभाव की महिला है। वे अपने पति को, मेरे पास, उनका एक छोटा ऑपरेशन करवाने आयी थी। मैंने विजय को दो महीने पहले डॉग शो में देखा था। अद्‌भुत जीव था। बहुत ही सुंदर और शालीन। उनसे मैंने पूछा विजय कैसा है? उनका चेहरा उतर गया। रूआंसी हो गई। उनके पति बोले– मत पूछिये डॉक्टर साहब। हमारा विजय डेढ़ महीने पहले नही रहा। दो दिन की बीमारी में चल बसा। पता ही न चला कि उसे क्या था। यह उस सदमे से ऊपर आ ही नहीं पा रही। मैंने कहा साँत्वना नहीं करूंगा, क्योंकि उससे कुछ होना नहीं। मैंने उस दुःख को अभी दो साल बाद भी भोग रहा हूँ। लगता है जैसे कल की बात हो। आप कुछ भी कर लो वह कम नहीं होने वाला। आपकी गोद सूनी हो गई है। ज्यादा मत सोचो, अगला ले आओ। वे बोली– पर डॉक्टर, विजय जैसा तो कोई हो नहीं सकता। मैं बोला– मैने कब कहा कि वह विजय की जगह

लेगा। विजय की जगह तो कोई नहीं ले सकता। मैं एक महिला की नस बंदी की नस को दोबारा जोड़कर घर गया, तब मेरी पत्नी विभा ने पूछा लोग यह ऑपरेशन क्यों करवाते है? मैने कहा- उसका लड़का एक्सीडेंट में खत्म हो गया। वह उसकी जगह दूसरा चाहती है। इसलिए ऑपरेशन करवाने आयी थी। फिर विभा बोली- क्या आप सोचते हो कि आनेवाला बच्चा गए हुए की जगह ले पाएगा? हमारे ही बच्चों की कल्पना करो- क्या कोई किसी की जगह ले सकता है।

मैं उसकी गंभीर बात के आगे नतमस्तक हो गया। मैंने कहा मैडम वाकई में कोई किसी की जगह नहीं ले सकता। विजय, विजय था। मैं तो आपके जिन्दगी के सूनेपन को थोड़ा कम करने की बात कर रहा हूँ। आप प्यार देने में समर्थ हैं इसलिए एक जीव को अपने घर लाने की बात कर रहा हूँ।

उन्होने छूटते ही पूछा- लेकिन विजय इस बात को पसंद करेगा क्या?

मैंने कहा- विजय आपसे सच्चा प्यार करता था। इसलिए पसंद करेगा। यदि मुझे कुछ हो जाए तो मैं कभी नहीं चाहूंगा कि मेरी धर्मपत्नी जिन्दगी के आगे के सफर को अकेले काटे। मैं तहे-दिल से चाहूंगा कि उसे एक अच्छा जीवन साथी मिले और असहाय न बने। यही तो प्यार है। आपका कोई अपना तकलीफ में रहे वह प्यार थोडे ही है?

मैडम ध्यान से मुझे सुनती रही। बोली-डॉक्टर साहब ऐसे तो कभी सोचा ही न था चलिए आपकी बात पर गंभीरता से विचार करूंगी।

इन जीवों का साथ, हमारे परिवार की लत बन चुकी थी। वह मोहब्बत एकदम से कैसे खत्म होती।

रामू अपने पीछे श्यामू को लाया। उसने उसे, अपने मित्र के रूप में हमसे मिलवाया। इस बीच प्यारा सा छोटू आया, और कुछ ही दिनों में जाने कहाँ से आ पहुंचा अप्रवासी कल्लू।

चारू से मैं गलती से बोल गया था- बेटी ये मुझे इतने अच्छे लगते हैं कि इच्छा होती है- जब घर में घुसो तो हर कमरे में एक बैठा मिले।

ईश्वर हमेशा मेरी हर इच्छा पूरी करता है। बमुश्किल दो महीने बीते होंगे। अब ड्राइंग रूम में कल्लू मिलता है, मेरे बेडरूम में श्यामू, माधव के कमरे में रामू तो चारू के कमरे में छोटू। इन सबों के कमरे ही नहीं बल्कि जगहें भीं नियत है।

सब इतने सिर चढ़े हैं कि दरवाजा ठक-ठका कर अंदर घुसते हैं। ये खाने के लिए नहीं आते। अक्सर सामने रखी रोटी भी नहीं छूते। खाने को तो इन्हें पूरी गली में मिल ही जाता है। यहाँ बेचारे सुकून के लिए, आराम से सोने के लिए आते हैं। आड़े-तिरछे लेटे रहते हैं। हमारा पूरा परिवार बिना आवाज किये इनके आजू-बाजू से गुजरता है, यह ध्यान रखते हुए, कि इनके पूँछ या पैर पर अपना पैर न पड़े। ये इतने शांति से सोते हैं, कि लगता है रूक कर इनके चेहरे का देखते रहो। बिल्कुल छोटे बच्चों की तरह अबोध और निरागस दिखते है। कभी कभी श्यामू के साथ मजेदार बात होती है। मैं जब उसके बगल में खड़े होकर निहारता हूँ तो उसे अक्सर महसूस हो जाता है, फिर वह एक आंख खोलेगा और अपनी पूँछ हिलाकर आपकी उपस्थिति दर्ज हो गई है, करके बता देगा, फिर आंख बंद करके अगले ही क्षण खर्राटे भरने लगेगा।

मैं जितना इन जीवों के समीप जा रहा हूँ, उतना ही अपने आपको इनसे छोटा महसूस करता हैं। लोगों से भी यह कहता हूँ कि जिस जीव ने आपको दस वर्षों तक सुख दिया, उसके लिए आठ-दस दिनों की पीड़ा सहने की बनती है। बड़े से बड़े दुख दस-बारह दिनों में सहनीय हो जाते है। आपका कितना ही सगा गुजर जाए, आप तेरहवें दिन मिठाई खाकर अपने काम पर लग जाते हो।

दुःख को झेलने की हिम्मत होनी चाहिए। जिससे सुख मिलेगा, वह दुःख भी देगा। दोनों का हिम्मत से सामना करना ही तो संन्यास है।

जो तथाकथित संन्यासी हमें दिखते हैं वे वास्तव में पलायनवादी है। सब कुछ छोड़कर लंगोटी कस ली तो काहे का दुःख? माँ बाप को आपने खुद ही छोड़ दिया, तो उनके रहने न रहने का क्या सुख और क्या दुःख? शादी की नहीं, बच्चे पैदा नहीं किये, तो ना उसकी किलकारियों का मजा लिया, न ही उनकी बीमारियों की त्रासदी को भोगा। हिम्मत हो तो इस सब के बीच रहकर उनसे निर्लिप्त होकर दिखाओ। गृहस्थाश्रम में जी कर दिखाओ तो मानें। संन्यासी होना तो बहुत आसान है।

खैर, यह तो हुआ एक आध्यात्मिक विचार, परन्तु यदि सम्पन्नता व सुविधा होने के बावजूद आपने इस जीव को गोद नहीं लिया तो आप बड़े अभागे हो। आपने एक बहुत बड़े सुख को जाना ही नहीं।

इनके मसीहा

इन्हें चाहनेवालों की कोई कमी नहीं। व्यक्तिगत रूप से अथवा संस्था बनाकर इनकी सेवा करनेवाले मैंने कई दीवाने देखे। किसी काम के सिलसिले मे मैं दादर गया था। वहाँ डॉ. अम्बेडकर रोड पर एक धर्मशाला है। उससे लगा हुआ एक एस.टी.डी. बूथ है। शाम के खाने के बाद मैं अपने मित्र के साथ टहलते हुए फोन करने गया। उस जमाने में मोबाइल नहीं हुआ करते थे। बूथ में भी फोन करने के लिए लाईन में लगना पड़ता था। रात के साढ़े आठ बजे होंगे। बंबई रात के आठ बजे तक सो जाती हैं। दुकाने बंद हो जाती है और सारी सड़कें सूनी हो जाती है। हमें चिंता हो रही थी कि हमारे फोन करने के पहले ये भाई भी कहीं अपनी दुकान बंद न कर दे। वहाँ एक दो लोग बाजू में पान के ठेले पर खड़े थे। उन्होंने हमारी बात सुनकर हँसे और बोले– चिंता मत करो साहब, ये रात के दस बजे तक कहीं नहीं जाएगा। हम समझ नहीं पाए। उस समय थोड़ी देर के लिए बात आई गई हो गई। फोन लगते-लगते और बात खत्म होने तक सवा नौ बज गए थे। बाहर निकले तो गली में श्वानों की कुछ ज्यादा ही हलचल दिखी। काम कुछ था नहीं, कुतुहलवश मैं अपने मित्र के साथ पान खाते हुए गली के एक कोने में खड़ा रहा। थोड़ी देर बाद वह नजारा और रोचक होने लगा। तब तक टेलीफोन वाले के सारे ग्राहक निपट चुके थे। बूथ के सामने ये सारे श्वान बूथ वाले भैया को घेर कर खड़े थे। उसने अंदर से दस-बारह डोंगे बुलवाए। डोंगे लाते समय जो आवाज हो रही थी, उससे इन सबकी पूँछ में हरकत आ गई। वे सारे प्रसन्न चित्त होकर उसके चारों तरफ नाचने कूदने लगे। देखा तो एक बड़ी देगची में कोई गरम खिचड़ी लेकर आया। तब तक इनके लिए एक सीध में दो दो फुट की दूरी पर भगोने रखे जा चुके थे। वह भैया सबको उनके नामों से झिड़कार कर अपनी-अपनी जगह बैठने के लिए कह रहे थे। शादी की पंगत जैसा अद्‌भुत दृश्य था। सबको गरम-गरम खाना परोसा जा रहा था और वे बड़ी धीरज से अपनी जगह पर बैठ पूर्ण अनुशासन

सें स्वाद लेकर खा रहे थे। जिसका भगोना खाली दिखता उसे भर दिया जाता। दुकान में देखा तो भैय्या की गोद में दो बिल्लियाँ बैठी थीं जो उन्हें उठने नहीं दे रहीं थी। मैं उस सतपुरूष के सामने नत मस्तक हो गया।

अनायास लगा, काश मैं भी इस पंगत में शामिल हो सकता और भैय्या के हाथ का परोसा खाना मन भर के खाता। कहाँ लगता है इसके सामने वह ताज या ओबेराय का नीरस बुफे, जहाँ वेटर आपको बिना प्यार के यंत्रवत ढंग से अपना कर्तव्य निभाने के लिए परोसने रहे हैं। यहाँ तो हर एक चम्मच में मोहब्बत भरी है।

मैं नमन करता हूँ उन लोगों को जिनके मन में जानवरों के लिए यह प्रेम और आदर की भावना है।

शायद हम थोड़े और शिक्षित हो जाएँ और जनसंख्या काबू में आ जाय, तब हम भूख से ऊपर उठेंगे और इन मापदंडों की कल्पना कर पायेंगे।

✦✦✦

क्या इसे अंत कहें?

अंत तो इसे मैं कहूंगा नही। यह तो शुरूवात है इन मूक जीवों के प्रति समाज के चेतना को जगाने की। हाँ समापन जरूर कह सकता हूँ इस कृति के प्रथम आवृत्ति की। प्रथम आवृत्ति इसलिये लिखा क्यों कि इसके बाद की आवृत्तियों में आपके भेजे ढेर सारे संस्मरण भी तो जुड़ेंगे?

इसका अंतिम चरण आते आते चौथा वर्ष लग गया।

इसमें जिन चरित्रों कर उल्लेख है, वे शनैः शनैः भूतकाल की तरफ जा रहे हैं।

मून की उम्र ढल चुकी। अब उसकी असहाय अवस्था देखकर दुःख होता है। समझ तो इंसानों से ज्यादा हो गई है परन्तु शरीर बिलकुल साथ नहीं दे रहा। सारे जोड़ जाम हो गए हैं। उठाए बिना खड़ा नही हो पाता।

इस पुस्तक की प्रथम आवृत्ति के प्रकाशन के दिन ही मुझ को मुक्ति मिली, मानो वह इसी का इतंजार कर रहा हो। डॉ. पाठक सर ने उसका विधिवत आंत्य संस्कार किया। पूजा पाठ करवाई, यहाँ तक कि उसकी तेरहवीं का भोज तक करवाया। इस बात पर विभा ने एक बड़ी मार्मिक बात बोली– ''इंसान का अंतिम संस्कार तो हो सकता है कोई लोक लाज वंश अच्छे से करे, लेकिन इनका तो मन से ही करता है, बल्कि जंग हंसाई की परवाह न करते हुए करता है'' फिर हमारा मून तो अनूठा था। खूब लम्बी चर्चा चली कि कैसे वह बाहर से आकर पैर धोना, सोने के पहले ब्रश करवा लेना, पूजा में सम्मिलित होना वगैरह–वगैरह। वह भी डॉ. गिरिष पाठक सर के पितरों में शामिल हो गया व डॉ. गिरिष पाठक उन लोगों में शामिल हो गए जो कहते है ''अब दूसरा लाने की हिम्मत नहीं भैय्या। फिर तुम्हीं बताओ मून की जगह और कोई ले सकता है क्या?''

अप्रवासी कल्लू को अंततः गली के श्वानों ने स्वीकार कर लिया। चार वर्षों के प्रयास के बाद उसे यहाँ की नागरिकता मिली।

प्लूटो का संगी रामू भी अब वयोवृद्ध हो गया है। घर मे अंदर किसी कोने मे पड़ा रहता है। आहार काफी कम हो गया है, परन्तु खाने का समय पक्का है। हम सब के काम पर जाने के बाद वह आलस झाड़कर विभा के सामने खड़ा हो जाएगा, मानो कहता हो अब लगता है तुम थोड़ा खाली हो गई हो, मुझे एकाध दूघ रोटी दे दो तो उसे खा कर मै जरा गली का चक्कर मार आऊं। उसे विदा करके रात को अपने काम पर लग जाएगी।

श्यामू का समय तय है, वही ठीक साढ़े दस बजे। रोज रात का खाना मेरे ही हाथों से खाएगा। समझ मे नहीं आता क्या पागलपन है! पूरी गली उसे खिलाना चाहती है परन्तु वह मेरे सिवा किसी और को घास ही नहीं डालता।

मिनी तो बस एक ठंडे हवा के झोंके की तरह आई और चली भी गई। उसका साथ तो मात्र चार महीनों का ही रहा। इतने कम समय मे वह पूरी गली को लुभाने के अलावा अपनी दो प्यारी निशानियाँ भी छोड गई।

टायगर खरे का निर्बाघ रूप से गली मे इस कोने से उस कोने तक दौड़ना जारी हैं, हांलाकि अब उसकी दौड़ मे वह अल्हड़पन नही रहा। वह दौड़ अब तबियत को ठीक रखने वाली ज्यादा लगती हैं।

ऊँची छत से प्लूटो को हॅलो करने वाली गुप्ताजी के शेफर्ड की दहाड़ अब सुनाई नहीं देती। शायद वह भी काल के गाल मे समा गया।

समय चक्र रूकता नहीं। गली हर छह-आठ वर्षों में नए बच्चों और उनसे खेलते श्वानों से भर जाती है।

हमारी जिन्दगी को फास्ट फॉरवर्ड किया जाय तब इनके जीवन की कल्पना की जा सकती है। हमें प्रकृति से यह सीख मिलती है कि आप कितने समय यहाँ रहे यह ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं। आपका जीवन परिपूर्ण होना चाहिये। तितली रानी तो दो हफ्तों मे ही दुनिया को लुभा

कर चली जाती है। कछुआ दादा तीन सौ साल जीकर भी हमे उतना आक्रष्ठ नहीं कर पाते। शायद उनका आकर्षण इतना लंबा खिंच जाता है कि हम उसे महसूस नहीं कर पाते।

जीवों और हममें यही फर्क है कि वे स्वाभाविक रुप से जीवन जीते हैं। भूख हो तभी खाएंगे, प्यास हो तो ही पीएंगे। जबरन को सोएंगे भी नहीं। शौकिया एक दूसरे को मारेंगे नही। उनमें बुद्धि कम तो नहीं होती, परन्तु छल कपट न होने से ये मारे जाते हैं।

हम इन्हें प्यार करके खुद को ही बचाएंगे। वैसे ही जैसे प्रॉजेक्ट टायगर का वास्तविक उद्देश्य जंगल व पर्यावरण बचाना है।

फिर यह तो हमारा १५ वर्ष पुराना साथी हैं। जरा दोस्ती का हाथ बढ़ा कर तो देखिये, आपकी ज़िन्दगी बदल जाएगी।

✦✦✦

अरे, तुम हमें क्या पालोगे?

अरे, तुम हमें क्या पालोगे? हमें क्या दोगे?
देंगे तो हम तुम्हें, प्यार, दोस्ती, निष्ठा, समर्पण
और वक्त आने पर अपनी जान भी।

अभागे हो,
यदि तुमने मुझे जाना नहीं, यदि मुझे अपनाया नही।
सीखो हमसे एहसान मंदी, सीखो हमसे सगा होना,
छोड़ देंगे तुम्हें तुम्हारे बच्चे एक बार,
हो सकता है छोड़ दे तुम्हें तुम्हारी तथाकथित धर्मपत्नी
छोड़ सकते है तुम्हें, तुम्हारे सारे नाते रिश्ते,
दगा दे सकता है तुम्हें तुम्हारा अपना ईमान तक,
परन्तु
हमारी फितरत में तो यह सब है ही नहीं।
हमारा दूसरा नाम ही है– वफादारी।
हम अत्यंत निरपेक्षी,
चाहत तो सिर्फ आपके हाथ की,
अपने माथे पर।

हम तो जरा से में खुश।
नाचने कूदते, आते आपका स्वागत करने,
भले गए हों आप, घर से मात्र घंटे भर पहले।
कौन करेगा आपका ऐसा द्वारचार, दिन में कई बार?

बिन हमारे, आपकी जिंदगी अधूरी,
ले लो हमें अपने आगोश में,
छीन लेंगे हम आपसे आपका सूनापन, आपकी मायूसी।
ले लेंगे आपकी सारी आलाय बलाय अपने ऊपर।
बना देंगे आपकी जिंदगी सुरक्षित और रोचक
लेकिन
उठाओ हमें सड़क से,
लो गोद, हममे से, आवारा को, अनाथ को।
वादा है हमारा,
खेलेगी आपके घर में सुख और शांति
देंगे हम आपको खूब मोहोब्बत, मिलेगा आपको ढेर सुकून।

✦✦✦